Fortnightly per copy Rs. 5/- only

18th June 2016

ओ३म

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

शराब पर पाबन्दी लगाई जाए

प्रो. विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा

टिटोली ग्राम स्थित स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ के परिसर में आयोजित ५०० लड़कियों के तथा गुरुकुल सिंगपुरा सुन्दरगढ़ में आयोजित ५०० लड़कों के राष्ट्रीय चरित्र निर्माण शिविर के समापन समारोह में प्रधान सभा प्रो. विट्ठलराव आर्य ने शराब की पाबन्दी पर जोर देते हुए शराब मुक्त भारत का आह्वान किया। आर्य राष्ट्र निर्माण का जो सपना स्वामी इन्द्रवेश जी ने देखा था उस सपने में राष्ट्र निर्माण को परिभाषित करते हुए स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेशजी ने १९६८ में ही हरयाणा के कुरुक्षेत्र से दिल्ली के लालकिले तक शराब बन्दी मशाल यात्रा निकाली थी। प्रो. विट्ठल राव आर्य ने युवक एवं युवतियों को आह्वानित किया कि चरित्र निर्माण के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति मन और मस्तिष्क का परिष्कृत होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल आदि युवकों ने अपने आपको देश के लिए बलिदान इसलिए किया था कि भारत में रहने वाले करोड़ो-करोड़ों लोग स्वस्थ और प्रसन्न रह सके। उन्हें न्याय मिल सकें। उन्हें उनका हक मिल सकें। इसके लिए देश की सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-साथ शराब के प्रचलन पर तथा माँसाहार के प्रचलन पर पाबन्दी लगनी चाहिए। देश में बढ़ते हुए जातिवाद और पाखण्ड के खिलाफ भी

संघर्ष का बिगुल बजना चाहिए। हम सब साथी इस प्रकार के बड़े-बड़े शिविरों की उपज है आप सब युवक-युवतियों का इस शिविर में भाग लेना बहुत ठीक बात है और मुझे विश्वास है कि जहां आप अपने भविष्य को सुधारेंगे वहीं समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेवारियों को निभाते हुए सामाजिक बदलाव में और राष्ट्रनिर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।

Arya Jeevan

మొక్క పెంచండి. మొక్క తీర్చండి

హరితం..సతతం..జీవం ఇదే సర్కారు నినాదం..వానల కోసమే హరితహారం

- వచ్చే నెలలో రెండో విడత కోసం కార్యాచరణ
- ఈ ఏడాది 41 కోట్ల మొక్కలు నాటటమే లక్ష్యం
- సన్నద్ధమవుతున్న రాష్ట్ర ప్రభుత్వం

హైదరాబాద్, జూన్ 9 (ఆంధ్రజ్యోతి): తెలంగాణ తల్లి మెడలో 'పచ్చల' హారం వేయాలని సంకల్పించింది. 'హరితం...సతతం.. జీవం' నినాదంతో రాష్ట్రాన్ని పచ్చటి తెలంగాణగా తీర్చిదిద్దాలని కంకణం కట్టుకుంది. 33శాతం మేర పచ్చదనం పెంచాలని నిర్ధరించింది. అనావృష్టి, అత్యధిక వగటి ఉష్ణోగ్రతలు, గ్లోబల్‌వార్మింగ్ వంటి ప్రకృతి వైపరీత్యాలకు చెక్‌పెడుతూ తెలంగాణకు వానలు వాపస్‌వచ్చేలా చేయటమే ప్రధాన లక్ష్యంగా హరితహారం కార్యక్రమాన్ని రాష్ట్ర ప్రభుత్వం చేపట్టింది. రెండో విడత హరితహారం కింద 41 కోట్ల మొక్కలను నాటేందుకు అటవీశాఖ ఏర్పాట్లు చేస్తోంది. ఇందుకు 46 కోట్ల మొక్కలు నర్సరీలో సిద్ధంగా ఉన్నాయి.రెండోవిడత

సిద్ధంచేసిన మొక్కల్లో టేకు మొక్కలు 1.20 కోట్లు ఉండగా... సేరేడు, మామిడి, చింత, దానిమ్మ, ఉసిరి, జామ, నిమ్మ తదితర పండ్ల జాతి చెట్లు 4.92 కోట్లదాకా ఉన్నాయి. మిగతా 40 కోట్ల మొక్కల్లో ఈత, సుబాబుల్, వేప, కానుగ, మర్రి, జువ్వి తదితర మొక్కలు ఉన్నాయి.

పండ్ల మొక్కలు 4.6కోట్లు...

రెండో విడత కోసం సిద్ధం

రెండో హరితహారాన్ని మూర్తిస్థాయిలో విజయవంతం చేసేందుకు సర్కారు ఇప్పటికే ఏర్పాట్లు మూర్తి చేసింది. ఈ కార్యక్రమానికి మూర్తిస్థాయిలో ప్రచారం కల్పించేందుకు సన్నద్ధమైంది. నాటాల్సిన మొక్కలను సిద్ధంగా ఉంచింది. హరితహారం బాధ్యతను జిల్లా కలెక్టర్లకు అప్పగించారు. దీనిని ఒక్క అటవీశాఖ కార్యక్రమంగానే కాకుండా అన్నిశాఖలకు బాధ్యతలు కేటాయించారు. అన్నిశాఖల ముఖ్యకార్యదర్శులతో హరితహారం నిర్వహణ కమిటీని ఏర్పాటు చేశారు. రెండోవిడత హరితహారం కార్యక్రమం కోసం... రాష్ట్రవ్యాప్తంగా ఇదివరకే ఏర్పాటుచేసిన 4213నర్సరీల్లో 46.30కోట్ల మొక్కలను పెంచి నాటేందుకు సిద్ధంగా ఉంచినట్లు అటవీశాఖ తెలిపింది. ఈ ఏడాది అటవీ లోపల 7.96కోట్ల మొక్కలను, 34కోట్ల మొక్కలను రాష్ట్రవ్యాప్తంగా నాటాలని అటవీశాఖ ఉన్నతాధికారులు నిర్ణయించారు. ఆడియో, వీడియో, కరపత్రాలు, టీవీ, ఎఫ్‌ఎం రేడియో, ఫేస్‌బుక్, వాట్సప్, వాల్ పోస్టర్లు తదితర ప్రచార సామాగ్రిని అటవీశాఖ సిద్ధం చేసింది.

హరితహారం ఏర్పాట్లు ముగింపుదశకు వచ్చినట్లు అటవీశాఖ కార్యదర్శి వికాస్‌రాజ్ తెలిపారు. జిల్లాల వారిగా కార్యచరణను సిద్ధం చేసినట్లు చెప్పారు. అయితే రెండోవిడత హరితహారం ప్రారంభించే తేదీని అటవీశాఖ ఇంకా ప్రకటించలేదు. సీఎం కేసీఆర్ చేతులమీదుగా రెండోవిడతను ప్రారంభించాలని నిర్ణయించినట్లు అటవీశాఖ పీసీసీఎఫ్ పీకే. శర్మ తెలిపారు. రుతుపవన వర్షాలు ప్రారంభమయ్యాక 15రోజులపాటు వేచిచూసి వర్షపాతస్థాయిని బట్టి ప్రారంభ తేదీపై నిర్ణయం తీసుకోనున్నట్లు అటవీశాఖ ఉన్నతాధికారులు తెలిపారు. జూలై రెండోవారం అంటే 15తారీఖున అధికారికంగా ప్రారంభించే అవకాశం ఉన్నట్లు ఉన్నతాధికారులు చెప్పారు.వాస్తవానికి 2015-16 సంవత్సరం నుంచి 2019కల్లా ఏటా 40 కోట్ల మొక్కల చొప్పున తెలంగాణ వ్యాప్తంగా 230కోట్ల మొక్కలునాటి పెంచాలని లక్ష్యంగా పెట్టుకున్నారు. అయితే 2015-16లో తీవ్ర వర్షాభావ పరిస్థితులు నెలకొనడంతో కేవలం 16 కోట్ల మొక్కలను మాత్రమే నాటారు.

లక్ష్యాలివే...

హరితహారం పథకాన్ని సర్కారు కొన్ని ప్రత్యేక లక్ష్యాలతో రూపొందించింది.

- తెలంగాణ రాష్ట్ర భూభాగం 1,12,101 కిలోమీటర్లు ఉండగా అడవులు 26,903.70 కిలోమీటర్లమేర (24శాతం) ఉన్నాయి. హరితహారం ద్వారా అటవీ ప్రాంతాన్ని 33శాతానికి పెరిగేలా చేయడం.తద్వారా వానలు వాపస్ వచ్చేలా చూడటం.
- అడవిలో, రోడ్లకిరుపైపులా పండ్ల చెట్లను నాటటంద్వారా నివాసాలు, పంటపొలాలపై దాడిచేస్తున్న కోతులకు ప్రత్యామ్నాయం చూపటం.
- వాతావరణంలో ప్రాణవాయువును పెంచటం, పర్యావరణ సమతుల్యాన్ని కాపాడటం, ఇతర పర్యావరణ లక్ష్యాలను చేరుకోవడం
- నాలుగు సంవత్సరాల్లో రాష్ట్ర వ్యాప్తంగా 230 కోట్ల మొక్కలను నాటి సంరక్షించాలని లక్ష్యంగా పెట్టుకుంది. అటవీ ప్రాంతంలో 100కోట్ల మొక్కలు, అటవీ ప్రాంతం వెలుపల 120 కోట్ల మొక్కలు, జీహెచ్‌ఎంసీ పరిధిలో 10కోట్ల మొక్కలు పెంచడం

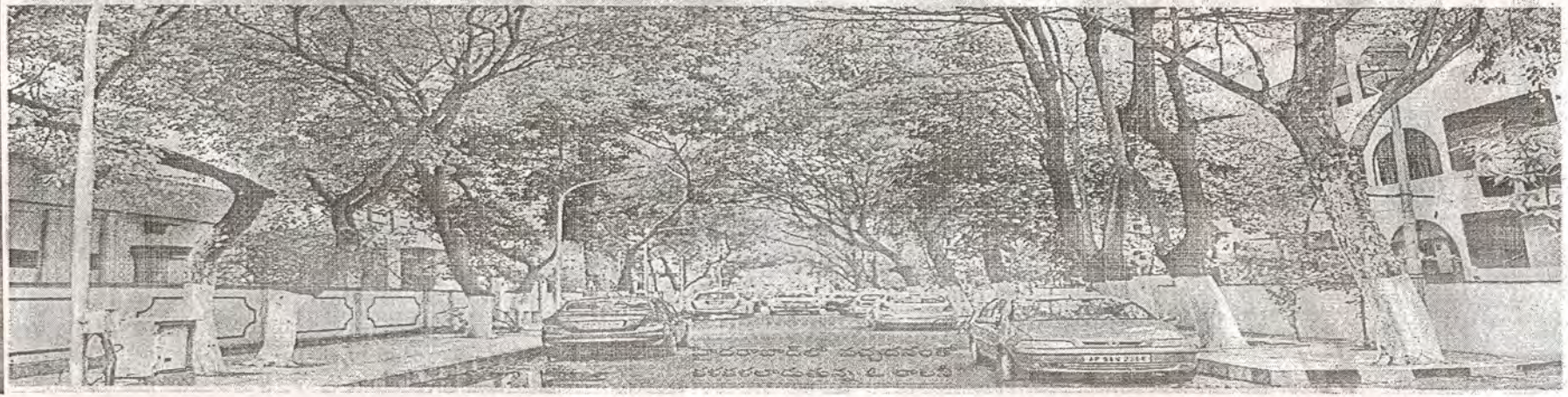

Date: 18-06-2016

माँसाहार छोड़ें - शाकाहार अपनाएँ : आखिर क्यों ?

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

माँसाहार से रोगोत्पत्ति

माँसाहारी प्राणी किसी भी प्रकार के माँस को पचा लेते हैं और स्वस्थ रहते हैं जबकि उसी माँस का सेवन करने से मनुष्य अनेक असाध्य रोगों का शिकार हो जाता है । इसका मूल कारण यही है कि माँस मनुष्य का स्वाभाविक आहार नहीं है, उसका शारीरिक ढाँचा माँसभक्षण के अनुकूल नहीं है, मानव शरीर के भीतर आहार को पचाने की जो रासायनिक प्रक्रिया होती है व माँस को पचाने में सक्षण नहीं है । इसी कारण माँस को पचाने के लिए माँसाहारी लोगों को शराब का सेवन करना पड़ता है अथवा अन्य औषधियों का आश्रय लेना पड़ता है । हिंसक जीवों की तरह मनुष्य न तो कच्चा माँस खा सकता है, न उसे पचा सकता है इसलिए उसे टुकड़े-टुकड़े करके, भूनकर या पका कर, उसमें मसालों का, घी का व सुगन्धित पदार्थों का छोंक लगा कर उसे खाने योग्य बनाता है अन्यथा माँस में इतनी दुर्गन्ध होती है कि उसे खाया ही नहीं जाया जा सकता । मछली का सेवन करने वालों के पसीने से तो इतनी दुर्गन्ध आती है कि पास से गुजरने वाले अथवा उसके साथ बस या ट्रेन में यात्रा करने वाले को काफी परेशानी झेलनी पड़ती है ।

मनुष्य के लिए माँसाहार रोगोत्पादक है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह अब नहीं रहा है क्योंकि माँसाहार का प्रचलन अधिकांशतः यूरोप और अमरिका से दुनिया भर में फैला है और अब यहीं के वैज्ञानिक, डॉक्टर, शोधकर्ता इसके विरुद्ध फतवे दे रहे हैं कि माँसाहार मनुष्य का स्वाभाविक आहार नहीं है क्योंकि यह उसे किसी न किसी रोग से ग्रस्त बनाये रखता है । माँसाहार को विश्व पटल पर स्थापित करने वाले ये विशेषज्ञ अब शाकाहार का प्रशस्ति गान करने पर बाध्य हैं । पहले माँस को ठण्डे प्रदेशों व देशों के लिए अनुकूल माना जाता था लेकिन अब यह मान्यता भी तेजी से बदल रही है क्योंकि ठण्डे प्रदेशों में भी माँस उतने ही रोग पैदा करता है जितने गरम प्रदेशों में । यह एक मजेदार तथ्य है कि जब कोई माँसाहारी किसी रोग का शिकार होता है तो उसका उपचार किसी अन्य माँस से नहीं बल्कि वानस्पतिक औषधियों से ही किया जाता है । माँस रोगोत्पादन में कितना सक्षण है और कैसे-कैसे रोग यह पैदा करता है इसकी एक झांकी निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत की जा रही है । माँसाहार की तुलना में शाकाहार किता उपयोगी व लाभकारी है इसका ब्यौरा भी इसमें मिलेगा ।

(१) अमेरिका के डॉ. ए. वाचमैन, डॉ. डी. एम. वकरटीन के अनुसार माँस भक्षण से अस्थियाँ निर्बल होती हैं । जिनकी हड्डियाँ कमजोर हों वे फल, सब्जियाँ दूध का सेवन अधिक करें, माँस सर्वथा छोड़ दें ।

(२) लन्दन (इंग्लैण्ड) के सुप्रसिद्ध डॉ. हेग के मतानुसार सभी प्रकार के माँस में एक प्रकार का विष पाया जाता है और जब यह रक्त में मिलता है तो इससे दिल की जलन, जिगर की खराबी, टी.बी. (तपेदिक), दमा, खून की कमी, गठिया, हिस्टीरिया, सुस्ती, नींद का अधिक आना, अजीर्ण रोग (बदहजमी, कब्ज, अपच, दस्त), शरीर शूल, जुकाम, इन्फलुएंजा, मलेरिया न्यूमोनिया आदि सैकड़ों रोग पैदा हो जाते हैं ।

(३) डॉ. रसल अपनी पुस्तक 'Strength and Diet of all Nations' में दुनिया के कोने-कोने में किये गये परीक्षणों के परिणामों पर आधारित अपना निष्कर्ष निकालते हुए लिखते हैं -

(क) जो जातियाँ जितना अधिक माँस खाती हैं, उन्हें कैंसर का रोग अधिक होता है ।

(ख) जिन देशों में माँस कम या कतई नहीं खाया जाता, वहाँ कैंसर का रोग भी कम होता है ।

(ग) भोजन में माँस की मात्रा बढ़ाते ही कैंसर भी बढ़ जाता है ।

(४) कुछ वर्ष पूर्व ब्रिटिश मैडिकल एसोसिएशन द्वारा इंग्लैण्ड में एक महत्त्वपूर्ण सर्वेक्षण हुआ जो प्रसिद्ध पत्रिका 'रीडर डाइजेस्ट' में भी प्रकाशित हुआ है । इस सर्वेक्षण में पाया गया कि माँसाहार का सेवन करने वाले मनुष्यों पर औसतन वार्षिक चिकित्सा व्यय नौ हजार पाउण्ड से ऊपर आता है जबकि शाकाहार करने वालों पर केवल बारह सौ पाउण्ड । एक सी बीमारियों के लिए माँसाहारियों को अधिक व शाकाहारियों को कम दवा की खुराक देनी पड़ती है । माँसाहारी रोगी शाकाहारी रोगी की तुलना में ठीक होने में अधिक समय लेता है ।

(५) मई, २००१ में ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रो. केटी द्वारा ४५-९० वर्ष की आयु वर्ग के १९४९६ व्यक्तियों के ऊपर हृदयघात सम्बन्धी शोध किया गया । इस शोध में यह तथ्य सामने आया कि प्रतिदिन एक समय सिर्फ ५० ग्राम फल, सब्जियाँ अधिक खाने से हृदयघात से होने वाली मृत्यु की सम्भावना २० प्रतिशत कम हो जाती है ।

(६) डॉ. काल्डवेल बी. एसलस्टाइन जूनियर ने, जो अमेरीका के सर्वोत्तम डॉक्टरों में से एक हैं तथा क्लीवलैण्ड के माने हुए हृदय रोग के सर्जन हैं, मुम्बई के एक चिकित्सीय समारोह में बोलते हुए अपने बारह वर्षीय अध्ययन व शोध का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए बताया था कि -

(क) हृदय रोगियों को शाकाहारी आहार ही लेना चाहिए क्योंकि माँस, वसा, कोलेस्ट्रोल ही हृदय रोग उत्पन्न करने में सहायक बनता है ।

(ख) यह मानना वैज्ञानिक अध्ययन का अपमान है कि लाल माँस या त्वचा रहित चिकन खाना हानि नहीं पहुँचाता ।

(ग) यह अवधारणा कोरी गप्प है कि माँसाहारी व्यक्ति अधिक शक्तिशाली व मजबूत होता है । अमेरिका का सर्वश्रेष्ठ तेज धावक कार्ललेविस शाकाहारी है जिसने सन् १९९१ में टोकियों में

आयोजित दौड़ में विश्व रिकॉर्ड तोड़ा और फिर उसी दिन दोपहर बाद एक लम्बी कूद स्पर्धा में वह तीन बार २१ फीट से अधिक छलांग लगा सका ।

(घ) दाल, सब्जियाँ, अंकुरित अन्न व फलों की संतुलित खुराक लेने पड़ती । १५ वर्ष से मेरे रोगियों के शरीर में इस संतुलित आहार से न कोई कमी आई और न ही उन्हें कभी हृदय रोग ने सताया है ।

(ङ) विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) का अनुमान है कि भारत जैसे शाकाहारी देश में माँसाहार तथा मैक-स्टाइल खाने का प्रचलन बढ़ने से वर्ष २०१५ तक हृदय सम्बन्धी रोगों से मरने वालों की संख्या दो गुनी तथा २००५ तक मधुमेह रोगियों की संख्या ५ करोड़ ७० लाख तक पहुँच जायेगी, जो दुनिया के किसी भी देश से अधिक होगी ।

(च) विशेषज्ञों की राय है कि दुनिया में ५ में से ४ अरब रोगों की हृदय सम्बन्धी रोग कभी न होंगे जो कम चर्बी वाले शाकाहारी भोजन का सेवन करते हैं । **(टाइम्स ऑफ इण्डिया, मुम्बई ५ नवम्बर,** २०००)

(७) अमेरिका के येल विश्वविद्यालय के प्रो. इरविंग फिशर ने परीक्षण में पाया हा कि शाकाहारी लोग माँसाहारी लोगों की तुलना में अधिक स्वस्थ, सशक्त, रोग प्रतिरोधक शक्ति सम्पन्न तथा मस्तिष्क से अधिक स्पष्ट, स्वभाव से अधिक गम्भीर व शांत तथा विचार शक्ति रखते हैं ।

(८) अमेरिका के स्वास्थ्य विशेषज्ञ डीन आरनिश का पाँच वर्ष का अध्ययन बतलाता है कि शाकाहार, नियमित व्यायाम तथा ध्यान योग से बिना दवाई के भी हृदय रोगों को रोका जा सकता है ।

(९) वैज्ञानिकों ने पाया है कि माँस प्राप्ति के लिए जब किसी जानवर या पशु को काटा जाता है तो भूख, प्यास, भय घराहट के कारण उसके शरीर की पाचन क्रिया, रक्त संचार क्रिया तथा मेटोबोलिज्म सम्बन्धी प्रक्रिया एकदम बन्ध हो जाती है, जिससे गुणहीन द्रव्य (मल, मूत्र, वीर्य) जानवरों के शरीर से बाहर नहीं निकल पाता । माँसपेशी (स्नायु), कोशिकाएँ कुछ घण्टों तक विष बनाती हैं पर उसे बाहर निकालने की प्रक्रिया खत्म हो चुकी होती है, जिससे यह विष जो एडरीनालिन (Adrenalin) कहलाता है, जानवरों के पूरे शरीर अर्थात् रक्त व माँस में फैल जाता है । इस विष के कारण ही माँसाहारी व्यक्तियों में ट्राईचिनोसिस, पेट के कीड़े, टी. बी. (तपेदिक, क्षय), मस्तिष्क सम्बन्धी रोग, गठिया, यकृत में रक्त बहुलता, एपेनडिसाटिस (आंत का फोडा), पागलपन आदि रोग हो जाते हैं । एडरीनालिन के साथ जब क्लोरिनेटिड हाइड्रोकार्बन लिया जाता है तब यह हार्ट अटैक (हृदयघात) का गंभीर खतरा पैदा कर देते हैं ।

(१०) अमेरिकन डॉक्टरों की सबसे बड़ी एसोसिएशन ने जिसमें लगभग पाँच हजार डॉक्टर हैं, अमेरिका के राष्ट्रपति को वर्ष १९९९ में एक ज्ञापन भेजकर सूचित व सावधान करते हुए आग्रह किया था कि यदि अमेरिकन नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करनी है, उन्हें मस्तिष्कीय पक्षाघात, हृदय रोग, कैंसर जैसे असाध्य रोगों से बचाना है, तो पूरे देश में माँसाहार से सम्भावित एवं प्रत्यक्ष खतरों के दृष्टिगत राष्ट्रव्यापी में माँसाहार से सम्भावित एवं प्रत्यक्ष खतरों के दृष्टिगत राष्ट्रव्यापी चेतावनी प्रसारित की जाये । चूँकि अमेरिकन माँस इंडस्ट्रीज काफी सशक्त, प्रभावशाली, पैसे वाली और चुनावी राजनीति में दखल रखने में सक्षम है जिससे अमेरिकन राष्ट्रपति ऐसी राष्ट्रव्यापी चेतावनी प्रसारित करने का साहस नहीं बटोर सके। लेकिन इस ज्ञापन के लीक होते है जनता में यह प्रभाव पड़ा कि अमेरिका में शाकाहार के पक्ष में मानसिकता विकसित होने लगी। आज स्थिति यह है कि अमेरिका में हर वर्ष दस लाख लोग माँसाहार छोड़ शाकाहारी बन रहे हैं ।

(११) सन् १९८५ के नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. माइकल एस. ब्राउन तथा डॉ. जोसेफ एल. गोल्डस्टीन ने सिद्ध कर दिया कि अधिकांश मौतों का मूल कारण हृदय रोग ही है अतः कोलोस्ट्रोल को रक्त में जमने से रोकना अत्यावश्यक है । कोलेस्ट्रोल सबसे अधिक अण्डे में लगभग ४ ग्रेन एक अण्डे में होता है । कोलेस्ट्रोल सबसे अधिक अण्डे में लगभग ४ ग्रेन एक अण्डे में होता है जबकि फल-वनस्पति में न के बराबर । कोलोस्ट्रोल से उच्च रक्चचाप तथा किडनी के अनेक रोग पैदा होते हैं । अण्डे को फ्राईया रोस्ट करने से कोलेस्ट्रोल की मात्रा और बढ़ जाती है । यही कोलोस्ट्रोल मूत्राशय में पथरी का रूप धारण कर लेता है । कोलोस्ट्रोल चूँकि रक्त प्रवाह में अवरोधक है अतः मस्तिष्क में जाने वाले रक्त में रुकावट पड़ने से स्टोक की स्थिति पैदा होती है । जिगर तथा शरीर के अन्य भागों के सैल्स में अवरोधक है अतः मस्तिष्क में जाने वाले रक्त में रुकावट पड़ने से स्टोक की स्थिति पैदा हो जाती है । जिगर तथा शरीर के अन्य भागों के सैल्स में एक उपयोगी पदार्थ रिस्पटर होता है, जो रक्त में पाये जाने वाले पदार्थ लोडेसिट लियोप्रोटीन (एल.डी.एल.) व कोलोस्ट्रोल को रक्त में विलीन कर देता है । अण्डे व माँस का सेवन करने से शरीर के रिस्पटरों की संख्या घट जाती है जिससे रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है और वह रक्तवाहनियों में जमा होकर हृदयघात (हार्ट अटैक) का कारण बनता है ।

(१२) स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, बफैलो में की गई शोध से यह प्रकाश में आया है कि अमरीका में हर वर्ष सैंतालीस हजार से भी अधिक ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, जिन्हें माता-पिता के मांसाहारी होने का खामियाजा भुगतना पड़ता है क्योंकि वे जन्म-जात रोगों का शिकार होते हैं जो आयु भर उनका पीछा नहीं छोड़ते ।

(१३) ब्रिटेन के डॉ. एम. रॉक ने एक सर्वेक्षण अभियान के पश्चात् यह प्रतिपादित किया है कि 'शाकाहारियों में संक्रामक और घातक रोग माँसाहारियों की अपेक्षा कम पाये जाते हैं । वे माँसाहारियों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ , चुस्त, शांत और चिन्तनशील होते हैं ।

(१४) ग्वालियर के दो शोधकर्ताओं डॉ. जसराज सिंह और सी. के. डबास ने ग्वालियर जेल के ४० कैदियों पर शोध करने के उपरान्त बताया कि २५० माँसाहारी कैदियों में से ८५ प्रतिशत चिड़चिड़े व झगड़ालू स्वभाव के निकले जबकि बाकी १५० शाकाहारी कैदियों में ९० प्रतिशत शांत स्वभाव के और खुशमिजाज थे ।

(१५) अमेरिकी विशेषज्ञ डॉक्टर विलियम सी. सबर्ट्स के अनुसार यह पाया गया है कि यूरोपीय और अमेरीकी देशों में जहाँ माँसाहार का प्रचलन अधिक है वहाँ हृदय रोग, श्वास रोग, उदर विकार, संक्रामक रोग, यकृत रोग, कैंसर, रक्तचाप, मोटापा, गुर्दे के रोग के मरीज अधिक मिलते हैं जबकि भारत, जापान, दक्षिणी अफ्रीका में जहाँ माँसाहार का प्रचलन कम है वहाँ इन रोगों के रोगियों की संख्या काफी कम है ।

(१६) एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार ब्रेन बग (Brain Bug) नामक एक ऐसा कीड़ा है जिसके काटने से दस वर्ष के अन्दर पशु पागल हो जाता है । इस बीच यदि कोई ऐसे पशु का माँस खा लेता है तो उस पशु में धीरे-धीरे पलने वाला यह रोग उसके शरीर में भी प्रवेश कर जाता है और वह भी अन्ततः पागलपन का शिकार हो जाता है ।

(१७) अकेले अमेरिका में प्रतिवर्ष चालीस हजार ऐसे केस आते हैं जो रोग ग्रस्त अण्डे व माँस खाने से होते हैं । यह सर्वविदित है कि हत्या से पूर्व पशु, पक्षी, मछली और अण्डों की तय पैमानों पर पूरी जाँच नहीं होती और उनमें छिपे रोगों का पता नहीं चलता क्योंकि यह युग उपभोक्तावादियों का है जिनका क्वालिटी में नहीं क्वांटिटी में विश्वास है, जिनका जन-स्वास्थ्य में नहीं पैसे लूटने में विश्वास है । बहुत कम लोगों को पता है कि अण्डे, पशु, पक्षी, मछलियों में भी कैंसर, ट्यूमर आदि रोग पाये जाते हैं । हैल्थ एजूकेशन काउंसल के अनुसार विषाक्त भोजन (Food Poisoning) से होने वाली ९० प्रतिशत मौतों का कारण माँसाहार है ।

(१८) माँस, मछली, अण्डे को अधिक देर तक ठीक रखने के लिए बोरिक एसिड व विभिन्न बोरेट्स से प्रिजर्व किया जाता है । ये कम्पाउण्ड Cerebal Tissues में एकत्र होकर खाद्य को जहरीला बना देते हैं जो गम्भीर रोगों का कारण बनता है । बूचड़खानों से प्राप्त माँस सुरक्षित नहीं बल्कि हानिकारक, दूषित, गंदा व रोगग्रस्त होता है । कारण, माँस पशु की हत्या होते ही सड़ना शुरू हो जाता है । खून में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं अतः माँस में खून होने से उसमें बैक्टीरिया का इन्फैक्शन अति शीघ्र हो जाता है जो माँस को खराब कर देता है । इस माँस को खाना मुर्दे को खाने जैसा है । जब यह माँस खाने वाले के शरीर में पहुँचता है तो असाध्य रोग बन कर चिपट जाता है अर्थात् जो व्यक्ति माँस खाता है कुछ समय बाद यही माँस उसे खाना शुरु कर देता है । प्रयोगों से पता लगा है कि अण्डा यदि ८ डिग्री सेल्शियस से अधिक तापमान पर १२ घण्टे रहे तो उसमें सड़ने की क्रिया शुरु हो जाती है । भारत में तो मैदानी क्षेत्रों में २० डिग्री सेल्शियस से ३२ डिग्री सेल्शियस तक का तापमान रहता है और पौल्ट्री फार्म से बाजार तक पहुँचने में कम से कम २४ घण्टे लग जाते हैं । क्या ये अण्डे खाने के योग्य रह पाते हैं ? यूरोप व अमेरिका की वध शालाएँ तो अत्याधुनिक, नई टैक्नीक व नवीन उपकरणों से लैस व संचालित होती हैं जिनके पैरामीटर एशियाई बूचड़खानों से कहीं अधिक ऊँचे हैं लेकिन फिर भी उनसे उपलब्ध माँस को स्वास्थ्य की दृष्टि से आदर्श नहीं माना जाता । भारत के बूचड़खानों की शोचनीय दशा पर क्या लिखा जाये जहाँ पशुओं की जाँच करने वाला डॉक्टर नोटों का थैला भर कर सांझ को घर पहुँचता हो ।

(१९) यू. के. के नितिन मेहता के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग पचास लाख व्यक्ति सालेमोनेला (Salmoneela) से प्रभावित होते हैं । N.H.S. के अनुसार चिकिन व अण्डों से हुए फूड पायजनिंग के शिकार रोगियों का उपचार करने में बीस लाख डॉलर खर्च होता है । सालेमोनेला के अतिरिक्त लिस्टीरिया (Listeria) भी फैल रहा है जो फ्लू को पैदा करता है और फिर जिससे Meningitis (मस्तिष्कीय सूजन) या फूड पायजनिंग प्रनप सकती है । इससे महिलाओं का गर्भपात व गर्भस्थ शिशु के रोगी हो जाने की सम्भावना बढ़ती है । स्वास्थ्य विभाग के अनुसार १२ प्रतिशत (Ready to eat Poultry food) फास्ट फूड के नमूनों में लिस्टीरिया पाया गया है ।

(२०) एक अन्य महत्त्वपूर्ण खोज का निष्कर्ष Role of vegetarian Diet in Health and Disease, Bombay द्वारा सामने आया है कि गाय के माँस का सेवन करने वाला Creutzfeldt jacob's disease नामक रोग का शिकार हो जाता है जो एक दिमागी बीमारी है जो भेड़ों में पाई जाने वाली बीमारी Sctapie जैसी है । यह बीमारी पशु के माँस से मनुष्य के शरीर में माँसाहार के दौरान प्रवेश करती है । आस्ट्रेलिया, जहाँ सर्वाधिक माँस आहार के रूपमें खाया जाता है वहाँ प्रति व्यक्ति औसतन हर साल १३० किलो गोमांस खाता है । यहाँ आँतों का कैंसर (Bowel) सबसे अधिक है । डॉ. एण्ड्रीयू गोल्ड ने अपनी पुस्तक Diabetes : its causes and Treatment में शाकाहारी भोजन का ही सद्परामर्श दिया है ।

दूषित माँस और अनुधुली सब्जियों का सेवन करने से मिर्गी (Epllypsy) एपीलैपसी का रोग होता है ।

आँतों का अलसर, अपैन्डिसाइटिस, आँतों और मल द्वार का कैंसर (Ulcerative colitis, Appendicittis, Cartinoma of colon and rectum) ये रोग शाकाहारियों की अपेक्षा माँसाहारियों में अधिक मिलते हैं ।

अधिक प्रोटीन युक्त भोजन से गुर्दों की बीमारियाँ (Kidney Disease) होती हैं । चूँकि शाकाहारी भोजन के फैलावदार व Reatable होने से पेट जल्दी भर जाता है अतः मनुष्य जरूरत से अधिक प्रोटीन नहीं ले पाता । इसके विपरीत माँस चूँकि ठोस व सख्त होता है इसलिए आसानी से आवश्यकता से अधिक प्रोटीन खा जाता है ।

संधिवात रोग, महिमा और अन्ध वायु रोग (Rheumatold artheritls, goat and other type of astheritisis) खून में यूरिक ऐसिड की मात्रा बढ़ने से होते हैं क्योंकि यह एसिड जोड़ों पर जम जाता है । यूरिक एसिड बनाने वाले मुख्य कारक हैं माँस, अण्डा, चाय, कॉफी आदि ।

रक्त धमनियों का मोटा होना (Atherosclerosis) आहार में पोलीसैचुरेटेड फैट्स, कोलोस्ट्रोल व कैलोरीज का आधिक्य पर निर्भर करता है । माँसाहारी भोजन में इन पदार्थों की चूँकि अधिकता रहती है इस कारण यह रोग माँसाहारियों में अधिक मिलता है । शाकाहारी भोजन

में ये पदार्थों अत्यात्प मात्रा में होते हैं, फल और सब्जी में तो न के बराबर, इसलिए शाकाहारी इस रोग से अधिक ग्रसित नहीं होते ।

कैंसर जैसा जानलेवा रोग माँसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारियों में कम पाया जाता है । रासायनिक उर्वरकों व रासायनिक कीट व खरपतवार नाशकों के अत्यधिक प्रयोग से फल, सब्जी, चारा, शाक-पात, अन्न-दाल, चावल, दूध दूषित होने लगा है जिनके नियमित सेवन से अब शाकाहारी भी कैंसर का शिकार होने लगे हैं ।

(२१) सन् १९०८ में छह महीने तक 'लंदन वैजीटेरियन एसोसिएशन' की सैक्रेटरी कु. एफ. ई. निकल्सन ने २० हजार बच्चों को शाकाहारी भोजन पर रखा । इसके साथ-साथ लंदन काउन्टी कौंसिल द्वारा उतने ही बच्चों को माँसाहारी भोजन पर रखा गया । छह माह बाद जब इन दोनों दलों की परीक्षा डॉक्टरों द्वारा कराई गई तो परिणाम यह सामने आया कि माँसभोजी बच्चों की तुलना में निरामिष भोजी बच्चों का स्वास्थ्य अधिक अच्छा था, वजन अधिक था, पुट्ठे अधिक सुदृढ़ थे, तथा चमड़ा अधिक साफ था । तब इन दोनों संस्थाओं के सम्मिलित सहयोग से निर्धन बच्चों को निरामिष भोजन देने की योजना बनाई गई ।

(२२) डॉ. हेग ने अपनी पुस्तक 'डायट एण्ड फूड' पर लिखा है - "माँसभक्षण सुस्ती लाता है और चूँकि इसके कारण मस्तिष्क, माँसपेशियों, अस्थियों तथा समूचे शरीर में रक्त संचार मंद व न्यून हो जाता है जिससे व्यक्ति में स्वार्थपरता, लोलुपता, वासना, कायरता बढ़ती है और धीरे-धीरे उसका अधःपतन, ह्रास और अन्त में विनाश निश्चित हो जाता है । इस स्थिति में व्यक्ति में धन के प्रति आसक्ति उत्पन्न होती है, जिससे विलासितापूर्ण आलस्य का जीवन प्राप्त हो सके । क्या किसी स्वस्थ राष्ट्र के अंगीभूत व्यक्ति का यही आदर्श रहना चाहिए कि वह इस प्रकार आलस्यमय जीवन प्राप्त करके तृप्ति और जीवन के प्रति अरुचि का अनुभव करे । इसका निर्णय स्वयं राष्ट्र ही करे ।"

(२३) अमेरीकी डॉक्टर हेनरी परडो का कथन है कि उनके पास आने वाले सैकड़ों रोगी माँसाहार छोड़, शाकाहार अपनाने के बाद ही रोग मुक्त हुए हैं । यह सिद्ध हो चुका है कि माँसाहार की तुलना में शाकाहार अधिक सुरक्षित आहार है । मुम्बई के भाभा एटामिक सेंटर के वैज्ञानिक नसीम अहमद अंसारी लगातार गोश्त खाने के कारण उदर रोग से पीड़ित रहने लगे तो डॉक्टरों से तौबा कर वैद्य की शरण में गये और उनके परामर्श पर जब उन्होंने माँस छोड़ शाकाहार को अपनाया तो स्वस्थ होते चले गये । अब उनके परिवार में माँस नहीं पकता और सभी पारिवारिक सदस्य शाकाहारी बन गये हैं । इंग्लैण्ड के डॉ. पार्कस, प्रो. ओकाडन, भारत के गोविन्दराज और अमेरिका के डॉ. कैथरीन ओसिनियों के चर्चित शोद-परीक्षणों में कहा गया है कि माँसाहार के मुकाबले शाकाहार से स्मरण शक्ति व शारीरिक बल अधिक मिलता है । सफदरजंग अस्पताल में न्यूरोलॉजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. डी. सी. जैन ने अपने परीक्षणों में पाया है कि माँस, मछली, अण्डे लगातार खाने से मिर्गी से लेकर कैंसर जैसी बीमारी हो सकती है ।

शाकाहार की खूबियों और माँसाहार की खराबियों पर देश-विदेश में इतना अधिक अनुसंधान हो चुका है और इतना अधिक लिखा जा चुका है कि यदि यहाँ लिखने लगें तो महाभारत व रामायण जैसा मोटा ग्रन्थ तैयार हो जाये । यहाँ संक्षेप में जो लिका गया है वह समझदारों के लिए पर्याप्त है, मूर्खों व कुतर्कियों को समझाना तो किसी भी युग में सरल व सफल नहीं रहा है । जब सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर युग में माँसाहारी राक्षस, निशाचर, चण्डाल विद्यमान थे तब कलियुग में उनके अस्तित्व को नकारना कैसे सम्भव है । अन्तर मात्र इतना आ गया है कि पहले, विशेषतः भारत में इन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता था, सभ्य समाज से पृथक रखा जाता था, उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध और खानपान के सम्बन्ध नहीं रखे जाते थे लेकिन अब मिश्रित सभ्यता व संस्कृति के कारण, विज्ञान तकनीक की बदौलत दुनिया के सिमट जाने के कारण, वर्ण संकरता बढ़ने के कारण, आचार धर्म शिथिल होने के कारण, देव दानव, आर्य-अनार्य, श्रेष्ठ-निकृष्ट, सात्विक-तामसिक में कोई भेद नहीं रह गया है । हाँ इतना अवश्य है कि आधुनिक विज्ञान और तकनीक ने माँसाहार व शाकाहार को लेकर जो निष्पक्ष निष्कर्ष निकाले हैं वे उत्साहवर्द्धक हैं, चौंकाने वाले हैं, झकझोरने वाले हैं । ये निष्कर्ष आम जनता तक नहीं पहुँचे हैं, माँसाहारियों तक नहीं पहुँचे हैं, उन आदिवासी कबीलों तक नहीं पहुँचे हैं जो आज भी शिकार से पेट भरते हैं, उन मजहबी लोगों तक नहीं पहुँचे हैं जो भ्रान्तियों और मजहबी प्रथों या आहार की जातिगत प्रतिबद्धता का शिकार होकर माँसभक्षी बने रहना चाहते हैं । इसी कारण शाकाहारी आन्दोलन को जो गति, आयाम व सफलता मिलनी चाहिए थी अब तक नहीं मिल सकी है । इसी का दुष्परिणाम, रोगों के रूप में, माँसाहारी लोग देश-विदेश में भोग रहे हैं ।

(घ) क्या माँस भक्षण से अधिक ताकत मिलती है ?

अपनी सभ्यता और संस्कृति को हेय दृष्टि से देखने वाले तथा पाश्चात्य जीवन मूल्यों को आदर्श मानने वाले लोग इस भ्रान्ति के शिकार हो रहे हैं कि शाकाहारी भोजन में आवश्यक पोषक तत्वों प्रोटीन, विटामिन, वसा, खनिज, कैलोरी आदि का माँस, मछली, अण्डों की तुलना में काफी अभाव रहता है । यही कारण है कि शाकाहारी की तुलना में माँसाहारी अधिक हृष्ट-पुष्ट, अधिक ताकतवर, अधिक साहसी, अधिक बुद्धिमान नजर आता है । उनकी धारणा है कि इसी कारण इस्लाम और ईसाइयत से प्रभावित माँसाहारी कबीलों और जातियों ने समुद्र और मरुस्थल को लांघ कर दुनिया भर में अपना परचम फहराया । यूनान, इंग्लैण्ड, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, अरब देश इसके उदाहरण हैं जिनका क्षेत्रफल और जनसंख्या नगण्य थी लेकिन विशाल देशों व साम्राज्यों को उन्होंने फतह किया । वस्तुतः माँसाहार को इस विजय का कारण मानना गलत है क्योंकि जिन देशों को फतह किया गया उसके पीछे राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक कारण थे । बाहुबल की अपेक्षा कूटनीति, फूट, रिश्वत, लोभ, हत्या, घोखाघड़ी की भूमिका उसमें अधिक रही है । कोई भी भूखण्ड एक विशाल साम्राज्य

के बजाय अलग-अलग रियासतों में विभाजित था जिनका आपस में टकराव रहता था और अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए वे बाहरी ताकतों को आमंत्रित करते थे अपने देशीय शत्रु को पछाड़ने के लिए उनका सहयोग करते थे । इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल जिनके साम्राज्य में कभी सूरज नहीं छिपता था आज अपने-अपने देशों में ही सिमट कर क्यों रह गये हैं ? क्या वहाँ के निवासियों ने अब माँस, अण्डे, मछली खाना छोड़ दिया है ? अनेक ऐसे माँसाहारी कबीले हैं जो अभी तक जंगलों में सिमटे दुबके पड़े हैं, असभ्य हैं, अनाड़ी हैं और किसी देश पर कब्जा नहीं कर सके हैं । आधुनिक शोध हमें इस निष्कर्ष पर ले जाती हैं कि माँसाहारी भोजन की तुलना में शाकाहारी भोजन कहीं अधिक संतुलित, कहीं अधिक पोषक, कहीं अधिक लाभकारी, कहीं अधिक गुणकारी, कहीं अधिक सस्ता, कहीं अधिक ताकतवर हैं । इसे अनेक उदाहरण देकर सिद्ध किया जा सकता है । जैसे-जैसे खोज आगे बढ़ रही है अधिक से अधिक वैज्ञानिक, जीव शास्त्री, आहार विशेषज्ञ इस तथ्य को गहराई से स्वीकार करते जा रहे हैं कि शाकाहारी भोजन सबसे अधिक पौष्टिक, उत्तम और उपयुक्त है । अनेक रिपोर्ट भी प्रकाशित हो चुकी हैं जो शाकाहार को सर्वोत्तम आहार मानती हैं । इनमें से कुछ का विवरण यहाँ प्रस्तुत है -

(१) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के Food and Drug Administration की पत्रिका FDA Consumer ने शाकाहार की भूरि-भीरि प्रशंसा की है । Food Nutrition Board of National Academy of Sciences की सन् १९७४ की रिपोर्ट को उसमें उद्धृत किया गया है जिसके अनुसार - "यह विचार कि शाकाहारी अपनी शारीरिक आवश्यकता के अनुसार माँसाहार किये विना पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर सकते, सुनने में चाहे भला लगता हो, लेकिन यह एक निरी गप्प (Myth) है ।"

(२) सर्वाधिक शक्तिशाली, परिश्रमी, सहनशील, कई-कई दिन तक लगातार श्रम करने वाले प्राणी जैसे हाथी, घोड़ा, ऊँट, हाथी, बैल सब शाकाहारी हैं । यंत्रों की शक्ति को जो Horse Power (अश्व शक्ति) संज्ञा प्राप्त हुई है तो वह घोड़े की शक्ति को देखकर ही प्राप्त हुई है । ऐवरेस्ट विजेता तेनजिंग ने शेरपाओं की शक्ति का रहस्य उनका शाकाहारी होना ही बताया था । अनेक शोधकर्त्ताओं ने पता लगाया है कि शाकाहारी अधिक शक्तिशाली, अधिक परिश्रमी, अधिक वजन उठाने वाले, अधिक दमदार, अधिक सहनशील, अधिक शांत स्वभाव के, अधिक खुशमिजाज, अधिक समय तक भूख पर काबू रखने में समर्थ, अधिक लम्बे उपवास रखने में सक्षण होते हैं । जापान में किये गये अध्ययनों से पता चलता है कि शाकाहारी न केवल स्वस्थ व निरोग रहते हैं, अपितु दीर्घजीवी भी होते हैं व उनकी बुद्धि भी अपेक्षाकृत तेज होती है ।

(३) शाकाहारी पदार्थों में प्रोटीन, विटामिन, चिकनाई, लवण, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट कम से कम भी हैं, अतः श्रम की दृष्टि से निर्धारित कैलोरीज अपने शरीर की आकृति और वजन के अनुसार प्राप्त की जा सकती है । यह सुविधा और विविधता माँस, मछली अण्डे में नहीं है । शाकाहारी भोजन से शरीर को शक्ति प्राप्त होती है जबकि माँसाहार से शरीर को उत्तेजना मिलती है जो क्षणिक होती है । माँस खाने से शरीर को नाइट्रोजन अधिक मिलता है जिससे शरीर में यूरिक एसिड, ल्यूकोमिन, क्रियेटिनिन, फास्फोरिक एसिड आदि व्यर्थ पदार्थ उत्पन्न होते हैं जिन्हें बाहर निकालने में बहुत-सी एकत्र ऊर्जा का अपव्यय होता है और इनका पूर्ण निष्कासन न होने पर शरीर में अनेक रोग उत्पन्न होने लगते हैं। इस दृष्टि से शाकाहार एक सुरक्षित आहार है, शक्तिवर्द्धक आहार है, ऊर्जायुक्त आहार है । यही कारण है कि यूरोपीय और अमेरीकी देशों में जहाँ शोध और विज्ञान के निष्कर्षों पर विश्वास किया जाता है शाकाहारी आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है यद्यपि अपनी परम्परागत आहारीय पद्धति, रीति-रिवाजों और आदतों को बदलना किसी भी व्यक्ति के लिए कठिन होता है । बी. बी. सी. के टेलीविजन विभाग द्वारा शाकाहार पर एक साप्ताहिक कार्यक्रम द्वारा बाकायदा माँसाहारियों को स्पष्ट चेतावनी दी जाती रही है कि इससे आपको घातक रोगों का सामना करना पड़ सकता है अतः शाकाहार को अपनाना स्वस्थ व निरोग शरीर के लिए बेहतर विकल्प है ।

(४) डॉ. हेग ने अपनी पुस्तक Diet and Food (पथ्य और भोजन) में उत्तेजना व शक्ति में भेद बताते हुए लिखा है - "शाकाहार से शक्ति उत्पन्न होती है और माँसाहार से उत्तेजना । माँसाहारी पहले तो शक्ति का अनुभव करता है परन्तु शीघ्र ही थक जाता है, हाँफने लगता है, उसका दम फूल जाता है । इसके विपरीत शाकाहारी अपनी शक्ति का प्रयोग धैय पूर्वक और लम्बे समय तक करने में सफल रहता है । "जून १८९९ में क्वेटा में एक परीक्षण रस्साकशी पर किया गया । एक दल में माँस कम व शाक अधिक खाने वाले सिख थे तो दूसरे दल में अंग्रेज जो अधिकतर माँस पर निर्भर रहते थे । रस्साकशी के दौरान अंग्रेजों के हाथ छिल जाते थे और शीघ्र ही उनका दम फूलने लगता था जिसके कारण उन्हें रस्सा छोड़ना पड़ता था जबकि सिख बराबर रस्सा खींचते रहते थे ।

(५) १९ जून, १७९८ के 'डेली न्यूज' में वर्लिन के संवाददाता ने एक समाचार भेजा जिसका शीर्षक था 'शाकाहार की विजय' । इस समाचार में छपा था कि १४ माँसाहारियों व ८ शाकाहारियों में ७० मील पैदल चलने की होड़ लगी । इनमें से जो यात्री सबसे पहले निर्दिष्ट स्थान पर साढ़े चौदह घंटे में पहुँचा वह शाकाहारियों में से एक था । सबसे पिछला शाकाहारी जब अपने गंतव्य पर पहुँचा तो उसके एक घण्टे वाद पहला माँसाहारी वहाँ पहुँचा । शेष सभी माँसाहारी ३५ मील चलने के पश्चात थक गये थे, हांफते हुए वहीं रुक गये थे ।

(६) १९०२ में १८ शाकाहारी और १४ माँसाहारी ट्रेस्टन से बर्लिन (जर्मनी की राजधानी) की ओर चले । उनमें से १० शाकाहारी और ३ माँसाहारी निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गए । जो सबसे प्रथम रहा उसका नाम कार्लमैन था जो सबसे पहले के माँसाहारी से ७ घंटे पहले पहुँचा था । उसको एक ५९ वर्ष के मनुष्य ने जो ३८ वर्ष शाकाहारी रहा था, ४ घण्टे पहले पहुँच कर हरा दिया था ।

निमन्त्रणः आर्य समाज का

- पं- गंगा प्रसाद उपाध्याय

आर्य समाज एक संस्था है जिसे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० (अर्थात १९३२ विक्रमी की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) में बम्बई में खोला था । इसके उपरांत हजारों आर्य समाज भारतवर्ष तथा अन्य देशों के ग्रामों या नगरों में खुल गए । इन सबके नियम और उद्देश्य एक ही हैं, और ये कई वैधानिक प्रणालियों द्वारा परस्पर संघटित तथा सहयुक्त हैं ।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य यह था कि जगत् में ईश्वर के अस्तित्व, उसकी पूजा, जीव और ईश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य के आचार व्यवहार के विषय में जो अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं, उनको दूर किया जाय। स्वामी दयानन्द ने अपनी तपस्या, स्वाध्याय तथा मनन से यह बात मालूम की कि मनुष्य की सबसे प्राचीन और सर्वोत्तम धर्म पुस्तक वेद है । उसकी सहायता से अनेकानेक भ्रम दूर हो सकते हैं और उसी के अनुकूल चलने से देशों, जातियों सम्प्रदायों के पारस्परिक झगड़े मिट सकते हैं । इसलिए स्वामी दयानन्द ने वेदों का प्रचार आरम्भ किया । आर्यसमाज, वैदिकधर्म का संसार भर में प्रचार करना अपना मुख्य कर्तव्य समझता है ।

आर्य समाज के दस नियम यह हैं

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है ।
२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अन्नत, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।
३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।
४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।
५. सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये ।
६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।
७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।
८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।
९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए । किन्तु सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।
१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम के पालन में सब स्वतन्त्र रहें ।

पहले दो नियम परमेश्वर के विषय में हैं । यों तो संसार में अधिकांश लोग ईश्वर, भगवान् अल्लाह आदि अनेक नामों द्वारा ईश्वर को मानते हैं । परन्तु ईश्वर के विषय में उनकी भावनायें भिन्न-भिन्न हैं । कोई समझता है कि ईश्वर मनुष्य के समान मुंह, नाक, कान, हाथ, पैर युक्त शरीर वाला कोई ऐसा व्यक्ति है जो स्वर्ग में रह रहा है और वहीं बैठा-बैठा संसार के प्राणियों पर हुकूमत करता है । हम सब ईश्वर के साथ के खिलौने हैं । वह जिस तरह चाहता है कठपुतली के समान हमको नचाता रहता है किसी को राजा बनाता है किसी को दरिद्र। किसी को निरोग और किसी को रोगी । किसी को अन्धा और किसी को आंख वाला।

कुछ लोग मानते हैं कि भूमि के ऊपर आकाश में किसी स्थान पर बहुत दूर स्वर्ग बहिश्त या जन्नत है वहां ईश्वर रहता है । उसके दरबार में बड़े-बड़े देवता या फरिश्ता रहते हैं । वह जैसा हुक्म देता है वे उसी प्रकार संसार के लोगों के साथ व्यवहार करते हैं ।

कुछ लोगों का विचार है कि ईश्वर का वास्तविक घर तो स्वर्ग ही है । परन्तु ईश्वर जब चाहता है तो शरीर धारण करके मृत्युलोक में उतर आता है । इसी को अवतार कहते हैं । अवतार लेकर ईश्वर नरलीला करता है अर्थात् जैसा मनुष्य आचरण करते हैं खाते हैं, पीते है, रोते हैं, हंसते हैं लड़ते हैं, भिड़ते हैं, इसी प्रकार की लीलायें ईश्वर भी किया करता है ।

इस प्रकार ईश्वर को मानने वालों के इतने भेद हैं कि उनके विचार आपस में नहीं मिलते । और एक ईश्वरवादी समुदाय दूसरे ईश्वरवादियों से निरन्तर लड़ता रहता है, इससे संसार की शान्ति भंग होती है । ईसाई मुसलमान हिन्दुओं से, सदा लड़ते रहते हैं । सुन्नी मुसलमान शिया मुसलमान से लड़ता है, कैथेलिक ईसाई प्रोटेस्टेण्ट ईसाई से लडता है । शैव हिन्दू शाक्त हिन्दू से लड़ता है । सभी एक दूसरे के रक्त के प्यासे रहते हैं

कुछ बुद्धिमान, लोगों को परस्पर लड़ते देखकर ऐसा मत बना डाला कि ईश्वर कोई वास्तविक वस्तु नहीं है । मूर्खो ने इसकी कल्पना मात्र कर ली है और उसी कल्पना के आधार पर परस्पर लड़ते रहते हैं । न कोई ईश्वर है और न मनुष्य को किसी ईश्वर के पूजने की आवश्यकता है । सब धर्मों को छोड़ दो और सभी मनुष्य एक दूसरे के साथ मिलकर संसार की उन्नति करें ।

परन्तु ईश्वर-विश्वास को छोड़ देने से परिस्थिति सुधरी नहीं । बुद्धों ने ईश्वर-अस्तित्व का निषेध किया । परन्तु बौद्ध लोग महात्मा बुद्ध की मूर्तियां बनाकर पूजने लगे और उन मूर्तियों के आकार, प्रकार पर लड़ाइयां होती रहीं, जैनियों ने भी ईश्वर के मानने से इन्कार कर दिया । किन्तु उन्होंने भी सन्त महात्माओं की मूर्तियां बनाई तथा शिव और शाक्त लोगों के समान मूर्तियों को पूजने लगे । बीमारी ज्यों की त्यों रही । केवल ऊपरी रूप बदल गया । कुछ नास्तिकों ने सब प्रकार के पूजा-पाठ को छोड़ दिया । कहने लगे कि लोगों ने भ्रांति वश अपनी कल्पना से ईश्वर ईश्वर कहना आरम्भ कर दिया है । वस्तुतः ईश्वर जैसे कोई सत्ता नहीं है । ईश्वर की पूजा में व्यर्थ धन या समय

गंवाना ठीक नहीं है । प्राकृतिक सुखों के सम्पादन का प्रयत्न करना चाहिये । जैसे कम्युनिस्ट लोग किया करते हैं ।

परन्तु अब तो संसार इस परीक्षण को भी कर चुका है । मनुष्य का जी नहीं चाहता कि ईश्वर की सत्ता से सर्वथा इन्कार कर दे । यदि ईश्वर जैसी कोई चीज नही है तो यह जड़जगत् सुव्यवस्थित कैसे रहता है ? थोड़ा-सा विचार करने से ही पता चलता है कि संसार में कोई ऐसी शक्ति काम कर रही है जो मनुष्य की बुद्धि से भी परे है । जगत् की सभी चीजों से अधिक बुद्धिमान मनुष्य है । परन्तु बुद्धिमान मनुष्य की बुद्धि भी यह समझने में कि स्वयं उसी का शरीर किस प्रकार कार्य कर रहा है ? हमारी आंख कैसे बनी ? कैसे उसमें देखने की शक्ति उत्पन्न हुई और कैसे वह काम करती है । मनुष्य आंख को स्वयं नहीं बनाता, चश्मे बनाने वाले भी आंख का नमूना सामने रखकर ही बनाते हैं । और यह चश्मे भी बिना आंख के काम नहीं कर सकते । यदि चश्मा वनाने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है तो आंख बनाने के लिए कितनी वड़ी बुद्धि वाली शक्ति चाहिए । चींटी की आंख में देखने की शक्ति होती है । चींटा या चींटी के मां-बाप तो आंख नहीं बना सकते । मनुष्य के मां-बाप भी अपने पुत्र की आंख की बनावट को न समझ सकते हैं न आंख बना सकते हैं । इससे बुद्धिमान् लोग इस सरलतम उपाय से सन्तुष्ट नहीं हो सकते कि ईश्वर का विश्वास ही छोड़ दो ।

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के पहले दो नियमों में यह दिखाया है कि केवल ईश्वर न मानने मात्र से काम नहीं चलेगा । ईश्वर का यथार्थ स्वरूप समझने और ईश्वर पूजा की ठीक विधि का अवलम्बन करने से ही आपत्ति दूर होगी । अनुचित भोजन खाने से रोग होता है । परन्तु इसका यह इलाज नहीं है कि बिल्कुल खाना बन्द कर दो । क्योंकि शरीर को ठीक रखने के लिए भोजन अत्यन्त आवश्यक है । त्याज्य है अनुचित भोजन । शुद्ध भोजन त्याज्य नहीं है इसलिए यदि अनुचित भोजन से तंग आकर अनशन करना आरम्भ कर दिया जाय तो शरीर कैसे चलेगा ? मनुष्य की आन्तरिक भावना है कि मनुष्य से भी वड़ी किसी सत्ता पर विश्वास करके उसका आश्रय लें और उसकी पूजा करे । यदि उसको ठीक-ठीक यह न बताया जाये कि वह सत्ता है क्या, तो वह भूत और चुडैलों को पूजने लगेगा । जिसे खाने के लिए रोटी नहीं मिलती यह वृक्षों की छाल तक खा जाता है और अत्यन्त विपत्तिजनक अवस्थाओं में धूल तक फांकने लगता है । यही हाल आध्यात्मिक भोजन का है । अच्छा और उचित भोजन न दोगे तो अनुचित भोजन खाने पर लोग बाधित होंगे । यही कारण है कि जब उचित ईश्वरवाद से मुंह मोड़कर लोग नास्तिक बन गये तो नास्तिकों में भी भूत-प्रेत या कल्पित वस्तुओं और कब्रों की पूजा आरम्भ हो गई । इसलिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के पहले दो नियमों में ईश्वर के ठीक-ठीक स्वरूप का वर्णन किया । अर्थात :-

(१) ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जो सारे जगत् का आदि मूल है ।

(२) जगत् मिथ्या नहीं है । यदि जगत् मिथ्या होता तो आदिमूल भी मिथ्या होता । उपनिषद् कहती है :- "कयं असतः सत् जायते" अर्थात् असत् से सत् उत्पन्न नहीं हो सकता और सत् से असत् उत्पन्न नहीं हो सकता । "नाभावो विद्यते सतः" यह गीता का वाक्य है ।

(३) उस "आदिमूल' सत्ता के गुणों का दूसरे नियम में वर्णन है अर्थात् वह सच्चिदानन्द है । एकरस है, प्राकृतिक नहीं है निराकार है । क्योंकि रंग आदि आकार तो भौतिक हैं । भौतिक चीज़ें, अनित्य होती हैं । ईश्वर अनित्य नहीं, अनित्य तो जगत् है । ईश्वर अवतार भी नहीं लेता और कोई जड़ पदार्थ ईश्वर का स्थानापन्न नहीं बन सकते ।

(४) इसलिए सब प्रकार की मूर्तियां जो ईश्वर के स्थान में पुजती हैं कल्पित और भ्रामात्मक हैं और आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वथा अनुचित और हानिकारक हैं । सब प्रकार की मूर्तिपूजा को बन्द कर देना चाहिये । जितनी मूर्तियां पशु-पक्षियों के आकार की जैसी शेषनाग की, या नर-पशु की मिली हुई जैसे गणेश या नरसिंह की, या पीपल, वट आदि वृक्षों की, या राम, कृष्ण, विट्ठल, या मरियम आदि की, सभी पूजना पाप है । मरे हुए महात्माओं की कबरों की पूजा पत्थर की मूर्तियों के पूजने के समान ही अनुचित हैं । यह वस्तुतः ईश्वर पूजा है ही नहीं ।

(५) ईश्वर की पूजा एक आध्यात्मिक कर्म है । अर्थात् अपने अन्तःकरण में उस सत्ता पर विचार करना जिसकी अवस्था में यह जगत् चल रहा है । हाथ जोड़ना, सिर को नमाना, सिजदा करना दण्डवत करना, फूल या जल चढ़ाना यह सब ईश्वर-पूजा की भ्रामात्मक रीतियां हैं ।

(६) भिन्न-भिन्न अवतार मानने वालों ने जब अलग-अलग अवतार अलग-अलग पैगम्बर या अलग-अलग सन्त माने तो पूज्य पदार्थों की भिन्नता के कारण पूजकों के भी अनेक सम्प्रदाय बन गये । मन्दिरों और मस्जिदों पर झगड़े हुए । ईसा की जेरुसलम की कब्र को हथियाने के लिए ईसाइयों और मुसलमानों में जो सलीब के युद्ध हुये वह कई शताब्दियों तक मानव-संहार करते और कराते रहे । यदि मनुष्य बुत-परस्ती, कवर-परस्ती मर्दुम परस्ती, छोड़ कर उस विशाल सत्ता का ध्यान करता, जो प्रत्येक काल में हमारे दिलों में विद्यमान रहती है, तो अवश्य ही धर्म के माथे पर मानव-संहार के कलंक का टीका न लगता ।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है कि मनुष्य मात्र के हृदय में सच्ची आस्तिकता की शुद्ध भावना उपजे ।

तीसरे नियम में "वेद" के पढ़ने और पढ़ाने, सुनने और सुनाने, मानने और मनवाने का संकेत है । वेद न केवल मनुष्य जाति की प्राचीनतम पुस्तक है, अपितु उस में मनुष्य की लौकिक और पारलौकिक उन्नति के ऐसे नियम दिये हैं कि हम सैंकड़ों बुराइयों से बच सकते हैं मनुष्य समाज के निर्माण और सांसारिक जीवन व्यतीत करने के जो नियम वेद में दिये हैं वैसे किसी भी पुस्तक में पाये नहीं जाते । यों तो संसार में भिन्न-भिन्न देशों और भिन्न-भिन्न युगों में अनेक महात्मा सुधारक हुए जिन्होंने मनुष्य को गलत रास्ते से बचाया । परन्तु उनके सुधार एकाङ्गी थे । सुधार के साथ-साथ उनसे बिगाड़ भी हुआ है । जैसे कुछ अत्याचारियों के आक्रमण से बचने के लिए हिन्दुओं ने बाल-विवाह की प्रथा जारी की । परन्तु जब यह प्रथा चल पड़ी तो इसने देश

...शेष पृ. १३ पर

बौद्धधर्म का आधार वैदिकधर्म है

महात्मा बुद्ध की शिक्षा का उद्देश्य किसी नवीन धर्म की स्थापना करना नहीं था

-पं० गंगाप्रसाद चीफ जस्टिस

पिछले अध्याय में हमने ईसाईमत के निकास का पता लगाया है। हमने यह बात सिद्ध की है कि उसके धार्मिक सिद्धान्त यहूदीमत पर और सदाचारिक उपदेश बौद्ध धर्म पर निर्भर हैं। अन्त के दो अध्यायों में इस बात का उल्लेख किया जोगा कि ज़रदुश्ती मत के द्वारा यहूदी धर्म की उत्पत्ति वेद से है। इस अध्याय में यह बात सिद्ध की जाएगी कि बौद्धधर्म या सदाचार सम्बन्धी उन उपदेशों का संग्रह-जिनका महात्मा बुद्ध ने प्रचार किया और जो ईसाई-मत के अभ्युत्थान में बहुत कुछ सहायक हुए सीधा वेदों से निकाला है। यह बात कदाचित् उन वेदानुयायियों को आश्चर्य का कारण होगी जो बौद्धधर्म को वैदिकधर्म का विरोधी मानते हैं। यह निश्चित है कि बुद्धदेव ने कभी नवीनधर्म की स्थापना का विचार तक नहीं किया। श्रीयुत रमेशचन्द्रदत्त जो महात्मा बुद्ध की प्रशंसा करने में किसी से कम नहीं हैं स्वीकार करते हैं कि बुद्ध भगवान् ने कोई नवीन आविष्कार या नई ज्ञानोपलब्धि नहीं की थी'। वे फिर लिखते हैं कि "यह कल्पना करना एक ऐतिहासिक भूल होगी कि बुद्ध भगवान् ने ज्ञानबूझ कर किसी धर्म विशेष का प्रवर्तक या आचार्य बनना चाहा। इसके विरुद्ध उनका तो अन्त समय तक यह विश्वास रहा कि वे उस प्राचीन पवित्र धर्म के सुन्दर स्वरूप का प्रकाश कर रहे हैं जो हिन्दू ब्राह्मण श्रमण और अन्य लोगों में प्रचलित था, परन्तु पीछे से बिगड़ गया था। यह बात यथार्थ है कि हिन्दू धर्म में ऐसे परिव्राजक, साधु-संन्यासी उपस्थित थे जो संसार को त्याग कर और वेदोक्त यज्ञादि न करते हु केवल ध्यान में अपना समय व्यतीत करते थे। हिन्दू-धर्मशास्त्रों में ऐसे साधुओं की 'भिक्षु' संज्ञा थी और साधारणतया उन्हें 'श्रमण' कहते थे। उस काल की अनेक श्रमणशाखाओं में से गौतमबुद्ध ने केवल एक श्रमणशाखा की स्थापना की थी, जो औरों से पहचान के लिए "शाक्यपुत्रीय श्रमण" के नाम से पुकारी जाती थी। बुद्ध ने उनको संसारत्याग, विशुद्धजीवन, पवित्र धार्मिक विचार आदि उन्हीं बातों की शिक्षा दी जिनका उस समय के समस्त श्रमण लोग उपदेश और अनुष्ठान करते थे[1]।"

२. बौद्ध धर्म के एक पृथक् धर्म बन जाने का कारण-

अब यह प्रश्न हो सकता है कि महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं ने नवीन अथवा पृथक् धर्म का रूप क्यों धारण कर लिया ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें उस समय के वैदिक धर्म की अवस्था जानने की आवश्यकता है जब बुद्ध भगवान् विद्यमान थे और अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते थे।

बुद्ध के प्रादुर्भाव से कुछ पूर्व वैदिक धर्म के इतिहास में घोर अन्धकार का समय था। वेद और उपनिषदों का पवित्र और प्रशस्तधर्म अवनत होकर निरर्थक कृत्य और हिंसापूर्ण "यज्ञादि" का स्वरूप ग्रहण कर चुका था। वैदिक वर्ण-व्यवस्था (जो आरम्भ में गुण कर्मानुसार थी) बिगड़ कर वंश परम्परागत जातिभेद में परिवर्तित हो गई थी। इसका यह परिणाम हुआ कि ब्राह्मण लोगों ने केवल 'जन्म से' अपने को बड़ा मान कर वेदाध्ययन तथा उन सद्गुणों को त्याग दिया जिनके कारण उनके पूर्वजों की समुचित प्रतिष्ठा की जाती थी। यह सदाचारिक और धार्मिक अधःपतन केवल ब्राह्मणों तक ही परिमित न रह सका। संन्यासी लोग भी धार्मिक ज्ञन, आन्तरिक पवित्रता, मधुर शीलता आदि बातें छोड़ कर तपस्या का केवल बाहरी आडम्बर दिखलाने को रखते थे। साधारण लोग भी वैसे सीधे, सच्चे, पवित्र और सद्गुण सम्पन्न न रहे जैसे कि वैदिक काल में थे। वे लकीर के फकीर और विलास प्रियता के चेले बन गये। प्राचीन आर्यों के सात्त्विक भोजन का स्थान आमिषाहार ने छीन लिया। उसे शास्त्रोक्त सिद्ध करने के अभिप्राय से यज्ञों में पशुओं का वध किया जाता था और उनके माँस से आहुति दी जाती थी।

बुद्ध के प्रादुर्भाव के समय वैदिक धर्म या यों कहिये कि आर्यों की सामाजिक स्थिति इस प्रकार की हो गई थी। बुद्धदेव के हृदय पर पशु बलिदान और जातिभेद-इन दो बुराइयों का बड़ा प्रभाव पड़ा। उनका कोमल और प्रेमपूर्ण हृदय धर्म के नाम पर इतने निरपराध पशुओं के रक्तप्रवाह को न सह सका। उनकी पवित्र आत्मा इस निकृष्ट और अन्यायपूर्ण जाति-भेद के विरुद्ध संग्राम करने को उद्यत हो गयी। और इसमें उन्होंने मनुष्यमात्र के लिए सच्चा प्रेमी और उनके आधार के लिए विशेष उत्साह दिखलाया। वस्तुतः यह बुराई इतनी अधिक हो गई थी कि बुद्ध भगवान् के पूर्ववर्त्ती अनेक ग्रन्थकारों ने भी उसे बुरा कहा था। सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सब बातों में इस जातिभेद की व्यापकता हो गई थी। यहाँ तक कि देश के कानून पर भी प्रभाव पड़ चुका था। उस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के लिए पृथक्-पृथक् कानून बन गये थे। ब्राह्मणों के ऊपर अनुचित दया और शूद्रों के साथ अनुचित कठोरता का व्यवहार किया जाता था, ये बातें बहुत दिनों तक नहीं ठहर सकती थीं। शूद्र कितने ही धार्मिक और गुणवान् क्यों न हों, परन्तु न तो उन्हें धार्मिक शिक्षा देने का ही कहीं प्रबन्ध था और न उनकी समाज में ही कुछ प्रतिष्ठा थी। वे लोग इन बेड़ियों को तोड़ फेंकने के अवसर की ताक में बैठे थे। वे उस निर्दयी प्रथा के फन्दे में फँसे हुए थे जिसने उन्हें उच्च सोसाइटी के संसर्ग से बुरी तरह बहिष्कृत कर रक्खा था, उनकी लालसा थी कि इस स्थिति में परिवर्तन हो। द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में भी ऐसे अनेक उच्चाशय उदार प्रकृति पुरुष थे जो उनकी इस लालसा से सहानुभूति रखते थे। अतएव 'क्रान्ति' का समय आ गया था। और इस विचार के लिए

1. Ancient India, vol. 11, p.181-182, 206.

असाधारण दूरदर्शिता की आवश्यकता न थी कि समय आएगा जब लोग इस हानिकर प्रथा के विरुद्ध युद्ध मचाकर अपनी बेड़ियों को तोड़ डालेंगे । वह अवसर आ गया । राजकुलोत्पन्न एक क्षत्रिय ने घोषणा की, कि समाज में मनुष्य की स्थिति जन्म से नहीं प्रत्युत गुणों से होती है । असंख्य मनुष्य उसके चारों ओर एकत्रित हो गये । ऐसी दशा में हम सहज ही इस बात का अनुमान कर सकते हैं कि अत्याचार के भार से दबे हुए शूद्र लोग किस उत्साह से उनकी बातें सुनते होंगे । बहुत से द्विजन्मे आर्य लोग भी उनके पवित्र धार्मिक उद्देश्य से सहमत हो गये और बौद्धधर्म देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया ।

महात्मा बुद्ध की सफलता तथा बिना इच्छा के भी उनके एक नवीन धर्म का प्रवर्त्तक बन जाने का ठीक कारण ऊपर कहा गया है । समाज-संशोधक अन्य महापुरुषों के समान बुद्ध भी बहुत अंश तक अपने समय के सुधारक थे । अविवेक-पूर्ण और निर्दय पशुवध तथा कृत्रिम और अपवित्र जातिभेद का साहसपूर्ण खण्डन करने में बुद्धदेव ने ऐसे तार को खींचा जिससे उनके समकालीनों के हृदय उनकी ओर आकर्षित हो गये । यदि उनका जन्म ऐसे समय में हुआ होता जब वे बुराइयाँ न होतीं तो उनका बहुत ही कम प्रभाव पड़ता और सच तो यह है कि उन्हें अपने सुधार सम्बन्धी कामों के लिए अवसर ही न मिलता, परन्तु जिन दिनों उनका जन्म हुआ उन दिनों उन्होंने सहज में बहुसंख्यक लोगों को अपनी ओर खींच लिया और इस प्रकार धीरे-धीरे वे एक नवीन धर्म के संस्थापक समझे जाने लगे ।

३. बौद्धधर्म का विनाशक अथवा निषेधात्मक अंग-

महात्मा बुद्ध की शिक्षा के निषेधात्मक भाग के सम्बन्ध में केवल इतना ही कहने की आवश्यकता है । उन्होंने विशेषतः दो अत्याचारों पर प्रबल रूप से आक्रमण किया । दत्त महाशय लिखते हैं कि- ''गौतम अविचारपूर्वक खण्डन करनेवाले न थे और न सब प्राचीन प्रचलित प्रथाओं के अचेत और कट्टर विरोधी ही थे । उन्होंने उस समय तक किसी प्रथा या विश्वास के विरुद्ध हाथ नहीं उठाया जब तक कि उसको अनुपयोगी अथवा प्राचीन धर्म में पीछे का मिलाव न समझ लिया हो । उन्होंने जातिपांति का विरोध इस कारण किया कि वे उसको हानिकारक और प्राचीन **ब्राह्मण धर्म के पश्चात् का बिगड़ा हुआ रूपान्तरण समझते थे ।** उन्होंने वैदिक (यज्ञादि) कृत्यों की निरर्थकता इसलिए प्रकट की कि उस समय **उनकी विधि** बहुत ही मूर्खतापूर्ण, निरर्थक, निकृष्ट रूप में थी और उनमें अनावश्यक निर्दयतापूर्वक पशुओं के प्राणहरण किये जाते थे ।

यह प्रश्न हो सकता है कि क्या महात्मा बुद्ध ईश्वर का अस्तित्व अथवा वेदों को ईश्वरीय ज्ञान या प्रामाणिक पुस्तक मानते थे ? ईश्वर-विश्वास के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि वे नास्तिक नहीं थे, शायद अज्ञेयवादी Agnostic थे । ईश्वर या ईश्वरीय ज्ञान का न मानना बौद्धधर्म का कोई आवश्यक सिद्धान्त नहीं है । ऐसा ज्ञात होता है कि उन्होंने आत्मसुधार और आत्मसंयम आदि के उपदेश करने पर ही सन्तोष किया और सृष्टि-सम्बन्धी ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर सोचने की चेष्टा ही नहीं की कि ''क्या यह संसार अनादि और अनन्त है ? यदि नहीं तो उसकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई ?'' कदाचित् उनका यह विचार हो कि इन प्रश्नो के उत्तर कदापि सन्तोषजनक नहीं मिल सकते । उनके शिष्यों ने इस विषय में जानने के लिए अनेक बार उनसे आग्रहपूर्वक[२] जिज्ञासा की, परन्तु उन्होंने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया ।

निश्चय ही बौद्ध ग्रन्थों में अनेक स्थल[३] हैं जिनसे प्रकट होता है कि उन्होंने अपने शिष्यों को इस प्रकार की जिज्ञासा और शास्त्रार्थ करने के लिए समय ही नहीं दिया ।

सब्बासवसुत्त-में ऐसे विषयों पर विवाह करनेवाले का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

''वह मूर्खता से ऐसे विचार करता है कि भूत कालों में था या नहीं ? मैं भूतकाल में क्या था ? मैं भविष्यकाल में रहूँगा या नहीं ? भविष्यत्काल में मेरा क्या स्वरूप होगा ? या वर्त्तमान के लिए भी अपने मन में ऐसे विचार करता है मेरा अस्तित्व वास्तव में है या नहीं ? मैं क्या हूँ ? यदि मेरा अस्तित्व है तो कहाँ से आया और कहाँ जाएगा ?''[१]

उनके विचार में भलाई करना ही धर्म था या यों कहिये कि उन्होंने धर्म के कर्मकाण्ड सम्बन्धी भाग की ओर ही दृष्टि रक्खी और ज्ञानकाण्ड तथा आध्यात्मिक भाग की ओर से सर्वदा उदासीन रहे । प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में यह बड़ी भारी निर्बलता थी । इस प्रकार के प्रश्न उठते ही हैं और उनके उत्तर किसी न किसी रूप में देने ही चाहिये । जो धर्म इन बातों को टालना चाहता वा उनकी उपेक्षा करता है वह मनुष्य के आत्मा की भूख को नहीं बुझा सकता, परन्तु पिछले समय के बौद्धों ने इस त्रुटि की यह कह कर पूर्ति कर दी कि संसार जैसा कि अब है वैसा ही अनादि काल से चला आता है, अतएव इसके लिए रचनेवाले की आवश्यकता नहीं । इस प्रकार उन्होंने अपने धर्म को विशुद्ध नास्तिक बना दिया, परन्तु महात्मा बुद्ध का यह मन्तव्य न था, वे न तो संसार को नित्य ही कहते थे और न अनादि । यद्यपि बौद्धधर्म प्रारम्भ में अज्ञेयवादी था, परन्तु अन्य अज्ञेयवादी मतों सदृश यह अन्त में नास्तिकमत हो गया । जैसा कि पूर्व कह चुके हैं कि उनकी सदाचारिक शिक्षा कैसी ही उत्तम क्यों न हो, परन्तु धर्म की दृष्टि से वह एक बहुत बड़ा दूषण था । इस दोष के कारण ही अन्ततः भारतवर्ष में उसके भाग्य का अन्त हो गया । बौद्धधर्म प्रारम्भ में अत्याचारपूर्ण जाति-भेद और निर्दय पशुवध के विपरीत पवित्र विरोध करने तथा सदाचार और भलाई का सर्वसाधारण को उपदेश देने के कारण ही इस देश में फैल गया था, परन्तु नास्तिक मत बन जाने के कारण वह इस देश से बहिर्गत कर दिया गया ।

ईश्वर की सत्ता और वेदों के ईश्वरकृत होने के विषय पर महात्मा बुद्ध के विचार **तेविज्जसुत्त** से जाने जाते हैं, जिसके सम्बन्ध

1. Ancient India, vol. II.

२. उदाहरणार्थ-एक समय मलयूक्य पुत्त नामक किसी व्यक्ति ने महात्मा गौतम से यह प्रश्न किया, परन्तु उन्होंने उत्तर दिया कि 'हे मलयुक्य पुत्त ! तुम आओ और मेरे शिष्य बन जाओ, मैं तुमको इस बात की शिक्षा दूँगा कि संसार नित्य है या नहीं ।'' मलयूक्य पुत्त ने कहा 'महाराज आपने ऐसा नहीं कहा ।' बुद्ध जी बोले-'तो फिर इस प्रश्न को पूछने में आग्रह मत करो ।' (देखो मज्झम निकाय कुल मलूक्यवाद) Quoted in Ancient India, vol.II, 239

१. देखो सुत्त निपात, पशु सुत्त और सुत्त, निपात, माह मोह सुत्त ।

में महाशय राईस डैविड्स (Rhys Davids) अपने अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका में इस प्रकार लिखते हैं- ''इस सुत्त का नाम **तेविज्ज सुत्त** केवल इसलिए है कि इसमें गौतम का वर्णन **तेविज्ज** उपनाम से किया गया है । **तेविज्ज** का अर्थ है वेदों का ज्ञाता और यह पाली शब्द **त्रैविद्य** या **त्रयोविज्ञ** शब्द का अपभ्रंश है ।

इस सुत्त का आरम्भ दो ब्राह्मण युवक वसिष्ठ और भारद्वाज के विवाद से होता है। विषय यह है कि ब्रह्म-प्राप्ति का सच्चा मार्ग क्या है ? वे दोनों गौतम बुद्ध के पास जाते हैं, जो ये बतलाते हैं कि यदि कई ब्राह्मण वेदों को अच्छी तरह पढ़ा हो, परन्तु सदाचारी न हो तो वह ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सकता। इस सुत्त के कुछ वचन नीचे दिये जाते हैं-

२५-हे वशिष्ठ ! इस प्रकार वे ब्राह्मण जो तीनों वेदों को पढ़कर भी उन गुणों का तिरस्कार करते हैं जिनसे मनुष्य ब्राह्मण बनता है और वे ऐसा पाठ करते हैं-'हम इन्द्र को पुकारते हैं, सोम को पुकारते हैं, वरुण को पुकारते हैं, ईशान को पुकारते हैं, प्रजापति को पुकारते हैं, ब्रह्मा को पुकारते हैं, महिद्धि को पुकारते हैं, यम को पुकारते हैं' । वसिष्ठ ! ये कभी सम्भव नहीं कि वे ब्राह्मण जो वेद पढ़े हुए हैं, परन्तु उन गुणों का तिरस्कार करते हैं जिनसे मनुष्य वास्तव में ब्राह्मण बनता है और उन गुणों को धारण करते हैं जिनसे मनुष्य अब्राह्मण बनता व केवल स्तुति और प्रार्थना के कारण मृत्यु के पश्चात् जब शरीर छूट जाता है ब्रह्म को प्राप्त हो सके ।

२७-हे वसिष्ठ ! इसी प्रकार पाँच पदार्थ काम की ओर ले जानेवाले हैं जो 'आर्य्य संयम' में बन्धन कहलाते हैं ।

प्रश्न-वे पाँच पदार्थ क्या हैं ?

उत्तर-रूप जो आँख को प्रिय, रोचक और आनन्ददायक होते हैं, परन्तु काम और मद को उत्पन्न करते हैं, इसी प्रकार के शब्द जो कान से सुने जाते हैं, इसी प्रकार की गन्ध जिनको नासिका ग्रहण करती है, इसी प्रकार के रस जिनको जिह्वा ग्रहण करती है, इसी प्रकार के अन्य पदार्थ जिनका शरीर को स्पर्श से अनुभव होता है । इन पाँचों पदार्थों से काम की उत्पत्ति होती है और ये आर्य्य संयम में बन्धन कहलाते हैं । और हे वसिष्ठ ! वे ब्राह्मण जो वेद पढ़े हैं, परन्तु इन पाँचों पदार्थों के दास हैं जिनसे काम उत्पन्न होता है वे इनमें उन्मत्त हो जाते हैं, पतित हो जाते हैं और यह नहीं समझते कि वे कैसे भयङ्कर पदार्थ हैं और उनमें आनन्द मानते हैं ।

२८-''हे वसिष्ठ ! यह सम्भव नहीं कि वे ब्राह्मण जो वेद पढ़े हैं, परन्तु उन गुणों का तिरस्कार करते हैं जिनसे मनुष्य वास्तव में ब्राह्मण बनता है और उन गुणों को धारण कते हैं जिनसे मनुष्य वास्तव में अब्राह्मण बनता है औ इन पाँच पदार्थों के दास हैं जिनसे काम उत्पन्न होता है, उनमें उन्मत्त होते हैं, पतित होते हैं और उनके भयङ्कर स्वरूप को न समझते हुए उनमें आनन्द मानते हैं । ये ब्राह्मण मरने के पीछे शरीर छूटने पर ब्रह्म को प्राप्त कर सकें यह सम्भव नहीं ।''

इसके आगे महात्मा बुद्ध, वसिष्ठ के ब्रह्म के गुणों के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न करके ऊपर कहे हुए नामधारी ब्राह्मणों के गुणों से अन्तर दिखलाते हैं और इस प्रकार उपदेश कते हैं -

३७-''अच्छा वसिष्ठ ! तुम यह मानते हो कि ऐसे ब्राह्मण जिनके हृदय क्रोध और द्वेष से रहित और संयमस्वरूप औ पाप रहित हैं तो फिर क्या ऐसे ब्राह्मणों में और ब्रह्म में कोई समानता वा स्वरूपता नहीं हो सकती है ?''

हे गौतम ! नहीं हो सकती है ।

३८-''अच्छा वसिष्ठ ! यह सम्भव नहीं कि ये ब्राह्मण वेद पढ़े होने पर भी अपने हृदय में क्रोध और द्वेष धारण किये हैं, जो पापी और असंयमी हैं, मरने के पीछे शरीर को छोड़ने पर उस ब्रह्म को प्राप्त कर सकें जो क्रोध और द्वेष रहित, पाप रहित संयम स्वरूप है[1]।''

इसके पश्चात् एक सच्चे भिक्षु के जीवन का वर्णन करके महात्मा बुद्ध इस प्रकार उपदेश करते हैं-

३९-अच्छा वसिष्ठ ! तुम मानते हो कि यह भिक्षु क्रोध और द्वेष से रहित है, शुद्ध चित्तवाला और संयमी है और ब्रह्म भी क्रोध और द्वेष से रहित, शुद्धस्वरूप और संयमस्वरूप है तो हे वसिष्ठ ! यह हर प्रकार सम्भव है कि वह भिक्षु जो क्रोध और द्वेष से रहित है शुद्ध चित्तवाला और संयमी है, मरने के पीछे शरीर छोड़ने पर ब्रह्म को प्राप्त कर सके जिसका वैसा ही स्वरूप है।''

य स्पष्ट है कि इस सुत्त[2] में महात्मा बुद्ध ने वेदों की न्दिा नहीं की, किन्तु अपने समय के उन ब्राह्मणों के गुणों से रहित थे । महाशय राईस डैविड ने उनकी तुलना बाइबिल फ़ारसियों और लेखकों Phorisees and Scribes से की है ।

यदि महात्मा बुद्ध ईश्वर के विषय में सन्दिग्ध थे तो ईश्वरीय ज्ञान पर भी विश्वास न कर सकते थे । वेदों से उनका विरोध भी नहीं था, किन्तु उदासीनता थी । इस उदासीनता का कुछ तो यह कारण था कि वेद से अनभिज्ञ थे और कुछ उस समय का यह विश्वास कि वेद पशुवध और जातिभेद की आज्ञा देते हैं । यदि वे वेदवेत्ता होते, यदि उन्होंने प्रेमभाव और समानता के उपदेशों का वेदों के विशुद्ध अर्थों की प्रामाणिकता के आधार पर प्रचार किया होता तो वे नये धर्म के संचालक न होकर हमारे ही समय के स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे वैदिक सुधारक बन जाते । यदि उस समय के लोग कुछ कम संकुचित विचारों के होते, वेद की वास्तविक शिक्षा का अधिक ज्ञान रखते तथा दूसरे को ग्रहण करने की अपेक्षा अपने ही धर्म का संशोधन करते तो प्राचीन धर्म के होते हुए देश में नवीनमत स्थापित होने की दुर्घटना न हो पाती और इस प्रकार भारतवर्ष में फूट न फैलती जिसके कारण चिरकाल तक दोनों मतों के अनुयायियों में मध्य भीषण युद्ध की अग्नि जलती रही ।

४. बौद्ध धर्म का विधायक अथवा विद्यात्मक अंग-

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं के विधायक-भाग के सम्बन्ध में हमें अधिक कुछ नहीं कहना । उन्होंने वैदिक धर्म-विहित बातों का उपदेश किया अर्थात् आत्मसुधार, आत्म संयम, मनुष्य जाति और प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव, शुभ कर्म और आन्तरिक पवित्रता का प्रचार किया । बुद्ध ने जिन चार प्रधान बातों का उपदेश दिया वे निम्नलिखित हैं-

१-जीवन दुःखमय है, २-दुःख का कारण इच्छा वा तृष्णा है । ३-तृष्णा के नाश से दुःख

१. देखो 'बौद्ध सुत्त' Budhist Suttas (Sacred Books of the East Series पृ. १८०-१८५) Ancient India, vol. II.

२. देखो ''बौद्ध सुत्त'' पृष्ठ ३०२

की निवृत्ति है । ४-तृष्णा के नाश के नीचे लिखे आठ प्रकार के मार्ग हैं -

१. सत्य विश्वास
२. सत्य कामना
३. सत्य भाषण
४. सत्याचरण
५. सत्य जीविका साधन
६. सदुद्योग
७. सत्य संकल्प और
८. सत्ये विचार[1]

हमें यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उपर्युक्त बातों का वैदिक धर्म और दर्शनशास्त्र सम्बन्धी विविध पुस्तकों में अनेक बार वर्णन आया है । उदाहरणार्थ हम न्यायदर्शन का दूसरा सूत्र उद्धृत करते हैं-

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरा-पायादपवर्गः । -न्याय १।१।३

दुःख, जन्म, प्रवृत्ति, दोष और मिथ्या ज्ञान इनमें से एक के नाश से उससे पूर्व पूर्व वर्णित नष्ट हो जाता है और दुःख का निवारण ही मुक्ति है ।

इसका भावार्थ यह है कि मिथ्या ज्ञान से दोष वा बुरी इच्छाएँ होती हैं, उसमें जन्म की प्रवृत्ति होती है और जन्म ग्रहण करना पड़ता है और यह जन्म ही दुःखों की जड़ है । इसी क्रम से एक की निवृत्ति होने से दूसरे की निवृत्ति होती चली जाती है । अर्थात् जन्म व जीवन के साथ दुःख का सम्बन्ध अवश्य है । (बुद्ध का प्रथम उपदेश) दुःख और जन्म का कारण जीवन की इच्छा या तृष्णा है । (दूसरा उपदेश) इच्छा और जन्म-प्रवृत्ति नष्ट होने पर दुःख की निवृत्ति हो जाती है । (तीसरा उपदेश) इच्छा और जन्म-प्रवृत्ति का नाश सत्यज्ञान द्वारा होता है । (चौथे उपदेश का भाग)

निम्नलिखित पाँच आज्ञाओं का पालन करना समस्त बौद्धों का, चाहे भिक्षु हों वा गृहस्थ, परम कर्त्तव्य है-

१-किसी प्राणी की हिंसा न करे ।

२-उस वस्तु को ग्रहण न करे जो उसे नहीं दी गयी ।

३-मिथ्या भाषण न करे ।

४-मादक द्रव्यों का सेवन न करे ।

५-व्यभिचार न करे ।

दत्त महाशय लिखते हैं कि 'ये निस्सन्देह वसिष्ठ के के पञ्च महापातकों से सूझी है'[1]।

परन्तु हम इन पाँचों का सम्बन्ध महर्षि पतञ्जलि रचित योगसूत्र के पाँच यमों से समझते हैं-

'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।
-योग अ० १।पा० २।सू०३०।।

जीवों की हिंसा न करना, असत्य भाषण न करना, चोरी न करना, व्यभिचार न करना, विषय-भोग अथवा इन्द्रिय-लोलुपता में अधिक न फंसना, ये पाँच यम हैं ।

बौद्ध धर्म जिसका बुद्ध ने प्रचार किया केवल सदाचार का उपदेश है अन्य कुछ नहीं । बौद्ध धर्म के सदाचारिक उपदेशों का पता वैदिक धर्म की पुस्तकों से सहज ही में लगाया जा सकता है । दत्त महाशय लिखते हैं कि बौद्ध धर्म ने यह पवित्र पैतृक सम्पत्ति प्राचीन हिन्दुओं से प्राप्त की और अपने पवित्र साहित्य में सुरक्षित कर ली । महात्मा गौतम द्वारा निर्धारित धर्मों में वे समस्त बातें पाई जाती हैं जो धर्म सूत्रों में सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम हैं ।[1]

प्रोफेसर मैक्समूलर महात्मा बुद्ध के सम्बन्ध में लिखते हैं-"ब्राह्मणों की ओर से उनके विरोध की बहुत कुछ अतयुक्ति की गई है और अब हम इस बात को जान गये हैं कि गौतम बुद्ध के बहुत से उपदेश वास्तव में उपनिषदों के ही उपदेश थे[2] ।"

हमने यह सिद्ध किया कि महात्मा बुद्ध ने किसी **नवीन धर्म** या **नवीन ज्ञान** का प्रचार नहीं किया । उन्होंने कुछेक उन दूषणों का खण्डन किया जो सत्य वैदिक धर्म के अंग नहीं थे पर जो पीछे से उसमें मिल गये थे । अन्य बातों में उन्होंने वैदिक धर्म के उपदेशों का प्रचार किया । अतएव बौद्ध धर्म हमारा जिससे अभिप्राय है वह गौतम की उत्कृष्ट शिक्षा है, जो वैदिक धर्म पर अवलम्बित है ।

-पं० गंगाप्रसाद चीफ जस्टिस

१. गुरु वसिष्ठ जी के बताये पाँच महापातक ये हैं- गुरु-पुत्रों से व्यभिचार, मादक द्रव्यों का पान, हत्या करना, चोरी करना, पतित लोगों से आत्मिक वा वैवाहिक सम्बन्ध रखना ।" (१ । १९ से २९ तक Quoted in Ancient India, vol. 11, p. 103

1. Ancient India, vol. 11, page 268.
2. देखो मैक्समूलर कृत Three Lectures on Vedanta Philosophy, page 113

...पृ.९ का शेष

और जाति को कमजोर कर दिया । इसी प्रकार जब मुसलमानों ने मूर्तिपूजा का विरोध किया तो मस्जिदों से मूर्तियां निकाल दी गयीं परन्तु जैसे मूर्तिपूजक मूर्तियों के समक्ष साष्टांग दण्डवत किया करते थे उसी प्रकार मुसलमानों का सिजदा जारी रहा । जैसे हिन्दू लोग काली माई के समक्ष बकरा चढ़ाते हैं उसी प्रकार मुसलमान लोग भी बकरी, गाय या ऊँटनी की कुर्बानी करते हैं कि जन्नत (स्वर्ग) में बैठा हुआ ईश्वर प्रसन्न होगा अन्यथा कुर्बानी का कोई अर्थ नहीं । जब एक हिन्दू काली माई पर बकरा चढ़ाता है तो वह एक ऐसी निर्दयी स्त्री की याद करता है जो पशुओं को मार कर खाती होगी । परन्तु मुसलमानों के अल्लाह के लिए तो वह ऐसा नहीं मानते कि अल्लाह पहले कभी पशुओं को मार कर खाया करता था । वस्तुतः एकांगी सुधार वास्तविक सुधार नहीं । इस प्रकार के आध्यात्मिक रोग उस समय तक दूर न होंगे जब तक वेदों का प्रचार न हो, धर्म का मौलिक सुधार न किया जाय । आर्य समाज का यह मुख्य उद्देश्य है । जैसे सूर्योदय होने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के दीपकों के झगड़े मिट जाते हैं इसी प्रकार जब वेदों का प्रचार हो जाएगा तो आधुनिक धर्म शास्त्रों के परस्पर झगड़े भी मिट जायेंगे । राती की अंधेरी में दीपों के होते हुए भी वस्तुओं की आकृति में कुछ थोड़ा सा भेद प्रतीत हुआ करता है । सूर्य के प्रकाश में वह भ्रान्ति दूर हो जाती है । धार्मिक पुस्तकों पर आजकल लोगों का अवलम्बन है जैसे मुसलमान का कुरआन, ईसाइयों का बाईबिल, यह सब पुस्तकें इनके लिखने वालों ने अपने समय की कुछ विपत्तियों को दृष्टि में रखकर लिखी थीं । जिनमें उन-उन देशो या उन-उन समयों की दुर्घटनाओं की और संकेत था । अतः उनका क्षेत्र भी संकुचित था । वह हर समय अथवा हर युग के उपयुक्त न थी । वेदों में जिस धर्म का प्रतिपादन है वह सभी देशों और सभी कालों में सत्य ठहरता है इसी को सत्य या सनातन कहते हैं । हर देश और हर समय के लोग इस का अनुसरण कर सकते हैं । इसीलिए आर्यसमाज वेदों के पठन, पाठन और श्रवण, श्रावण को हर एक का कर्त्तव्य बताता है ।

आर्य समाज की उन्नति : कुछ सुझाव

- स्व० आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

आर्य समाजों की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नहीं है । आर्य समाज की वास्तविक उन्नति के लिए दशसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत करने से पूर्व मैं आर्यजनता का ध्यान अमर धर्मवीर स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज के निम्नलिखित महत्वपूर्ण सन्देश की ओर आकृष्ट करना अपना कर्तव्य समझता हूं जो उन्होंने मेरी प्रार्थना पर २१-५-१९२४ को मेरे द्वारा भेजा था । उस सन्देश में श्रद्धेय स्वामी जी ने आर्यों को सम्बोधित करते हुए लिखा था :-

"तुम यह मत भूलो कि वैदिक धर्म कोई सम्प्रदाय वा पन्थ नहीं है । यह वह सत्य सनातन धर्म है जिसके बिना संसार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भी नहीं रह सकती । प्राचीन काल में असंख्यात आध्यात्मिक कोषों को खोलने वाली चाबी तुम्हारे हाथों में दी गयी थी । **और अब अशान्त संसार को शान्ति देना तुम्हारा ही काम है ।** आज गम्भीर भाव से प्रतिज्ञा करो कि (क) तुम दैनिक पंच महायज्ञों के अनुष्ठान में प्रमाद न करोगे (ख) **तुम अस्वाभाविक जातिभेद के बन्धन को तोड़ कर वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन में परिणत करो** (ग) तुम अस्पृश्यता के कलंक का समूल नाश कर दोगे और तुम आर्य समाज के मन्दिर का द्वार, मत, सम्प्रदाय, **जाति** और रंग आदि के भेदभाव का कुछ भी विचार न करके मनुष्यमात्र के लिए खोल दोगे । परम पुरुष परमात्मा इस गम्भीर प्रतिज्ञा के पालन में तुम्हारे सहायक हों ।"

मैं इस सन्देश को आर्यसमाज की वास्तविक उन्नति का मूल मन्त्र समझता हूं । इसे तथा आर्य समाज की वर्तमान असन्तोषजनक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित कार्यक्रम उसको उन्नत करने के लिए प्रस्तुत करता हूं :-

(१) आर्यों को अपना वैयक्तिक जीवन वैदिक आदर्शों के अनुकूल सर्वथा, सत्यमय और प्रेममय बनाने का अधिकतम प्रयत्न करना चाहिए जिससे वे अपने पवित्र जीवन द्वारा अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को भी पवित्र और उन्नत कर सकें । उन्हें अपने जीवन द्वारा अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को भी पवित्र और उन्नत कर सकें । उन्हें अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए प्रतिदिन दोनों समय सन्ध्योपासना, कम से कम एक समय सपरिवार हवन तथा वेदों का स्वाध्याय श्रद्धापूर्वक अवश्य ही करना चाहिये ।

आर्यों के जीवन में तर्क के साथ श्रद्धा का पूर्ण समन्वय होना चाहिये जिसकी न्यूनता देखने में आती है ।

(२) पारिवारिक जीवन को आर्य बनाना अत्यावश्यक है क्योंकि महिलाओं के हार्दिक सहयोग के बिना वैदिक धर्म का प्रचार और आर्यसमाज की उन्नति सर्वथा असम्भव है । यज्ञों और संस्कारों के द्वारा जब वे श्रद्धापूर्वक और आवश्यक व्याख्या सहित किये जायें, वैदिक धर्म के प्रचार में अत्यधिक सहायता मिलती है । क्योंकि उनमें सर्वसाधारण आस्तिक जनता की श्रद्धा अधिक बनी हुई है ।

पारिवारिक सत्संगों का आयोजन और आर्यसमाज के सत्संगों के अतिरिक्त जिनमें आर्य सदस्यों को सपरिवार जाने का ही यथासम्भव प्रयत्न करना चाहिये, आर्य महिला समाजों के द्वारा महिलाओं में विशेष प्रचार जो संगीत रोचक कथादि द्वारा उत्तमतया हो सकता है, इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होंगे । संस्कार शुद्ध रीति से श्रद्धापूर्वक किये जाने चाहियें जिनमें अवैदिक प्रथाओं का समावेश न हो ।

(३) कुमार-कुमारियों और युवक-युवतियों में उत्तम प्रचार के बिना आर्य समाज का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता । इसके लिए आर्यकुमार सभाओं अथवा आर्य युवक सभाओं को आर्यसमाजों की ओर से प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये । और उन सभाओं को भी आर्य समाज के कार्य में पूर्ण हार्दिक सहयोग देना चाहिये ।

आर्य कुमारी सभाओं और आर्य महिला सभाओं की स्थापना भी महिलाओं में विदुषी देवियों द्वारा प्रचार के लिए उपयोगी है इन सब को आर्य समाज के साप्ताहिक तथा अन्य सत्संगों और विशेष समारोहों में भी आने की प्रेरणा करनी चाहिये । आज, कल के युवक-युवतियों में **विलासिता, मद्य, मांस, धूम्रपान आदि की प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं ।** आर्यकुमार और युवक समाजों द्वारा इन निन्दनीय प्रवृत्तियों को रोकने का विशेष यत्न करना चाहिए । इसी प्रकार आर्य वीर दल को भी अधिक शक्तिशाली और उपयोगी बनाने की आवश्यकता है । आर्यसमाजों और आर्य कुमार सभाओं का सम्बन्ध पिता पुत्र का सम्बन्ध होना चाहिये--न कि प्रतिद्वन्द्वियों का जैसा कि दुर्भाग्यवश कई स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है ।

(४) आर्यों के सामाजिक जीवन को भी वैदिक आदर्शानुकूल बनाना आर्य समाज की उन्नति के लिए नितान्त आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है । आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों के अन्त में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करने की (जिसे संगठन सूक्त के नाम से पुकारा जाता है) पद्धति प्रचलित है । जिसमें

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांस जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।
सामानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।

इत्यादि मन्त्रों द्वारा मिलकर प्रेम से बोलने, चलने, समान व्यवहार करने तथा मनों और हृदयों को मिलाकर पूर्ण सहयोग से कार्य करने का आदेश है । किन्तु इस पर आर्य लोग कहां तक व्यवहार करते हैं यह आर्यसमाज की आन्तरिक अवस्था जानने वाले सब जानते हैं जैसे कि पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती ने लिखा कि "शायद ही कोई भाग्यशाली आर्यसमाज होगा जिसमें दो पार्टियां न हों ।" आर्य समाज ही नहीं आर्य प्रतिनिधि सभाओं तक के दो बराबर विरोधी संगठन कई प्रांतों में बन गये हैं । **एक बड़ी सफलता यह होगी कि जहाँ आर्य सभाओं का आर्य प्रतिनिधि सभाओं से परस्पर विरोध है उनका निर्णय सरकारी न्यायालयों द्वारा नहीं अपितु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं द्वारा निर्धारित न्यायार्य सभा द्वारा कराया जाय ।** इस दिशा में तत्काल गम्भीर प्रयत्न किया जाना चाहिये

ताकि आर्य समाज की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखा जा सके। **जों आर्य पारस्परिक विवाद के निपटाने के लिए अदालत की शरण में जावें उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाय और उसे आर्य समाज की सदस्यता से भी पृथक् कर दिया जाय।** जहां न्यायार्य सभायें न हों--आर्यसमाज में इस समय बड़े-बड़े न्यायाधीश वीतराग सन्यासी तथा परमविद्वान तपस्वी वानप्रस्थ विद्वान् विद्यामान हैं उनके द्वारा इन विवादों का निपटारा कराया जाना चाहिए। आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी उन्हीं सुयोग्य पूर्ण सदाचारी सन्ध्या हवन स्वाध्यायादि का श्रद्धापूर्वक सपरिवार आचरण करने वाले व्यक्तियों को बनाया जाय जो अपना अधिक से अधिक समय सामाजिक कार्यों के लिये दे सकें।

(५) वैदिक धर्म का प्रचार आर्यसमाज की विशेषता है अतः आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा के कार्यक्रम में उसको प्राथमिकता और मुख्यता देनी चाहिये किन्तु संस्थाओं के चक्कर में इस ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। आर्यसमाजों के विद्यालयों में भी धर्मशिक्षा का प्रायः अभाव है वा वह बिल्कुल नाममात्र है। सुयोग्य प्रचारकों द्वारा, जिनको अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखा जाना चाहिये, वैदिक धर्म के सब क्षेत्रों में व्यापक प्रचार की व्यवस्था अत्यावश्यक है। प्रचारक की उत्तरदायिता बड़ी भारी होती है क्योंकि इसे जनता का चरित्रनिर्माण करना है अतः वेदों के अच्छे मननशील विद्वान, पूर्ण सदाचारी, अनुभावी महानुभावों को ही प्रचारक पद पर नियुक्त करना चाहिये। ऐसे ही सर्व-साधारण में प्रचारार्थ वैदिक सिद्धांत और संगीत शास्त्र के ज्ञाता सज्जनों की भजनीकों के रूप में नियुक्ति करनी चाहिये। विदेशों में प्रचार की भी अत्युत्तत व्यवस्था करनी चाहिये।

(६) यथासम्भव प्रत्येक आर्य समाज में एक गम्भीर विद्वान् पूर्ण सदाचारी प्रभावशाली वैदिक धर्म के प्रचार की लगन वाले महानुभाव की पुरोहित के रूप में नियुक्ति कर के उसे मार्गदर्शक के रूप में मान देना चाहिये। पुरोहित का अर्थ ही ''पुर एनं दधति'' अर्थात् जिसको प्रत्येक कार्य में आगे रखा जाय यह है किन्तु दुर्भाग्यवश अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी पुरोहित को समाज का भृत्य वा सेवक समझते और उसे उचित मान नहीं देते। यह अनुचित बात है। पुरोहित महानुभावों को भी इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि परिवारों के सब लोग, सन्ध्या हवन, स्वाध्यायादि नियमपूर्वक करें तथा उनके बालक-बालिकाओं को धर्म की शिक्षा दी जाय। पुरोहितों का सबसे अधिक ध्यान लोगों के जीवन को सच्चा आर्य जीवन बनाने की ओर होना चाहिये जिसकी बड़ी कमी दिखाई देती है। तर्क के साथ श्रद्धा का पूरा समन्वय आर्यों में हो इसका पूरा प्रयत्न उन्हें करना चाहिये।

(७) मौखिक प्रचार की अपेक्षा भी उत्तम साहित्य निर्माण और इसके प्रकाशन की व्यवस्था प्रचार दृष्टि से अत्यावश्यक है। उच्च शिक्षित विद्वानों के लिए, युवक युवतियों के लिए, कुमार कुमारियों, बालक बालिकाओं के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के साहित्य की जो हिन्दी, संस्कृत, प्रादेशिक भाषाओं के अतिरिक्त देश-विदेश के सुशिक्षित वर्ग के लाभार्थ अंग्रेजी तथा अन्य विदेशीय भाषाओं में भी हो, बड़ी भारी आवश्यकता है। उत्कृष्ट कोटि के साहित्य के बिना स्थाई प्रचार नितान्त असम्भव है। स्थापना शताब्दी के उपलक्ष्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा वेदों के भाषा भाष्य के प्रकाश के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी वेदभाष्य को करवा कर प्रकाशन करना चाहती है और अंग्रेजी भाष्य का १०१६ पृष्ठों का प्रथम खण्ड छप भी चुका है। किन्तु जहाँ मैंने ऋग्वेद के दसों मण्डलों का अंग्रेजी भाष्य १०९१३ पृष्ठों में ३० अक्तू० १९७४ को ७ वर्षों के घोर परिश्रम के पश्चात् पूरा कर लिया है वहां खेद है कि उसके अगले ७ खण्डों और सामवेद के मेरे अंग्रेजी भाष्य के पुनर्मुद्रण की व्यवस्था अब तक आर्थिक कठिनाई के कारण नहीं हो पायी। मेरा निवेदन है कि शताब्दी के साहित्यक कार्यक्रम में इस वेद भाष्य (अ) कार्य को विदेशों में प्रचार की दृष्टि से प्राथमिकता दी जानी चाहिए और सभी धर्म प्रेमियों को इस कार्यार्थ सभा का उदार आर्थिक सहयोग देना चाहिये। अन्य उत्तम साहित्य के निर्माण और प्रकाशन की भी अति शीर्ध व्यवस्था करनी चाहिए, सत्यार्थ प्रकाश को सस्ते मूल्य पर उत्तम रूप से शुद्ध छपवा कर (भिन्न-भिन्न भाषाओं में) उसका अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिए।

(८) **स्वशुद्धि और दलितोद्धार की ओर भी प्रचारकों को और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, पर जातिभेद और अस्पृश्यता के हटाये बिना यह सम्भव नहीं कि इन आन्दोलनों को सफलता मिल सके।** अतः क्रियात्मक प्रचार की अति विशेष आवश्यकता है ताकि शुद्धिशुदा व्यक्ति यह न अनुभव करे कि उनके लिए आर्यसमाज में भी कोई स्थान नहीं। किसी प्रकार के भेद भाव के बिना उनको अपने अन्दर पूर्णतया मिला लेना चाहिए, **अन्तर्जातीय विवाहों को युवकों में अधिकाधिक प्रोत्साहित करना चाहिए।**

(९) पाखण्ड-खण्डन तथा प्रेम पूर्वक शास्त्रार्थ महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन की भी परवाह न करते हु पाखण्ड का निर्भीकता से खण्डन किया और हरिद्वार में कुम्भ के अवसर पर अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थिति में भी पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। निर्भय होकर पौराणिकों, जैनियों, ईसाईयों और मुसलमानों से शास्त्रार्थ किये। और विद्वान भी बहुत समय तक इस परम्परा का अनुसरण करते रहे, इस का परिणाम यह होता था कि लागों मे विवेक शक्ति जागृत होती थी और मतमतान्तरों के लोग भी कुछ भयभीत रहते थे, सबने अपने मन्तव्यों की तर्कसंगत व्याख्या का यत्न किया था। किन्तु अब कुछ वर्षों से राष्ट्रीय एकता वा लोकप्रियता के नाम पर यह निर्भय पाखण्ड-खण्डन की प्रवृत्ति बहुत कम हो गई है जिसका परिणाम यह हो रहा है कि राधास्वामी सम्प्रदाय, ब्रह्मकुमारी सम्प्रदाय, बालयोगेश्वर का हंस मत, आनन्द मार्ग, आचार्य रजनीश सम्प्रदाय, बाबा सत्यसांई सम्प्रदाय, निरंकारी मत आदि सम्प्रदाय बढ़ते जा रहे हैं और प्रतीत होता है कि कल्पित भगवानों की बाढ़ आ गई है। आर्य विद्वानों को अनुशीलन करके उनकी विविध हानिकारक बातों का पत्र, पत्रिका, पुस्तकादि द्वारा खण्डन करना चाहिए और उन्हें प्रेमपूर्वक शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारें। ऐसे ही ईसाई, मुसलमान, जैनादि मतों की

भी बुद्धिविरुद्ध बातों का निर्भयता से निराकरण करना चाहिए ।

(१०) मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यों में भी स्वदेश भक्ति की भावना कम हो रही है और पाश्चात्य वेशभूषा को लोग अपना रहे हैं । यज्ञों और संस्कारों में भी बहुत बार मैंने यजमानों को पाश्चात्य वेषभूषा में देखा है । घरों में भी माता पिता, चाचा चाची के स्थान पर मम्मी, डैडी या पापा, अंकल, आण्टी आदि का प्रयोग फैशन समझा जाता है, इस अराष्ट्रीय प्रवृत्ति और विशेष कार्य करने और सच्ची देश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने की आवश्यकता है । संस्कृतनिष्ठ हिन्दी सचमुच राष्ट्रभाषा और संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में सर्वत्र पढ़ाया जाय और प्रोत्साहित किया जाय इसके लिए भी आर्यप्रचारकों, आर्य समाजों, प्रतिनिधि सभाओं तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को निरन्तर आन्दोलन करने की आवश्यकता है, वैदिक राजनैतिक आदर्शों को भी जनता में फैलाने तथा उन से देश के राजनैतिक जीवन को पवित्र बनाने की बड़ी भारी आवश्यकता है । राजार्य सभा को यदि एक सुसंगठित शक्तिशाली सभा राजनैतिक कार्यकर्ताओं के मार्ग-प्रदर्शनार्थ वनाया जा सके तो बहुत ही अच्छी बात होगी, यद्यपि यह खेद की बात है कि अब तक इसके विषय में अनेक प्रयत्न विशेष सफल नहीं हो सके । किसी अवस्था में जन सम्पर्क बढ़ाने के लिए भी यह आवश्यक है कि देश हित में गोवध निषेध, मद्य निवारण, भ्रष्टाचार निवारणादि आन्दोलनों को प्रबल रूप से संचालित किया जाय ।

संकुचित प्रान्तीयता का परित्याग करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाको अन्तर्राष्ट्रीय अपदेशक विद्यालय की स्थापना, वेदों के देश विदेशों की भाषाओं में अनुवाद, सत्यार्थप्रकाश के सब भाषाओं में अनुवाद करा कर सर्वत्र प्रचार आदि योजनाओं को सफल बनाने के लिए सब आर्य नर नारी पूर्ण नैतिक और आर्थिक सहयोग दें तो यह योजना सफल बन सकती है । सर्वशक्तिमान् भगवान् सब प्रकार के भेद भुलाकर आर्यों को अपने कर्त्तव्यपालन की शक्ति करें ।

स्वर्णिम इतिहास का एक प्रेरक प्रसंग

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह के लिए रणभेरी वज चुकी थी । वीरों की भुजायें फड़क उठीं । जेल जाने की प्रतिस्पर्धा और होड़ बस देखे ही बनती थी । मेरठ क्षेत्र के प्रकाण्ड विद्वान् और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सुशिष्य पं० पूर्णचन्द जी ने सत्याग्रह के लिए प्रस्थान करने की ठान ली । आपका प्यारा पुत्र शिवराज बहुत रुग्ण था । तव पण्डित जी की माता यशोदा जी ने पुत्र पूर्णचन्द को बेटे के ठीक होने तक रुकने को कहा । माँ बेटे के सँवाद को स्वप्न में रची गई इस कविता में प्रस्तुत किया गया है । तब पण्डित जी की पत्नी गूंगी सी बनी पति को एक शब्द तक न कह पाई । कल्पना करिये कि वह कैसा दृश्य था- 'जिज्ञासु'

"मत रोक मेरी माँ मुझे"

-राजेन्द्र जिज्ञासु
वेद सदन, नई सूरज नगरी,अबोहर-१५२११६

माँ ने कहा :

बेटा तेरा बीमार है । जाने को तू तैयार है ॥
कुछ सोच रे, कुछ देख रे । निष्ठुर यह क्या व्यवहार है !!
बेटा तुम्हारी सोच से । मुझको कहाँ इनकार है ॥
कब रोकती जाने से मैं । क्यों कर रहा तकरार है ॥
धर धीर बेटा हो रहा । 'शिव' का अभी उपचार है ॥

पत्नी उषा की मनोदशा :

गूंगी सी पत्नी क्या कहे ? भावों का भारी भार है ॥

पं० पूर्णचन्द जी माँ से

मत रोक मेरी माँ मुझे । मेरा भी मन लाचार है ॥
कर कामना जगदीश से । जिसने रचा संसार है ॥
वह ईश करुणाकर है । सबका वही आधार है ॥
सब नष्ट होंगे कष्ट माँ । रक्षक वही करतार है ॥
जाऊँगा-जाऊँगा अभी । मेरा यही इसरार है ॥थ
कानों में मेरे पड़ रही । गुरुदेव की ललकार है ॥
सब ओर सुनले हो रही । वीरों की जय-जय कार है ॥
जो सीख तू देती रही । उसका यही तो सार है ॥
प्रण पूर्ण कर लौटूँगा माँ । मेरी यही हूँकार है ॥
रण में जो योद्धा डोलता । वह डूबता मँझधार है ॥
निश्चय से पीछे हट गया । नरजन्म फिर वेकार है ॥
माँ ! कर विदा आशीष दे । कर्त्तव्य ही अधिकार है ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगना, सुल्तान बाजार,

बिक्री विभाग

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य
२. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी
३. सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी
४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका
५. वैशेषिक, सांख्य, न्याय, वेदान्त दर्शन हिन्दी भाष्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
६. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश सन्दर्भ दर्पण
७. Vedic concept of Culture and Civilization
८. असल महात्मुडु स्वामी श्रद्धानन्द-तेलुगु
९. कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती
१०. धर्मवीर पं. लेखरामजी का जीवन चरित्र
११. मैने निजाम पर बम क्यों डाला ?

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त : आज के संदर्भ में

- वेद प्रताप 'वैदिक'

श्रद्धेय स्वामीजी, उपस्थित देवियो व सज्जनो ! परोपकारिणी सभा में आकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है । पिछली बार जब में अजमेर आया था तब १० मिनिट के लिए ही यहां आया, लेकिन आया जरूर । अगर आप नहीं बुलाते तो भी मैं अवश्य आता, क्योंकि हमारे लिए साक्षात् परोपकारिणी सभा से बड़ा प्रिय सम्बन्ध है । विषय रखा कि दयानन्द की प्रासंगिकता क्या है ? मैं परोपकारिणी सभा से ही अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ । महर्षि दयानन्द ने इस सभा का नाम हिन्दू हित सभा नहीं रखा, हिन्दू उपकार सभा नीं रखा, आर्यसमाजी उपकार सभा नहीं रखा, ब्राक्तण उपकार सभा नहीं रखा, गूजराती उपकार सभा नहीं रखा, राजस्थानी उपकार सभा नहीं रखा, भारतीय उपकार सभा भी नहीं रखा, इसका नाम रखा परोपकारिणी सभा--परोपकार करने वाली सभा । मनुष्य मात्र का उपकार करे ऐसी सभा । तो, दयानन्द की दिल की चौड़ाई का इस सभा के नामकरण से ही पता चलता है कि कितना विस्तीर्ण हृदय और मन महर्षि दयानन्द का रहा । लेकिन पिछले १० वर्षों में, श्रमा करें मुझे यह कहने के लिए कि, आर्य समाज बहुत संकीण्र हो गया है । सिर्फ भारत तक सीमित रह गया । भारत में भी सिर्फ हिन्दुओं तक सीमित रह गया । हिन्दुओं में दुर्भाग्य से सिर्फ ऊँची जातियों तक सीमित रह गया, ऊँची जातियों में भी सिर्फ पढ़े-लिखे और मध्यम वर्गों तक सीमित रह गया और उससे भी अधिक सिकुड़कर शहरों तक सीमित रह गया और शहरों के भी देवियों और सज्जनों में अधेड़ या वृद्ध लोगों तक सीमित रह गया । किशोर, युवा और बच्चे आर्यसमाज में दिखाई नहीं देते, तो कितना सीमित हो गया । दयानन्द का विश्व कितना व्यापक था और हर जगह आर्यसमाज के नियमों व अपनियमों में मानव मात्र की बात है । कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की बात है और सीमित हो गया कितना ज्यादा, यह मैंने आपको बता दिया । यही आर्यसमाज की विफलता का मूल कारण है कि हमरो हृदय विस्तीर्ण नहीं हैं ।

अब जो हिन्दू-मुस्लिम समस्या है । आर्यसमाज के मंच से बाल्यकाल से मैंने इतने भाषण सुने मुसलमानों के खिलाफ कि अब सोचता हूं तो मूझे बड़ा अफसोस होता है, दंग रह जाता हूं । यह मुसलमान कौन, यह ईसाई कौन, यह सिक्ख कौन ? यह प्रश्न हमको करना चाहिए । क्या ये भारतीय नहीं हैं, क्या ये लोग मनुष्य नहीं हैं, क्या ये लोग मनुष्य नहीं हैं, क्या ये भारत माँ की सन्तांन नहीं है !, निश्चित रूप से हैं । बिल्मुल हमारी तरह । लेकिन कुछ ठेकेदारों की वजह से, कुछ अज्ञान की वजह से अवांछित मार्ग पर चले गये और जैसे महर्षि दयानन्द ने जिस प्रेम पगे भावों से वशीभूत होकर सत्यार्थप्रकाश, के चारों सम्मुलास लिखे, उसके पीछे कोई दुर्भावना नहीं थी, उसके पीछे कोई ईर्ष्या-द्वेष नहीं था, उसके पीछे कोई नफरत व घृणा का भाव नहीं था ।

कहीं-२ कठोर शब्दावली का प्रयोग स्वामीजी ने किया है । लेकिन इर्ष्या द्वेष से प्रेरित होकर कहीं किसी जाति के प्रति, किसी धर्म के लोगों के प्रति, किसी देश के लागों के प्रति कहीं कोई छोटी बात महर्षि दयानन्द के हृदय में नहीं थीं उनका एक ही लक्ष्य है की लोगों को सत्पद दिखायें । यदि यह लक्ष्य नहीं होता तो महर्षि दयानन्द के कई अन्य निकट मित्रों में ईसाई, मुसलमान कैसे होते । अपने अन्त समय में अगर उनको विश्वास नहीं होता तो चिकितसा क्यों जिस व्यक्ति ने की उससेकराते । जैसी भी चिकित्सा की, अच्छी या बुरी, उसके बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगा, क्यों कहूं ? स्वामी श्रद्धानन्द को अब्दुल रसीद ही क्यों पानी पिलाते । अबदुल रखीद का हृदय विस्तीर्ण न था । लोगों ने छोटे हृदय का परिचय दिया, छोटे मन का परिचय दिया । दयानन्द जी के मामले में, श्रद्धानन्दजी के मामले में, लेखरामजी के मामले में भी, ये उनकी कमजोरी है । हमारे मन में कमजोरी नहीं आनी चाहिए । हमारा मन बड़ा विस्तीण होना चाहिए और आज भी मैं कहता हूं कि आर्य समाज को अपना दिल बड़ा चौड़ा करना चाहिए । मुझे तो बड़ी खुशी होती है कि आर्य समाज में सिक्ख भी आयें, मुसलमान भी आये ईसाई भी आयें और हमारी बात प्रेम से सूनें क्योंकि हम गलत बात थोड़े ही कह रहे हैं । बाईबिल और कुरान पर या अन्य ग्रन्थों पर जिन पर स्वामीजी ने टिप्पणी की है तो लोग कहते हैं कि महर्षि दयानन्द इतनी कड़ी आलोचना करते हैं, तो मैने कहा आप एक बात भूल गये कि ६-६ मजहबों पर, जिनको धर्म कहें उन मजहबों पर, मत मतान्तरों पर स्वामीजी ने सिर्फ ४ सम्मुलास लिखे और जो उनके पिताजी का अभिमत था पौराणिक सनातन उस सनातन धर्म पर पौराणिकों पर चोट करने के लिए या उनको सही मार्ग पर लाने के लिए स्वामीजी ने १० समुल्लास लिखे । जो बाहरी धर्म थे या जो वेदनिन्दक धर्म थे, इसमें बौद्ध धर्म भी शामिल है । उन पर सिर्फ ४ समुल्ला हैं, तो दयानन्द बड़े दयालू थे । अपनों पर कठोर थे और परायों पर अधिक मधुर थे । यह मधुरता उनके हृदय की हमारे मन में भी आनी चाहिए । तभी समाज को बदलने और जोड़ने का महत्वपूर्ण काम हम कर सकेंगे । सिर्फ हिन्दू समाज को बदलना या हिन्दू समाज की निन्दा, आलोचना करना आर्य समाज का लक्ष्य नहीं है । आर्यसमाज का लक्ष्य सम्पूर्ण मानव समाज की सेवा करना है, तो सेवा कैसे करेंगे ? क आदमी शराब पीकर आपके अस्पताल में आ जाय, जुआ खेलकर आजाये, अफीम खकर आ जाये । उसको आप निरन्तर गाली बकेंगे तो उसको आप अमृत भी पिलायेंगे तो वह नहीं पीयेगा । शराबी आ जाय तो मेरी राय यह है कि उसको गले लगाया जाय, वेश्या आ जाय और कोई पापी आ जाये तो मेरी राय है कि उसको गले लगायें । तभी पाप उससे छूटेगा लेकिन मुझे लगता है कि पिछले १०० वर्षों में हमसे जो गलती हुई, हमने शराबी को पीटना शुरु कर दिया, हमने वेश्या से घृणा करना शुरू कर दिया, हमने अपराधी से नफरत करना शुरू कर दिया तो लोग हमसे भागने लगे, बुरे लोग तो हमसे भागने ही लगे, अच्छे लोग भी हमसे भागने लगे,

क्योंकि हमारी छिद्रान्वेषी प्रवृति गलत वन गई ।

बुराईयों का परिहार जब तक डटकर नहीं करेंगे और उसके लिए उसके खिलाफ मोर्चा नहीं लेगे तो फिर आर्यसमाजी होने का फायदा ही क्या है ? क्यां आप दयानन्द के सिपाही है । अगर बुराइयों के खिलाफ शंखनाद नहीं करेंगे तो क्यों आर्यसमाजी हैं ? अगर यह दृष्टि होती तो आर्यसमाजों में जो मुकदमें चलते हैं, जो सम्पत्तियों के लिए झगड़े होते हैं, ये ईट-चूने की लड़ाई होती है वह होती ही नहीं । वेद तो पीछे रह गया ? ईट-चूने के भवन बने रह गये दिल्ली में ३००-४०० भवन, शयद ज्यादा हो गये होंगे । जितने भवन हमारे पास हैं, भारतवर्ष में और विदेशों में दूनियां की सवसे अधिक शक्तिशाली राजनैतिक पार्टी के पास भी नहीं हैं । हिन्दुस्तान पर पिछले इतने वर्षों से राज कर रही कांग्रेस पार्टी के पास इतने भवन नहीं हैं । इतने क्या हमारी तुलना में कुछ भी नहीं हैं । हजारों भवन हैं हमारे पास, अरवों रुपये की सम्पत्ति हमारे पास है । सारी ताकत हमारी ईट चूने में लगी है । मैं तो दंग रह गया, परोपकारिणी सभा में आज इतने सज्जन देवी देवता पधारे हैं । आते ही नहीं हैं, वड़े से बड़े आर्य समाज में चले जाईये, अधवर्पु और होता का ही पता नहीं । इसका कारण क्या है ? मन में हमारे सुधार करते करते, समाज को वदलते वदलते कटुता आ गई । आर्य समाजियों से लोग डरते हैं । एक मायने में तो डर अच्छा है । तेजस्वी आदमी होगा, जो सत्य वक्ता होगा, लोग उससे भयभीत होंगे। सबको डर लगता है लेकिन इतना ज्यादा डरते हैं, कि पास आने से भी विदकते हैं । अगर मरीज डॉक्टर का इलाज करेगा ? अगर मरीज को यह डर हो जाये कि वह छूरा छोंपता है तो कितना भी अच्छा शल्य चिकित्सा करने वाला हो वह हाथ पर हाथ धरकर वैठा रहेगा । तो हमसे मरीज डरने लगे हैं, हम ऐसे डॉक्टर वन गये हैं । पिछले १०० वर्षों में लोग आते नहीं हैं । मेरा निवेदन यह है कि आर्यसमाज को अपने क्रिया-कलाप में, पद्धति में, ऐसा परिवर्तन करना होगा कि मरीज आवें । उनको यह मालूम रहे कि आर्यसमाजी नश्तर लगाते है, चिकित्सा के लिए लगाते है, वेहतर समाज वनाने के लिए । यह उनका स्वभाव नहीं है नश्तर लगाने का ? वड़े सुधार की वात है ।

जहाँ तक दयानन्द की विचारधरा का प्रश्न है मैं यह वात हृदय की गहराइयों में भी अनुभव करता हूं कि अव जो नया विश्व वन रहा है उसमें दयानन्द से अधिक प्रांसंगिक कौन है ? ये मैं जानना चाहता हूं, कि जिसे हम समाजवादी व्यवस्था कहते हैं--उनका किला चूर्ण-चूर्ण हो गया और वह गढ़ ढह गया । जो पूँजीवादी के नाम की दुनियां में जानी जाती है अमेरिका और यूरोप, उसने मानव को उपकरण तो वहुत दिये है लेकिन आनन्द और शान्ति प्रदान नहीं की यूरोप व अमेरिका का जो मनुष्य है । उसका मन वहुत अशान्त है ।

इन सादे देशों में मूझे दर्जनों वार जाने का अवसर मिला और सिर्फ यात्रा का ही नही इन देशां में लम्वे समय तक मैं रहा भी हूं । यह जो पश्चिमी समाज है इनक आन्तरिक अर्न्तद्वन्द्वों का पहचान ने का नजदीक से मुझे अवसर मिला है और मुझे वड़ा अफसोस होता है कि सारी दुनियां का शोषण करके, खून चूसकर, परेशान कर, लोगों की गरदन मरोड़कर पैसा इकट्ठा किया जाता है । हमें धोखा देकर हमारा माल सस्ते दाम पर खरीदकर और वहां की वनी हुई चीजें महंगे दाम पर हमें वेचकर हमारे मजदूरों को गुलामों की तरह अपने खेतों और कारखानों में जोतकर जो पैसा इकट्ठा होता है, जो समृद्धि इकट्ठी होती है वहां, उसने कोई वहुत वड़ा सन्तोष या आनन्द प्रदान किया है ऐसा मुझे लगता नहीं है । हर तीसरा-चौथा आदमी तलाकशुदा मर्द लगता नहीं है । हर तीसरा-चौथा आदमी तलाकशुदा मर्द है । कोई गाता-पिता अभिभावक शायद ही मुझे ऐसा मिला हो जो कि अपने वच्चों की तारीफ करता हो या उनकी अनुज्ञाकारिता का उल्लेख करता हो पति-पत्नि के जो सम्वन्ध हैं उनमें वफादारी नहीं है, आज्ञाकारी वच्चे नहीं होते और पत्नी वफादार नहीं होते । ऐसे समाज का क्या करें, ऐसा परिवार आन्द में कैसे हो सकता है ? परिवार विश्रृंखलित हो रहे हैं । सम्पति का जो उपयोग होना चाहिये, उसके विपरीत सम्पति दुःख का कारण वन रही है । हत्याओं का कारण वन रही है, जालसाजी और धोखाधड़ी का कारण वन रही है । राज्य कल्याणकारी होने के वजाय कष्टकारी हो रहे हैं । व्यवस्था इतनी दमनात्मक है कि मनुष्य का अचेतन मन व्यवस्था के दवाव से, विज्ञापनों के दवाव से वस्तुओं की वहुतायत से, मनुष्य का मन मर रहा है, मनुष्य का मन विकलांग हो रहा है, पश्चिम में । इसलिए क्या करें, रास्ता क्या है ? दुर्भाग्य यह कि हम तीसरी दुनियां के गरीव देश हैं ऐशिया, अफ्रीका, लेटिन अमेरिका, वे अमेरिका योरोप का अन्धानुकरण करते हैं पहले रूस का अन्धानुकरण करते थे । अव चली हवा पश्चिम की अन्धानुकरण करने की तो पश्चिम का समाज भैतिक दृष्टि से इतना वलिष्ठ है कि सारी वीमारियों को वर्दाश्त कर जाता है । हमारे भौतिक अंग इतने शिथिल हैं कि अगर पश्चिम की वीमारियां हमारे यहाँ आ गई तो हम धराशाय हो जायेंगे । हम पश्चिम की वीमारियों को वर्दाश्त करने लायक अभी नहीं हैं लेकिन चल पड़े हैं उसी राह पर । यह वड़ा दुर्भग्य है । तो क्या करें ? पश्चिम के मनुष्य को भी आनन्द देना है, पूर्व में भी साम्यवाद का किला ढह गया है । उनके वारे में भी सोचना है और वो ३-४ अरव लोग हमारे इलाकों में रहते हैं काली चमड़ी वाले, गोरी चमड़ी वाले लोग, उनका हित-चिन्तन भी हमको करना है । तो अव क्या करें कोई राह नहीं दिखाई दे रही है । तव मुझे दो गुजराती सन्तों की राय सही मालूम पड़ती है--दयानन्द और गांधी की ।

ये ऐसी राह हैं आर्थिक समाज रचना में, सामाजिक समाज रचना में और राजनैतिक समाज रचना में जो सम्पूर्ण मनुष्यता को राह दिखा सकती है । वहुत सारे मसले हैं, सवाल हैं, जिन पर मैं विस्तार से वोल सकूँ, लेकिन वहुत विस्तार इस प्रश्न का मैं करूँगा नहीं, यह सूत्र रूप में मैंने आपसे कहा है क्यों कि दयानन्द न समाज की संरचना को पूञ्जीवाद के माध्यम से करना चाहते हैं, और न समाजवाद के माध्यम से करना चाहते हैं । व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास हो, समाज और व्यक्ति में सामंजस्य हो यह दयानन्द का प्रयत्न था । वेदों का दर्शन यही है कि अपना नीजी स्वातंत्र्य समाप्त नहीं हो ओर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी भी कायम रहे, यह आर्यसमाज के नियमों में भी है ।

स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में भी ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में भी है, आर्याभिविनय में भी। स्वामी जी के ग्रंथ जहाँ-जहाँ पढ़े हैं सम्पूर्ण वेदार्थ मोतियों के बीच यह विचार आपको डोलता हुआ मिलेगा। आगे इसे नये दर्शन की जरूरत है। सामाजिक दायित्वों को भी पाटना है। इन दोनों में व्यक्तिगत दायित्व के साथ संतुलन करने वाला अगर कोई दर्शन है तो वह दयानन्द का दर्शन है। आज व्यक्तिगत पूँजी और सामाजिक सम्बन्ध के संतुलन का कोई अभियोजन करना सम्भव है ही नहीं। हमारे यहाँ तो है, चार आश्रम हैं, कैसी अद्‌भुत व्यवस्था है। वर्णाश्रम की जो व्यवस्था स्वामी दयानन्द ने प्रतिपादित की मुझे लगता है कि आने वाली दुनिया अगली एक दो शताब्दी में, चाहे अभी न सही, इस मार्ग पर आयेगी। फिर इसके अलावा रास्ता भी क्या है ? यही रास्ता है। वर्णाश्रमधर्म जो है साधारण मनुष्य का जैसा स्वभाव है उसके आधार पर बना है। २५ वर्ष की आयु तक पहुंचने पर, २५ वर्ष की आयु तक शुद्ध त्याग का जीवन अपनाना और उसके बाद गृहस्थ में रहें, ५० वर्ष तक गृहस्थ में रहे। ये जो वर्ण हैं १०० साल की आयु में सिर्फ २५ साल वर्ण हैं। सिर्फ गृहस्थ के लिए वर्ण है। ब्रह्मचारी क्या हुआ कोई वर्ण ही नहीं है। वानप्रस्थ के लिए क्या वर्ण हैं ? कोई वर्ण नहीं है. और संन्यासी का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सब प्रक्रियाओं का विरोध हो जाता है, पर मनुष्य २५ वर्ष की आयु में संन्यासी हो जाता है तो वर्ण का खेल समाप्त हो जाता है। तो सिर्फ २५ साल है। सम्पन्नता का केल या प्रेयस का मार्ग सिर्फ २५ साल है बाकि ७५ साल तो कल्याण मार्ग के पास है। स्नेह के पास है। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति है। इस मनुष्य के देवत्व को, स्वभाव को वेदों से पहचाना और दयानन्द जैसे महान् कलाकार थे जिन्होंने चित्र को उकेरा जिसकी व्याख्या की और मनुष्य जाति को बताया।

दयानन्द के रास्ते पर नहीं चलोगो, वर्णाश्रम धर्म को नहीं मानोगे तो क्या होगा ? वही जो अमेरिका में हो रहा है कि विवाह से पहले ८० प्रतिशत कन्याएँ अक्षत् नहीं रहतीं। लगभग १०० प्रतिशत किशोर ब्रह्मचर्य से विरक्त होते हैं तो कैसा समाज वन गया। पापी समाज वन गया। दुश्चरित्र समाज वन गया। राष्ट्रपतियों के बारे में सर्वज्ञज्ञत हो गया कि जिस देश का सिरमौर सर्वोच्च व्यक्ति दुश्चरित्र हो, परिवार के सदस्यों पर निरन्तर मुकदमें चल रहे हैं, धूल पड़े उस राष्ट्र के अरबपति खरबपति पर। धिक्कार है उस राष्ट्र पर सबसे ताकतवर देश पर--ताकत तो सुअर में भी होती है, ताकत तो गेंडे में भी होती है। क्या वह हमारा वरेण्य है। वह हमारा पूज्य नहीं है। गाय की लोग पूजा करते हैं। गाय की लोग पूजा करते हैं। गाय किसी की हत्या नहीं करती। जब चरित्र निर्माण रहेगा, पतन नहीं होगा, जब धरकी नींव कमजोर होगी तो उस नींव पर आप १० आदमी खड़े कर दीजिये भ-भराकर नीचे आ जायेगी। कमजोर नींव पर आपने जो तैयार किया और वह अमेरिका का राष्ट्रपति वन गया। राष्ट्रपति वनने पर भी उसका अलग पतन हो गया। और नींव अगर मजवूत है, मजदूर वाप का वेटा मजदूर ही रहेगा। लेकिन मालिक भी देवता की तरह उसे पूजता है। हृदय में उसका आदर करता रहेगा, यह वड़ा सत्य है। अभी हमारे दयानन्द का एक वेटा रामकृष्ण है, मजदूर है। आर्यसमाज के सिद्धान्त के डॉ. रामकृष्ण है, मजदूर है। आर्यसमाज के सिद्धान्त के डॉ. रामकृष्ण आर्य अनुयायी हैं। दयानन्द का वेटा मजदूर है। कम्पनी का महाप्रबवन्धक उनको आग्रह कर रहे हैं कि आप वड़े अफसर वन जाईये। वोले नहीं, मैं तो ईंधन झोंकने वाला मजदूर हूँ। मैं कोयला फैंकने वाला मजदूर ही ठीक हूँ।

जिस समाज में गृहस्थ त्यागी होगा, अपरिग्रही होगा, उस समाज में आप भ्रष्टाचार कैसे करेंगे, न मे स्तेनो जन पदे न कदर्यो न मद्यपः। ना नाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरि स्वैरिणी कुतः। वहाँ रिश्वत लेने वाला कौन होगा। वताइये, पापी होगा ही नहीं, किसको रिश्वत देंगे आप। कवीरदास ने कहा--

चाह गई चिन्ता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जाको कछु न चाहीये वो शाहों के शाह।

दयानन्द का जो गृहस्थ है वह वादशाहों का वादशाह है। गृहस्थ को आप क्या देंगे, उसको तो कुछ चाहिये ही नहीं। उसको तो दो जून रोटी चाहिये। स्वच्छ वस्त्र और निवास चाहिये। शिक्षा और चिकित्सा चाहिये और कुछ चाहिये ही नहीं। निष्काम कर्म सिद्धान्त में विश्वास कता है ईश्वर न्यायकारी है दयालु है। उसे हिसाव करने की आवश्यकता ही नहीं है। ९० साल की आयु में चौथी पत्नी, ८५ साल की आयु में दस्तावेजों में धाँधली करके पैसा कमाया, ६० साल की आयु में दुश्चरित्रता की, यह ईसाईयत का देष नहीं है। ये वहाँ की समाज व्यवस्था का दोष है। लेकिन एक मायने में समाज व्यवस्था का निर्माण करने वाली जो विचारधारा है। यह सांस्कृतिक धारायें हैं मूल उसमें है। त्याग की प्रेरणा निहित है। आज भारतीय समाज जो हमारा टिका हुआ है सारी भव वाधाओं के वावजूद उसका अस्तित्व है। आप रोम चले जाइये, मिश्र चल जाइये। ५-६ हजार पुराना रोम जिस समाज की स्थापना हुई उसका कुछ पता ही नहीं चलता। उस सभ्यता का कुछ पता नहीं। मूल विचार जो हमारे पास यहाँ है भारत में ज कहीं भी चले जाइये तो पांच हजार साल पहले होता था तो आज भी होता है। परम्परा है जो परात् पर से भी परे है। आगे से भी आगे है। सृष्टि के प्रारम्भ से है और सृष्टि के पहले से भी है। सृष्टि से पहले से भी सृष्टि है, तव से है। सृष्टि समाप्त हो जाये तव भी रहेगा। हमारी परम्परायें हजारों वर्ष। अंग्रेजी कलेण्डर के, अव अंग्रेजी कलेण्डर मानते हैं। इसलिए हजारों वर्ष, दयानन्द का कलेण्डर मानते हैं तो १ अरव ९७ करोड़ के आस-पास होगा। दयानन्द का कलेण्डर मानने पर २ अरव साल के जो आस-पास होता है, परम्परायें चली आ रही हैं। लेकिन मुझे डर यह है कि भारत के जो नेता लोग हैं उनसे ज्यादा और नेताओं के जो नेता हैं नौकरशाह अफसर लोग वो नेताओं के भी नेता हैं। अव वे संस्कार रहित होते जा रहे हैं। उनका प्रभाव बढ़ता जा रहा है तो यह बहुत वड़ा खतरा है। भारतीय परम्परा के लिये। अव आप यह समझें कि इस खतरे से इस देश के लोग परिचित हैं। जो गाय की वात करते हैं या मन्दिर की वात करते हैं या राम की वात करते हैं या कृष्ण की वात करते हैं तो मुझे नहीं लगता कि वो लोग परिचित हैं वे लोग धोतीवाले हैं किन्तु अंग्रेज का माल ढ़ोने वाले हैं। लेकिन धोती पहनकर उनके विचारों को वर्णाश्रम धर्म का, भारतीय

संस्कृति का कोई जान नहीं सिर्फ माला जनते हैं ।

इसलिए ऊपरी बातों को लेकर झगड़ा चला । इसमें कोई शक नहीं है कि आतताइयों ने अत्याचार किये ? इस देश में बड़े जुल्म किये और खून खौलता है जब इतिहास को देखते हैं लेकिन मैं समझता हूँ कि उसे हम लोग इतिहास के कूड़ेदान से उठाकर मंच की स्वर्ण-पट्टिका पर उपस्थित नहीं करेंगे । अब इतिहास को बदलने की आवश्यकता है । मैं आप से पूँछता हूँ कि क्या जरूरी है ईट-चूने का मन्दिर बनाना, मैं आर्यसमाजियों से कहता हूँ कि सभी ताकत ईट-चूने में लगी हुई है । मारीशस में गया, कई बार । आठ-दस दिन पहले मारीशस में ही था । तो वहाँ मैंने हमारे पुरोहितजी से कहा और वृद्ध लोगों को भी कहा, कि सारा जोर अपना ईट-चूने में लगा रहे हैं । न हिन्दी प्रचार के लिए कुछ करते हैं, न शिक्षा प्रसार के लिए कुछ करते हैं, न मांसाहार के विरोध के लिए कुछ करते हैं । जो चल रहा है, देश में राष्ट्रवाद मे नाम पर जो लोग चला रहे हैं वह भी बाह्य वस्तुओं पर केन्द्रित हैं । आभ्यान्तर जो संस्कृति की रक्षा के लिए कार्य होना चाहिये वह नहीं हो रहा अगर अंग्रेजी चलेगी इस देश में तो उसका वर्चस्व होगा, तो कौन दयानन्द को जानेगा ? कौन विवेकानन्द को जानेगा ? कौन उपनिषद् पढ़ेगा ? पटरी जिधर जाती है रोल उधर जाती है । जिधर रेल जाती है उधर पटरी नहीं जाती । पटरी छोटी और रेल बड़ी होती है । लेकिन पटरी जिधर जाती है रेल उधर ही जाती है, पटरी अगर तुमने अंग्रेज की ले ली तो गाड़ी तुम्हारी लन्दन जायेगी, बनारस, हरिद्वार या अजमेर नहीं जायेगी । वो याज्ञवल्क्य या मैत्रेयी पर जाकर नहीं रुकेगी । वह तो शेक्सपीयर आदि पर जाकर रुकेगी । ये हमारे मन्दिर बनाने वाले भाई मन्दिर बनाने की सोचते हैं पर मन्दिर बनाने वाले भाई मन्दिर बनाने की सोचते हैं पर मन्दिर बनाकर क्या होगा ? और पाखण्ड होगा, और अन्धविश्वास पैदा होगा फायदा किसका होगा ? मन्दिर किसके लिए बना रहे हैं ? जो पुरोहित किसी प्रकार का परिश्रम नहीं कर रहे हैं लड्डु खा-खकर मोटे हो रहे हैं । दुनिया भर का गला काटने वाले लोग जाकर चढ़ावा बढ़ायेंगे । मन भर आप करेंगे तृण भर दान करेंगे, श्री रामजी की जय ! अछूत जो कि खून पसीना एक करके मन्दिर बनायेंगे उन्हें बाहर पर दिया जायेगा । ऐसे मन्दिर का आप क्या करेंगे । ऐसे मन्दिर की बजाय ऐसा मन्दिर बनाओ जिसमें ईसाई को भी आने दें मुसलमान को भी आने दें । राम की सन्तान भी आयें, बाबा की की सन्तानें आये । परोपकारिणी सभा परोपकार करने वाली सभा । परोपकार करने वाला किसी की जात नहीं पूँछता, किसी का मजहब नहीं देखता है, किसी की नाक नहीं देखता है, किसी का कान नहीं देखता । अगर काटने वाला कुत्ता भी आ जाय तो परोपकारिणी सभा में उसकी सेवा करा दें । अगर काटने वाले कुत्तों को भी पकड़ो, तो परोपकारी अस्पताल में भरती करो, ऐसा इंजेक्शन दो कि ठीक हो जाय । मन ठीक हो जाय । अगर सच्चा दया का घर है, परोपकार का घर है तो फर्क कैसे कर सकते हैं । और गीता में बहुत अच्छा श्लोक है कृष्ण ने कहा है-- **विद्याविनय संपन्ने, ब्राह्मणे गविहस्तिनी । शुचि चैच श्व पाके च पण्डिता समदर्शितः ।।** कि अगर पंडित है तो विद्याविनय से सम्पन्न ब्राह्मण, गाय, हाथी, घेड़ा, कुत्ता, कीड़ी कुंजर सबमें एक ही आत्मा का निवास है । **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्** कैसे भेद करें । ऐसी संस्था बनाओ कि जिस पर लिखा हो कि सब के लिए खुला है । सिर्फ हिन्दू ही आ सकते हैं । अपने को नहीं चाहिये जो चाहे सो आये, कोई भेद न हो और सत्य बोले और जो आन्तरिकता है उसको समझने की कोई कोशिश नहीं करते । परम्पराओं की रक्षा की कोई कोशिश नहीं करता । भारत को एक करके मजबूत बनाने को कोई कोशिश नहीं कता गरीबों की सेवा होनी चाहिये । उनको आगे बढ़ाने की उत्कृट अभिलाषा होनी चाहिये । जब आरक्षण का सवाल आया हम सब लोगों ने बड़ा जबरदस्त विरोध किया । विरोध करना शायद इसलिए भी स्वाभाविक था कि जिस कारण से आरक्षण लाया गया उसके मूल में कही दाल में काला हो लेकिन दयानन्द की दृष्टि से सोंचे आर्यसमाज की दृष्टि से सोंचे तो हमने जो कुछ किया उससे उल्टा करना चाहिये था । दयानन्द ने क्या किया ? स्त्री और शूद्र वेद नहीं पढ़े आरक्षण है । वेद कौन पढ़े उस पर आरक्षण था । काषाय वस्त्र कौन पहने, सेवा कौन कराये माल-मलाई कौन खाये, उस पर आरक्षण था । स्वच्छ भवन में कौन रहे, उस पर आरक्षण था । सेवा कौन करे उस पर आरक्षण था । जैसा कि कहा गया है कि--

जन्मना जायते शूद्रः

इसके विरोध में आरक्षण था । दयानन्द और उससे पहले बुद्ध दो महापुरुष ऐसे हुए इस भारत में जिन्होंने इस आरक्षण को भंग किया । स्त्रियाँ वेद पढेंगी यह आरक्षण टूट गया । शूद्र वेद पढ़ेगा यह आरक्षण टूट गया । दयानन्द ने कितना क्रान्तिकारी कार्य किया । दयानन्द को मारने की कई कोशिशें हुई । उन्हें जहर दिया गया, यह तो ठीक है । नन्हीं जान ने जहर दिया । उसकी क्या हैसियत जो जहर दे वह तो उद्दीपक कारण था । अर्प भी छोड़े गंगा में डुबोने की कोशिश भी की गई । क्योंकि जलन पैदा हुई थी कि यह क्या कह रहा है ? क्षूद्र वेद पढ़ रहे हैं, स्त्री शालाएँ खुल रही हैं । नारी जो ताड़न की अधिकारी है वो स्त्रियाँ हमारे साथ बैठकर यज्ञ कर रही हैं । वेद ग्रन्थों का प्रचार कर रही हैं । दयानन्द ने सारे आरक्षण बंद कर दिये । नौकरियों में जो हम लोगों का आरक्षण है वह भी तो बंद होना चाहिये । हम ऊंचे ओहदों पर हैं वह तो बन्द होना चाहिये । अब आप हिसाब निकालिये कि राजस्थान की नौकरियों में वीरता का ठेका भी राजस्थान ने ले रखा है । बड़ी नौकरियों का ठेका भी हमने ले रखा है । ३०० अगर आई. ए. अफसर हैं तो ३०० में ५ भी हरिजन नहीं हैं, १०० भी चमार नहीं हैं, ५० भी लुहार नहीं हैं । मखमल पर सिर्फ बनिये का बेटा ही क्यों सोता है ।

अगर ऐसा होता है तो यह वर्णाश्रम धर्म का विषय है । दयानन्द-शिष्यों को क्या करना चाहिए । इस आरक्षण को स्वस्थ रूप से चलाना चाहिए, मैं यह नहीं कहता कि विश्वनाथ प्रतापसिंह का अन्धानुकरण करें। ये जो हमारे नेता हैं, अन्धानुकरण तो क्या यह तो अनुकरण करने के योग्य भी नहीं है । हिन्दुस्तानी समाज का सारा कूड़ा-कचरा राजनीति में इकट्ठा हो गया । सबसे निकृष्ट सबसे दुष्ट प्रवृति के लोग राजनीति में इकट्ठे हो गये । उनका नेतृत्व करना चाहिए, उनको हमें राह दिखानी चाहिए । लेकिन

हमारे आर्यसमाज के शीर्ष पर जो लोग बैठे हैं उनको विचारों को समय नहीं है । आरक्षण का विरोध हो रहा है तो आरक्षण का विरोध करने लगे । फिर जाते हैं प्रधानमंत्री के पास, जाकर आशीर्वाद ले रहे हैं । प्रधानमन्त्री बेचारे गरीब । दयानन्द ने राजा-महाराजाओं की परवाह नहीं की, कान पकड़कर राजाओं की परवाह नहीं की, कान पकड़कर राजाओं को बताते थे । महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी हो प्रधानमन्त्री की क्या हैसियत ? बेचारे गरीब हैं । प्रधानमन्त्री किस खेत की मूली है ? प्रधानमन्त्री अर्थात् भिखमंगों से आशीर्वाद मांगते हैं । अपने कार्यक्रम में संन्यासियों के सर के ऊपर इन दुश्चरित्र नेताओं को बैठाते हैं अब बताओ दयानन्द की परम्परा को आगे कैसे बढ़ाओगे। तो जरूरी है कि समाज के बदलाव की प्रक्रिया को हम समझें । दयानन्द ने जड़ता तोड़ी । भारतीय समाज में उस जड़ता को तोड़ने की प्रक्रिया को हमें आगे बढ़ाना है और जब तक दिल में दया नहीं होगी वह प्रक्रिया बढ़ेगी नहीं । २०० बच्चों ने आत्महत्या की । भारत में ऐसा कभी नहीं हुआ । हम लोग सब जातिवादी हैं । हमारे धर्म में जन्मजात जाति की श्रेष्ठता का विष निहित है । हजारों वर्षों से ऐसा हो रहा है कि हम तिलमिला रहे हैं । गरीबों के बच्चे आगे कैसे आयेंगे । हमारा तो शत-प्रतिशत आरक्षण है खाने पीने पर, अच्छे मकानों पर वो बात हम क्यों नहीं सोचते । घी का आरक्षण नहीं हुआ, सूखे टुकड़ो को आरक्षण हुआ । समाज को कौन बदलेगा ? दयानन्द ने किया वह काम हम लोगों को आगे बढ़ाना है । हम करते ही नहीं है । आज दयानन्द की बहुत बड़ी प्रासंगिकता है । जो माँ प्यार से बच्चे को खिलाती है वो आनन्द व प्रसन्नता और कहीं देखने को नहीं मिलती है । उस आरक्षण ने साक्षात् करुणा का दर्शन करा दिया । लेकिन यह बदलाव का कार्य आर्यसमाज को करना है ।

मैं समझता हूं कि भाषा का जो सवाल है उस पर हम को ध्यान देना चाहिए । राष्ट्रभाषा सम्मेलन, हिन्दी सम्मेलन करते हैं इसकी आवश्यकता नहीं है । बन्द कर देना चाहिए । हिन्दी सम्मेलनों की कोई आवश्यकता नहीं खडी खओ, समालोचना तो बाद में करेंगे । हर एक पात्र को स्वच्छ करो, यह सम्मेलन में करना चाहिए । पात्र में जो अभक्ष्य पड़ा हूआ है उसको हटाईये । तभी तो उसमें कुछ रखेंगे । आर्यसमाज कुछ नहीं करता है इतनी बार स्वामी आनन्दबोधजी से मिला, कुछ करते ही नहीं । मैं लिख चुका हूँ, ईट-चूने में फंसे हूए हैं । सारे देश में आर्यसमाज अंग्रेजी हटो आन्दोलन चलायें, मैं अंग्रेजी में कमजोर नही हूँ । अंग्रेजी में विदेशियों को पढ़ाता रहा हूँ । फारसी पढ़ाता रहा हूँ । मेरे बच्चे संस्कृत, गुजराती, उर्दू जानते हैं । सब भाषायें पढ़नी चाहिएं । लेकिन अपनी भाषा का परित्याग करना, विदेशी भाषा को सर पर बैठाना और उसको श्रेष्ठ समझकर बर्ताव करना, इससे बढ़कर पशुता नहीं है । इससे बढ़कर कोई गुलामी नहीं है । इसलिए मैं कहता हूं, कि हिन्दुस्तान के प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को जब मैं देखता हूं अंग्रेजी बोलते, खास तौर से संसद में, लोक सभा में, लोक भाषा को छोड़कर, तो मैं चकित रह जाता हूं । सोचता हूं कि मेरा देश आजाद हुआ या नहीं और ये जो राष्ट्रपति हैं राष्ट्रपति कहलाने योगय नहीं हैं । वह अंग्रेजों का राष्ट्रपति है अंग्रेज का खनसामा है या हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति । बड़ा अफसोस होता हैं ये लोग अंगेर्जों का गुणगान करते हैं, अपनी भाषों की न्दिा करते हैं, यह सुनकर मेरे कान फटते हैं, सूर्खता है । इसका विरोध होना चाहिए । दफ्तर में सारा काम अंग्रेजी में होता है, हिन्दी का भी अगर अफसर बनना हो तो उसे अंग्रेजी में बात करनी चाहिए । अंग्रजी वर्चस्व होने से प्रतिष्ठा समाप्त हो जायेगी । तुम्हारा साहित्य कौन पढ़ेगा ? आज हिन्दी की कविता की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक अगर एक हजार प्रतियां छपती हैं तो १० साल में भी बिकती नहीं है और अमेरिका से आने वाले गन्दे नोवेल १०-१० लाख बिक जाते हैं । हिन्दी की जब यह दशा है तो संस्कृत कौन पढ़ेगा । जीवन पद्धति हमारी बदल गई है । धोती नहीं पहनते । अपनी पहचान के प्रति हम बहुत विरक्त हो गये हैं । वेशभूषा भी बदल गई है । पिता को पिता कहने में शर्म आती है । सूट व पेंट पहनना बुरी बात नहीं है । लेकिन मुझे जब यह पता चले कि धेती तो नीच हो गई है और पेंट ऊँच हो गई । मुझे जब यह मालूम पड़ जाय कि मेरी भाषा नीच हो व विदेशी भाषा ऊँच हो तो मैं विदेशी भाषा को उठाकर कूड़ेदान में फैंक दूँगा । इसलिए बड़ी-बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में मैं अंग्रेजी में नहीं बोलता । हम अपनी अस्मिता को बनाकर रखना चाहते हैं । दयानन्द का सिपाही ही अलग होता है । उसका चरित्र अलग होता है । उसकी हपचान अलग होती है ।

बौद्ध देशों में जहाँ भी जाता हूं मैं वहाँ कहता हूं कि आप लोग माँस खाते हैं, अहिंसा के सिद्धान्त पर चलते हैं । भूटान के नरेश से मेरी कई बार वार्ता हुई और हमारे नेताओं से अधिक पढ़े लिखे आदमी हैं, यहाँ तो अंगूठा टेक हैं । तो भूटान नरेश से मैंने कहा कि सारे लामाओं की एक सभा बालो । आपके यहाँ इतना माँस खाया जाता है, क्यों खाया जाता है ? ये बौद्ध धर्म के आदमियों की प्रवृत्ति है ? भूटान के नरेश ने कहा ठीक है । मैंने कहा आप स्वयं से शुरू कीजिए आप स्वयं शाकाहारी बनिये । आपको देखकर दूसरे भी शाकाहारी बनेंगे । लामाओं के जो सबसे बड़े लामा हैं, जिनको भगवान् बुद्ध का अवतार माना जाता है वो आजकल देहरादून में आये हुए हैं उनका फोन आया है । वे २३ तारीख को दिल्ली आ रहे हैं । उनकी उम्र मुश्किल से २८-२९ साल होगी । उनको भगवान् बुद्ध का अवतार माना जाता है । उनसे भी मैं मिला । मैंने कहा आप माँस खाना छोड़ दें । उनका पूरे विश्व में संगठन है, जापान में भी । तो कहा आप लोगों में कोई हमसे कह दे, कोई भारतीय हमसे कह दे कि मांस नहीं खाना चाहिए हम समझते हैं कि हिन्दू धर्म में माँस खाने की अनुमति है तो बौद्ध धर्म में भी क्यों नहीं । मैंने कहा आप मांसाहार को किस आधार पर न्यायोचित ठहराते हैं ? तो उन्होंने हमको तरकीब बताई कि माँस कैसे खाया जाये । हम यह नहीं कहते कि बकरी को काटकर खाया जाय । हम तो गाय भी खाते हैं । बोले चलती गाय को हम पहाड़ से गिरा देते हैं, पहाड़ से गाय गिरकर मर जाती है । तो अब मर ही गई तो काटकर खा लेते हैं । हिंसा का हाथ नहीं । वेद की हिंसा-हिंसा नहीं होती, बकरियों को गिरा देते हैं और काटकर खा जाते हैं । तो हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम ज्ञान को देश में विदेश में सर्वत्र शाकाहार का प्रचार करें । स्वामीजी ने कितना लिखा है भक्ष्याभक्ष्य के

वारे में । कितने ग्रन्थ लिखे हैं । आर्यसमाजी लोग मांस खाते हैं । वहुत सारे । मैं नाम नहीं लेना चाहता । वे ईंट-चूने वाले लोग संस्थाएँ, स्कूल वना रहे हैं, पाठशालाएं वना रहे हैं, कालेज वना रहे हैं । करोड़ों रुपये इकट्ठे कर रहे हैं । चलते हैं तो सामने देखते ही नहीं, मनुष्य दिखाई ही नहीं देता । देवताओं की तरफ नजर रखते हैं । आचरण में अशुद्ध, माँस खाते हैं, क्या उनको आर्यसमाज में रहने दिया जाये ? नहीं चाहिए करोड़ों रुपये । पहले आचरण शुद्ध करो और तर्क भी वेदेते हैं कि हमारे वच्चे ईसाईयों की पाठशाला मे जाते हैं वहाँ जाने से उनको वचाने की लिए हमने ऋषि दयानन्द की पाठशाला खेली है । "दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल" खोले हैं । डी. ए. वी. स्कूल खेले हैं, जिनमें वच्चे वढ़िया अंग्रेजी पढ़ें । ईसाईयों से वचाने के लिए हमने इतने अच्छे विद्यालय खोले हैं तो मैंने उनसे कहा कि गाय को ईसामसीह के वूचड़ खाने से निकाल कर दयानन्द के वूचड़ खाने में डाल दिया और दयानन्द के वूचड़खाने में वच्चे हमारे जाकर वर्वाद हो गये । हमारे यहाँ उनको वरवाद करें उनके यहां नहीं । क्यों दयानन्द के नाम को वदनाम कर रहे हो ? अगर देश के १३ करोड़ वच्चों को अंग्रेजी रटाओगे, उन पर अंग्रेजी लादोगे तो ये उनका कत्ल करने के वराबर है । पूछो इन वच्चों से । ५-६ विषय कक्षा में पढ़ते हैं । सवसे ज्यादा इनको अंग्रेजी विषय पर ध्यान लगाना पड़ता है । जितनी अन्या विषयों पर ताकत लगानी है उतनी अकेले एक विषय पर लगती है और सबसे ज्यादा अनुत्तीर्ण इस विषय में होते हैं । मौलिक प्रतिभा, इनके चिन्तन की प्रतिभा नष्ट होती है, रट्टा लगाते हैं ।

ब्रह्मदत्त जी तो शायद अजमेर में भी रहे थे । भीमांसक जी ने नयी प्रणाली चलाई । रट्टा लगाना वन्द करो । रट्टा लगाने से वुद्धि ठस हो जाती है । अगर दयानन्द की तरह सीखना है, मौलिक प्रतिभा का सृजन होना है तो रट्टा लगाना वन्द करो । ये १३ करोड़ वच्चे रटने में ही घेट दिये जाते हैं । वच्चे की घुटाई हो जाती है । समाप्त हो जाता है उनका वचपन । लेकिन भारत की प्रतिभा की इस घोटाबाजी के दौर में भी इस अंग्रेजी को लादे जाने के वावजूद हमारे वच्चे वहुत वढ़िया वढ़िया वैज्ञानिक वन जाते हैं । हमारा वच्चा जहाँ जाता है दुनिया में वहां नाम करता है । विपरित विषम परिस्थितियों में भी ये भारत माता का झंडा फहराते हैं तो काम वहुत है करने के लिए आर्य समाज को ।

मेरा आपसे यह निवेदन है, प्रार्थना है । यहां आकर मैं परम आनन्दित हो गया । मुझे इतने लोग आर्यसमाज में कई वर्षों बाद दिखे हैं । हाँ वार्षिक अधिवेशन में रो-धेकर भीड़ इकट्ठी कर लेते हैं । आर्य समाज के किसी सत्संग में इतने आदमी दिखाई नहीं देते । इसका मतलव यह है कि अजमेर शहर जिन्दा है । जिन्दादिल लोगों का शहर है ओर यहाँ के लोगों का चरित्र ऊँचा है । मैं सोच रहा था ५-७ लोग होंगे क्योंकि हमारी आदत पड़ी हुई है । मैं आप सवका वड़ा आभारी हूँ । वड़े आए, वच्चे आए मुझे वड़ी प्रसन्नता हुई । हमें तो अभी १०० साल हुए हैं, आर्यसमाज ने तो १०० साल के समय में ही हार मान ली । वौद्ध धर्म में ही १०००-१५०० साल लगे । दयानन्द का संदेश वड़ा मूल्यवान है । हम दो-तीन हजार वरस तक काम करेंगे । भारत तो सारी मनुष्यता का गुरु है । लेकिन हम लोग ऐसे निकम्मे शिष्य मिले दयानन्द को खसतौर से आजादी के वाद । धर्म किसी ऋषि के चलाये से नहीं चलता, चेलों के चलाये से चलता है । अगर ईसामसीह के चेले जोरदार नहीं होते तो ईसाईयत यरूशलम में ही खत्म हो जाती । मोहम्मद साहव के चेले अगर जोरदार नहीं होते तो मक्का-मदीना में ही इस्लामधर्म रह जाता । चेलों के चलते धर्म चलता है । दयानन्द ने तो वड़ी मशाल जलाई पर मशाल को तेल मिलता रहे । रोशनी फैलती रहे । सारी दुनिया में ये हमको करना है ।

अव यह परोपकारिणी सभा आर्यसमाज का, हम सव लोगों का सवसे वड़ा केन्द्र है । यहाँ से सारे देश में प्रकाश फैलाना है । सारी मनुष्यता को प्रकाश मिलना चाहिये । मैं आप सवका वहुत ऋणी हूँ और आभारी हूँ कि आज आपने मेरे अन्तर्द्वन्द्व के भावो को वड़े प्रेम के साथ सुना । कई विचारों से आप असहमत भी होंगे लेकिन आपने वड़े स्नेह के साथ मुझे सुना । मैं आपका वहुत आभारी हूँ । दिल्ली पधारें तो दर्शन दें ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगना, सुल्तान बाजार,

बिक्री विभाग

१ बागी दयानन्द
२ महर्षि दयानन्द की देन
३ देवर्षि दयानन्द चरित
४ वौद्धमत और वैदिक धर्म
५ संक्षिप्त सत्यार्थ प्रकाश
६ सत्यार्थ प्रकाश विमर्श
७ आर्य मान्यताएँ
८ वैदिक इतिहास विमर्श
९ आस्तिकवाद
१० चतुर्वेद शतकम्
११ प्रार्थना-प्रवचन
१२ .अतीत के यश की धरोहर
१३ सत्यार्थ सन्देश
१४ वेदान्त मीमांसा-सन्देश
१५ न्याय-वैशेषिक-सन्देश
१६ ऋग्वेद सन्देश
१७ वंगाल शास्तार्थ
१८ अपने आपको कैसे जानें और पढे
१९ संकल्प-सिद्धि
२० प्रेरक-प्रसंग
२१ वीरांगना महारानी कैकेयी
२२ वेदों में इतिहास नहीं
२३ देव यज्ञ
२४ योग मार्ग
२५ सत्य सनातन वैदिक धर्म
२६ अभिवादन नमस्ते ही क्यों ?
२७ ज्योतिर्मय
२८ राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन
२९ ब्रह्मा कुमारी संस्था ढोल की पोल
३० शराब बन्दी क्यों आवश्यक है ?
३१ आर्य समाज परिचय
३२ वैदिक सन्ध्या अग्निहोत्र विधि
३३ हैदराबाद का मुक्ति संग्राम
३४ आदर्श एवं वहुआयामी व्यक्तित्व के धनि लक्ष्मणराव गोजे
३५ पञ्च महायज्ञ विधि-तेलुगु

नोट : तांवे के हवन कुण्ड और हवन पात्र भी मिलते हैं ।

గాంధీగారి తమ్ముడు!

– ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

దేవుడులాంటి సాధువును అంత దారుణంగా హతమార్చిన మహా పాపి ఎవడా అని అక్కడ గుమికూడిన వాళ్లందరూ ఊపిరి ఉగ్గబట్టి చూశాడు. పరరూప రాక్షసుడు ఎంత భయంకరంగా ఉంటాడో అనుకున్నవాళ్లు తీరా ఆ శీల్తీని చూశాక తెల్లబోయారు.

హంతకుడు ఉడుకురక్తపు యువకుడు కాదు. గడ్డం, మీసం పండిపోయిన వయసు మళ్లినవాడు, బక్కపలచగా ఉన్నాడు. తరవాత తెలిసింది – పేరు అబ్దుల్ రషీద్ అని. కోర్టులో రికార్డులు రాసిపెట్టే పని చేస్తుంటాడని.

నేల మీంచి లేవగానే హంతకుడు నాలుగుదిక్కులా తేరిపార చూశాడు. డాక్టర్ అన్సారీని చూడగానే నవ్వి "డాక్టర్ సాహిబ్ ! ఆదాబ్ అర్జ్' అని సలాం చేశాడు. చూడబోతే ఇద్దరికీ పూర్వ పరిచయం బాగా ఉన్నట్టుంది.

తరవాత వాకబు చేస్తే తేలిందేమంటే స్వామీజీని చంపాలన్న సంకల్పాన్ని అబ్దుల్ రషీద్ ముస్లిం పెద్ద మనుషులు చాలామంది ముందు వ్యక్తం చేసేవాడట. కొంతమంది అతడిని ప్రోత్సహించారు. కొంతమంది వద్దని వారించారు. అతడిని ఆగమన్న వారిలో డాక్టర్ అన్సారీ ఉన్నాడట. కిరాతక దురాగతానికి రషీద్ చాలా నెలల నుంచే పథకం వేశాడు. దానికి ఉలామాల నుంచి ఫత్వా కూడా పొందాడట. మనిషిలో పట్టుబడ్డానన్న ఆందోళన లేదు. తనకు ఏమి అవుతుందోనన్న చింత లేదు. ఆనాటి నుంచి ఉరికంబం ఏక్కేంతవరకూ అతడి మొగంలో ఒరీ రకం గంభీరత.

ఇక తాను అక్కడుండి చేసేది లేదు కనుకా, వాతావరణం వేడెక్కటం గమనించీ డాక్టర్ అన్సారీ వెళ్లిపోయాడు.

(మేరే పితా, ఇంద్ర విద్యా వాచస్పతి, పే.155)

ఆనమయాన అక్కడే ఉన్న స్వామి శ్రద్ధానంద కుమారుడి ప్రత్యక్ష సాక్ష్యమిది. తండ్రి స్మృతులను నెమరువేసుకున్న గ్రంథంలో నాటి ఘటనా క్రమాన్ని ఏకరవు పెడుతూ అతడు యథాలాపంగా ఇచ్చిన సమాచారమిది. అనంతర కాలంలో శ్రద్ధానంద మీద లెక్కలేనన్ని వ్యాసాలు, జ్ఞాపకాలు అనేక పుస్తకాలు రాసిన వారు కూడా ఈ సమాచారాన్ని పట్టించుకున్నట్టు లేదు.

కాని–పైన ఉటంకించిన వివరాలను బట్టి ఏమి అర్థమవుతుంది ? స్వామి శ్రద్ధానందను చంపింది ఏ గుర్తు తెలియని టెర్రరిస్టో కాదు. నలుగురికీ తెలిసినవాడు. ఆ ప్రాంతంబినే అందరి మధ్య తిరుగుతున్నవాడు. హత్య చేసింది క్షణికావేశంలో కాదు. వ్యక్తిగత

కక్షతోనూ కాదు. స్వామీజీని చంపుతానని చాలాకాలంగా బహిరంగంగానే ముసల్మాన్ ప్రముఖులతో అతడు చెబుతూ వచ్చాడు. విన్నవాళ్లలో కొందరైనా అతడిని ప్రోత్సహించారు. అంతేకాదు. తమ దృష్టిలో ఇస్లాం మతానికి శత్రువు అయిన కాఫిర్ సాధువును చంపడానికి ముస్లిం ఉలేమాలే అతడికి ఫత్వా ఇచ్చారు.

అంటే–అది ముస్లిం సమాజానికి తెలిసే, కనీసం కొందరు ముసల్మాన్ మత పెద్దల ఆమోదంతోనే పథకం ప్రకారం జరిగిన దారుణహత్య.

సరే. ప్రోత్సహించేవారు ప్రోత్సహించారు. కనీసం కొంతమంది ముస్లిం ప్రముఖులైనా అలాంటి పని చేయవద్దని దుండగుడిని వారించారు. వారిలో కొందరికైనా స్వామి శ్రద్ధానంద ఎవరో, ఎలాంటివాడో బాగా తెలును. కనీనం వారైనా అటువంటి హత్యాయత్నం ఆలోచన ఒకటి నడుస్తున్న సంగతి ఏ అధికారులకైనా చెప్పారా ?

ఎవరి దాకానో ఎందుకు ? డాక్టర్ అన్సారీ స్వామీజీకి చాలా ఇష్టుడు; బాగా సన్నిహితుడు. ఆయన వైద్యం మీద స్వామికి చాలా గురి. 1919 నుంచి ఏ ఆరోగ్య సమస్య వచ్చినా ఆయన సంప్రదించేది ఈ డాక్టరునే. ఆయన ఎప్పుడైనా అందుబాటులో లేకపోతే చికిత్స అయినా మానుకనేవాడు కాని వేరే డాక్టరుకు చూపించుకునేవాడు కాదు. మరణానికి ముందు హరిద్వార్ గురుకుల్‌కి వెళ్లి జబ్బు పడ్డప్పుడు కూడా ఏరికోరి ఈ ముసల్మాన్ డాక్టరునే స్వామి పిలిపించుకున్నాడు. ఢిల్లీ తిరిగొచ్చాక మరణించేంత వరకూ ఆయన వైద్యాన్నే నమ్ముకున్నాడు. మొదటి నుంచీ ఆ డాక్టరు పట్ల ఎంతో ఆదరంతో తన ఇంట్లో మనిషిలా చూసుకునేవాడు.

అంత సాన్నిహిత్యం ఉన్నప్పుడు శ్రద్ధానంద తత్వమూ అన్సారీకి బాగా తెలిసి ఉండాలి. ఆయనకు ముసల్మాన్ల పట్ల ఎంత సుహృద్భావం ఉన్నదీ, హిందూ–ముస్లిం ఐక్యతను ఎంత గాఢంగా కోరుకుంటున్నదీ ఆ వైద్యుడికి బాగా అర్థమై ఉండాలి. అటువంటి మహానుభావుడి మీద ద్వేషం పెంచుకుని, ఆయనను చంపి తీరాలని తన మతస్థుడే ఒకడు పన్నాగాలు పన్నుతున్నాడని నేరుగా తనకే తెలిసినప్పుడు ఆ సంగతి స్వామీజీకి, ఆయన మంచి చెడ్డలు చూసుకునే ఆయన కుమారుడికి చెవిన వేసి, జాగ్రత్తగా ఉండండని హెచ్చరించడం అన్సారీ కనీస ధర్మం కాదా ? ఆ పని ఆయన చేశాడా? సూచనప్రాయంగానైనా అన్సారీ ముందస్తు హెచ్చరిక చేసిన దాఖలాలు ఎక్కడా లేవు. రోజూ ఆయనతో కలిసి గంటలతరబడి మాట్లాడే ఇంద్రకి కూడా... హంతకుడు డాక్టరుకు పరిచయస్థుడన్న సంగతి హత్య జరిగాక గానీ తెలియలేదు.

పోనీ – తన సలహాను లెక్కచెయ్యక స్వామీజీ ప్రాణం తీసేంత ఘాతుకానికి ఒడికట్టినవాడు పట్టుబడ్డాకైనా అన్సారీ ఎలా స్పందించాడు ? ఎంత ఘోరం చేసి, మన మతానికి ఎంత చెడ్డ పేరు తెచ్చావురా అని మండిపడ్డాడా ?

లేదు. ఎలాగూ తన పేషంటు ప్రాణం

పోయాక అక్కడుండి చేసేది లేదు కనుక, వాతావరణం వేడెక్కటం గమనించి డాక్టర్ అన్సారీ చల్లగా జారుకున్నాడు.

తనను సొంత మనిషిలా ఆదరించి, పూర్తిగా నమ్మిన స్వామీజీకి ప్రాణహాని గురించి హెచ్చరిక చేయడంకంటే, తన మతవర్గాల్లో జరిగే వ్యవహారాలను గోప్యంగా ఉంచాలన్న మత విధేయతకే డాక్టర్ అన్సారీ అంతటి పెద్దమనిషి ప్రాధాన్యం ఇచ్చాడంటే-ఆ సమయాన శ్రద్ధానందస్వామిపై ముస్లిం మతస్థుల్లో రగులుతున్న ద్వేషం ఎంత తీవ్రమైనదో దీన్నిబట్టే అర్థం కావడం లేదా ?

ఒక దుండగీడు వేసిన దానికి అతడి సమాజం మొత్తాన్నీ దోషులను చేయటం తగదని మన మేధావులు నీతులు బాగానే చెబుతారు. శ్రద్ధానంద హత్యకు మొత్తం ముస్లిం సమాజాన్ని దోషిని చేయటం తగదు. ఒప్పుకుందాం. కాని-ఆ హత్యకు కారకులు ఆ మతంలోని కొన్ని అవాంఛనీయ శక్తులు అయితే మనిషన్నవాడు కనీసం వాటినైనా నిర్మొగమాటంగ, నిష్కర్షగా ఖండించాలి కదా? మరణశయ్య మీద లేవలేని స్థితిలో ఉన్న వాడిని కాల్చి చంపిన కిరాతకుడిని, అతడిని ప్రేరేపించిన వారిని, సమర్థించిన వారిని నిశితంగా తెగనాడాలి కదా? ఎవరి సంగతో ఎందుకు ? నీతి, నియమం తనకు ఉచ్ఛ్వాస విశ్వాపాలనీ, సత్యం, ధర్మం తప్ప మరొకటి తనకు పట్టదనీ పదే పదే గుర్తుచేసే అహింసా ప్రవక్తగారు-

ఒకప్పుడు తానె 'మహాత్మా' అని నోరార పిలిచిన మహానుభావుడిని ఒక ముష్కరుడు జబ్బు మంచం మీద అమానుషంగా కాల్చి చంపిన పైశాచిక హింసను ఎంత తీవ్రంగా ఖండించాడు ? హిందువులలో తీవ్ర అలజడికి, సెగలు కక్కే కమ్యూనల్ ఉద్రిక్తతకు కారకులైన వారిని ఎంత నియమబద్ధంగా గర్హించారు ?

ఘోర దురాగతానికి ఒడిగట్టిన నరపిశాచిని తెగనాడటానికి మహాత్మాజీకి నోరు రాలేదు. పైగా సత్పురుషుడి ప్రాణం క్రూరాతిక్రూరంగా బలిగొన్న వాడిని-తన 'ప్రియ సోదరుడు' అని నోరార ప్రస్తుతించాడు.

నమ్మశక్యం కావటం లేదా?

ఆ సమయాన గువాహతిలో కొలువుదీరిన కాంగ్రెసు మహాసభలో స్వామి శ్రద్ధానంద దారుణహత్య పట్ల దిగ్భ్రాంతి వ్యక్తపరిచే తీర్మానాన్ని స్వయంగా ప్రతిపాదిస్తూ గాంధీజీ చేసిన ఈ ప్రసంగాన్ని చిత్తగించండి.

స్వామీజీ మరణానికి మనం దుఃఖించ కూడదు. ఆయన వీర మరణం చెందాడు. అలాంటి చావు మనకు రావాలని మనలో ప్రతి ఒక్కరూ కోరుకోవాలి. అయితే తాను అమరవీరుడు కావటం కోసం వేరొకడు తప్పు చేయాలని కూడా ఎవరూ కోరరాదు.

స్వామీజీ వీరులలోకెల్లా వీరుడు. ధీరులందరిలోకీ ధీరుడు. ఎనలేని ధైర్య సాహసాలతో ఆయన జాతిని ఆశ్చర్యచకితం చేశాడు... ఆయన మరణించిన పరిస్థితులను తలచుకుంటే ఎవరికైనా సహజంగా ఒళ్లు జలదరిస్తుంది. ఆగ్రహం కలుగుతుంది. హంతకుడు ఇస్లాంపై చర్చకు స్వామీజీ ఇంర్వ్యూ కోరాడు. విశ్వాసపాత్రుడైన ఆయన సేవకుడు అతడిని లోనికి రానివ్వలేదు. ఎందుకంటే స్వామీజీ తీవ్ర అనారోగ్యంతో ఉన్నంతవరకూ ఎవరికీ ఇంటర్వ్యూలు అనుమతించవద్దని డాక్టర్ అన్సారీ అతడిని ఆజ్ఞాపించాడు. కాని గవంతుడి ఆజ్ఞ వేరే విధంగా ఉంది.

Swamiji, when he overheard the request, asked Dharam Singh to let the man in. Brother Abdul Rashid was shown in. I purposely call him brother, and if we are true Hindus you will understand why I call him so. Swamiji asked his servant to admit Abdul Rashid, because God had willed to show therethrough the greatness of Swamiji and the glory of Hinduism...

[***The Collected Works of Mahatma Gandhi,*** Vol.37,pp.444-445]

(స్వామీజీ అగంతకుడి కోరిక వినిపించడంతో అతడిని రానివ్వమని ధర్మసింగ్‌కి చెప్పాడు. బ్రదర్ అబ్దుల్ రషీద్ లోపలికి వచ్చాడు. అతడిని 'బ్రదర్' అని బుద్ధిపూర్వకంగా సంబోధిస్తున్నాను. మనం నిజమైన హిందువులమైతే నేను అతడిని అలా ఎందుకు పిలుస్తున్నదీ మీకు అర్థమవుతుంది. భగవంతుడు స్వామీజీ గొప్పతనాన్ని, హిందూ మత వైభవాన్ని తద్వారా చూపెట్టాలని సంకల్పించాడు కాబట్టే స్వామీజీ అబ్దుల్ రషీద్‌ను లోపలికి పిలిపించాడు)

మీ మట్టి బుర్రలకు అర్థమైందా ? జరిగింది ఖూనీ కాదు. చంపినవాడి తప్పు లేదు. అతంతా దేవుడి లీల. శ్రద్ధానంద స్వామి ఎంత గొప్పవాడో, హిందూ మతం గొప్పదో లోకానికి చాటాలని భగవంతుడు డిసైడయ్యాడు. ఆ పుణ్యకార్యానికి ఒక పవిత్ర సాధనంగా అబ్దుల్ రషీద్‌ను దేవుడు ఎంచుకున్నాడు. కాబట్టే నౌకరు అటకాయించినా, స్వామీజీ హంతకుడిని లోపలికి పిలిపించాడు. సమయం చూసి తన ఒంట్లో తుపాకిగుండ్లు దింపి, వీర మరణం ప్రసాదించే అవకాశాన్ని నిమిత్తమ్మాత్రుడైన అబ్దుల్ రషీద్‌కి ఇచ్చాడు. ఇక ఊరకునిటే బాగుండదు కదా ? అతడి పనిని అతడు కానిచ్చాడు. దానికి ఆ పుణ్యాత్ముడిని నిందించటం తప్పు. శ్రద్ధానంద హత్యకు మొదటి ముద్దాయి దేవుడు. రెండో ముద్దాయి శ్రద్ధానంద. గాంధీగారి ప్రియ సోదరుడేమో నిష్కారణంగా నిందపడ్డ దేవదూత.

ఈ విషయంలో ఇంకా డౌటంటే అదే అమోఘ ప్రసంగంలో మహాత్ములవారి ఈ ముక్తాయింపును ఆవధరించండి :

Now you will perhaps understand why I have called Abdul Rashid a brother, and I repeat it. I do not even regard him as guilty of Swamiji's murder. Guilty, indeed, are all those who excited the feelings of hatred against one another.

[***CWMG,*** Vol.37,pp.445]

(నేను అబ్దుల్ రషీద్‌ని బ్రదర్ అని ఎందుకు పిలిచానో బహుశా ఇప్పుడు మీకు అర్థమై ఉంటుంది. నేను మళ్లీ చెబుతున్నాను. స్వామి హత్యకు అతడు దోషి అని కూడా నేను అనుకోను. నిజమైన దోషులు ఎవరంటే ఒకరిపై ఒకరికి ద్వేషభావాలు రెచ్చగొట్టిన వారు.)

మనకు తెలిసినంతలో స్వామి శ్రద్ధానందకు ముస్లింల వట్ల ఈషణ్మాత్రం ద్వేషం లేకపోవచ్చు. హిందూ-ముస్లిం సఖ్యతనే కడదాకా మనసారా కోరుకుని ఉండవచ్చు. నిర్బలులైన హిందువులకు, నబలులైన ముస్లింలకు సహజీవనం కష్టం కాబట్టి హిందువులను కూడా ముస్లింలతో సమానమైన బలవంతులను చేయాలనే ఆయన శుద్ధి ఉద్యమం తలపెట్టి ఉండవచ్చు. కాని దాని మూలంగా మహమ్మదీయుల్లో అతడంటే ద్వేషభావం కలిగింది. ఆ కారణంగా అబ్దుల్ రషీద్ స్వామిని చంపాడు.

కాబట్టి అనలు దోషి ఎవరు? ద్వేషభావాలని రగిలించిన శ్రద్ధానంద లాంటివారు. అంతేనా?

ఔరా ! మహాత్మా !!

– ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

తమ ప్రియతమ స్వామీజీని ఎవరో మహమ్మదీయుడు కాల్చి చంపాడన్న వార్త కార్చిచ్చులా వ్యాపించింది. అంతటి మహా పురుషుడి మీద జరిగిన అఘాయిత్యానికి ఆయనెవరో వ్యక్తిగతంగా తెలియని వారికి కూడా గుండెలు మండాయి. ఆయనతో సన్నిహిత సంబంధం గలిగిన అభిమానులతో పెల్లుబికిన ఆగ్రహావేశాల సంగతి చెప్పనే అక్కర్లేదు.

స్వామి నివాసానికి దగ్గర ఉండే రాజారామ్ అనే కార్యకర్త పోలీసులకంటే ముందే హత్యా స్థలానికి చేరుకున్నాడు. హంతకుడు లోపలే ఉన్నాడని తెలిసి, చాకు తీసి లోనికి దూసుకెళ్లబోయాడు. కొందరు అడ్డుకున్నారు. కొందరేమో 'ఆపకండి అతడిని లోపలికి వెళ్లనీయండి' అంటున్నారు. గలభా విని బయటికి వచ్చిన ఇంద్ర అతడి చేతిని గట్టిగా పట్టుకున్నాడు. 'పండిత్‌జీ నన్ను ఆపకండి. మేమందరం ఉండగానే మా స్వామిని చంపుతాడా ? నేను ఇప్పుడే వాడిని చంపేస్తాను' అంటూ రాజారామ్ పెడదొబ్బులు పెట్టాడు. 'వాడిని చంపితే నివేమిటో లోకానికి తెలయకుండా పోతుంది. ఇప్పుడు మనందరం శాంతంగా ఉండాలి' అని చెప్పి అతడిని సముదాయించటం ఇంద్రకు చాలా కష్టమైంది.

ఇంకాసేపటికి దుర్వార్త ఢిల్లీ అంతటా పాకింది. దుకాణాలు, వ్యాపారసంస్థలు వెంటనే మూసేసి ఎవరూ పిలుపివ్వకుండానే నగరమంతటా హర్తాళ్ పాటించారు. వీధుల నిండా జనం గమికూడారు. ఎక్కడ చూసినా ఇదే చర్చ. వాతావరణంలో తీవ్ర ఉత్రిక్తత. అది మరికొద్ది గంటల్లో దేశమంతటికీ వ్యాపించింది. శుద్ధి, సంఘటన ఉద్యామాలు ఉద్ధృతంగా సాగుతున్న స్థితిలో, తీవ్ర మత కల్లోలాల నేపథ్యంలో హైందవ దళపతినే మహమ్మదీయుడు దారుణంగా చంపటంతో హిందువులు ఎంత రెచ్చిపోతారో, ప్రతీకారంగా ఎన్ని ఘోరాలు జరుగుతాయో, రక్తపుటేర్లు ఎంతలా పారుతాయోనని ప్రతి ఒక్కరూ భయపడ్డారు.

స్వామీజీ హత్య కబురు కలకత్తాలో ఉన్న లాలా లజపత్‌రాయ్‌కి ఆ రాత్రి తెలిసింది. ఆయన ఎం.ఆర్.జయకర్‌తో కలిసి హుటాహుటిన ఢిల్లీ బయలుదేరుతూ మహాత్మాగాంధికి దంతి ఇచ్చాడు. ఎఐసిసి సమావేశం కోసం గువాహతికి రైల్లో వెళుతున్న గాంధీజీకి ఆ టెలిగ్రాం మర్నాడు మధ్య దారిలో అందింది.

RECEIVED STUNNING NEWS. YOU SHOULD GO DELHI PREVENT EXCITEMENT OR RESENTMENT WIRE PARTICULARS.

(నిర్ఘాంతపరిచే వార్త అందింది. మీరు వెంటనే ఢిల్లీ వెళ్లి ఉద్రేకాలను, ప్రతీకారాలను

నివారించండి. *వివరాలు తంతి ఇవ్వండి*) అని బాపు వెంటనే లాలాజీకి తిరుగు తంతి ఇప్పించాడు. స్వామీజీని, ఆయన గురువును, ఆయన సాగిస్తున్న హిందు సంఘటన, శుద్ధి ఉద్యమాలను తాము తీవ్రంగా తెగనాడిన కొన్నాళ్ళకే స్వామీజీ ఘోర హత్యకు గురికావటం ప్రజల్లో ఎటువంటి మంటలు పుట్టిస్తుందో, ఎక్కడికి దారి తీస్తుందోనని గాందీజీ మొదలుకుని చోటా కాంగ్రెసు నాయకుడి వరకూ అందరి గుండెలూ గుబగుబలాడాయి.

కాని – చిత్రం ! చెదురుమదురు ఘర్షణలు, ఢిల్లీ లాంటి చోట్ల అక్కడక్కడ కొన్ని కత్తిపోట్లు మినహా – భయపడినంత ఘోరకలి ఏమీ చెలరేగలేదు. కొద్దిమంది ఆవేశపరుల దూకుడు, చిన్న గొడవలే తప్ప దేశం ఉద్రిక్తమైనా మొత్తం మీద ప్రశాంతంగానే ఉంది. హిందువులు తమను తాము నిగ్రహించుకో లేకపోతే తమ మతానికి చెడ్డపేరు తెచ్చినవార వుతారనీ... ఒకడు చేసిన పనికి మొత్తం ముస్లిం సమాజాన్ని ద్వేషించటం తగదనీ గాంధీగారు చాలా రోజుల పాటు పదేపదే హెచ్చరిస్తూనే ఉన్నారు. ఎప్పుడు ఏ అనర్థం వాటిల్లుతుందో, ముస్లిం సోదరులకు ఎక్కడ ఏ హాని జరుగుతుందోనని ఆయన పాపం ఎంతో తల్లడిల్లాడు.

There is nothing untoward in the assassination having taken place... God had willed for Swamiji a martyr's death and so, though he was still on death bed, he died at the hands of an assassin... I have no doubt that he preayed to his God to forgive him who knew not that he was doing anything wrong... Happy the warrior who achieves such a blessed death.

[*Collected works of Mahatma Gandhi*, Vol.37,pp.455-456]

(జరిగిన హత్యలో అవాంఛనీయత ఏమీ లేదు... స్వామీజీ వీరమరణం పొందాలని దేవుడు తలిచాడు. కాబట్టి మరణశయ్య మీదే ఉండి కూడా ఖూనీకోరు చేతిలో ఆయన మరణించాడు. నాకైతే సందేహం లేదు. తాను చేస్తున్నది తప్పు అన్న సంగతి ఎరుగని వాడిని క్షమించమని స్వామీజీ మరణించే ముందు తన దేవుడిని ప్రార్థించే ఉంటాడు. అంత గొప్ప చావు పొందిన యోధుడు చాలా సంతోషిస్తాడు)

– అని యంగ్ ఇండియా వత్రిక 30-12-1926 సంచికలో రాసిన శ్రద్ధానంద సంస్మరణ వ్యాసంలో గాంధీజీ ఉవాచ. మరణశయ్య మీది మహోనుభావుడిని ఘోరాతి ఘోరంగా కాల్చి చంపిన నరపిశాచి చేసిన మహా పాపాన్ని నిష్కర్షగా ఖండించటం కంటే... ఆ దుండగీడిని ఎట్లా ఆదుకుందామా అనే మహాత్ముడి తపన. నేరస్థుడికి ఎలా క్షమాభిక్ష పెట్టిద్దామా అనే ఎంతసేపూ ఆయన ఆరాటం. అందుకోసం మరణించిన వాడి మనసులో దూరి... చంపిన వాడిని క్షమించమని కనుమూసే ముందు ఆయన దేవుడికి దండం పెట్టే ఉంటాడని దబాయింపు ఒకటి !

మరి నేరం మాటో ? దానికి శిక్ష పడవద్దా? అసలు అబ్దుల్ రషీద్ నేరం చేస్తే కదా ? తాను చేస్తున్నది తప్పు అని తెలియని వాడు చేసింది నేరం ఎలా అవుతుంది – అని గాంధీగారి లా పాయింటు.

ఓహో ! మరి నేరానికి ఎవరు బాధ్యులు ? అది కూడా అదే వ్యానరాజంలో మహాత్ముడు ఇలా సెలవిచ్చాడు :

I wish to plead for Abdul Rashid. It does not matter to me what prompted the deed. The fault is ours The newspaper man has become a walking plague. He spreads the contagion of lies and calumnies. Secret and insidious propaganda has done it dark and horrible work... It is therefore we the educated and semi educated class that are responsible for the hot fever that possessed Abdul Rashid.

[*CWMG*, Vol.37,P.457]

నాకు అబ్దుల్ రషీద్ తరపున వాదించాలని ఉంది. ఆ పనికి అతడిని పురికొల్పింది ఏమిటి అన్నది నాకు అనవసరం. తప్పు మనది.

వార్తాపత్రిక వాడు నడిచే ప్లేగులా తయార య్యాడు. అబద్ధాలను, అఖాండాలను వ్యాప్తి చేస్తూంటాడు. రహస్యంగా జరిగిన కుత్సితపు ప్రచారం బాగా వని చేసింది... కాబట్టి చదువుకున్న, నగం చదువుకున్న తరగతికి చెందిన మనమే అబ్దుల్ రషీద్‌కు పట్టిన వేడి జ్వరానికి బాధ్యులం – అంటూ హంతకుడి తరపున వక్తాలా తీసుకున్నారు గాంధీగారు.

దాని మీద ఒక పాఠకుడు పెద్ద ఉత్తరం రాశాడు.

"మహాత్మాజీ ! జరిగిన ఘోరాన్ని, దానికి పాల్పడిన వాడిని, ఆ ఘోరానికి బాధ్యులైన వారిని (వారు ఎవరంటారా ? ముస్లిం ప్రావగాండిస్టులు; మతోన్మాద ముస్లిం మతాచార్యులు) ఖండించవలసింది పోయి మీరు ఖూనీకోరును సమర్థిస్తున్నారు. ఆ సమాజాన్ని వెనకేసుకుని వస్తున్నారు.

... ఆర్య సమాజ్‌ను ఖండించటంలో మీరు ఎప్పుడూ ననగలేదు. మరి – రుజువైన నేరాలకు ముస్లింలను ఖండించటానికి మీరు భయపడుతున్నారెందుకు ? అలాంటి దురాగతానికే ముస్లిం ప్రముఖుడిపై ఒక హిందువు పాల్పడినట్లయితే ఆ హంతకుడిని, అతడి సమాజాన్ని మొగమాటం లేకుండా మీరు తెగనాడేవారు. మీకు రక్త సంబంధం గల ముస్లిం సోదరులపై మీరు ఎందుకు పక్షపాతం చూపిస్తున్నారు ?

యంగ్ ఇండియా 20-1-1927 సంచికలో ఈ ఉత్తరం ప్రచురించి దానికి సమాధానాన్ని మహాత్ముడు ఇలా ఇచ్చాడు :

... నేనేమి నిజం దాచలేదు. జనరల్ డయ్యర్ మీద జాలి పడినట్లే ఈ హంతకుడిని చూసీ నేను జాలి పడుతున్నాను. జనరల్ డయ్యర్‌ను ప్రాసిక్యూట్ చేయాలంటూ లేచిన అలజడిలో పాలుపంచుకోవటానికి నేను నిరాకరించిన సంగతి మరచిపోరాదు.

మతం పేరిట జరిగిన మత విరుద్ధ ప్రచారానికి హంతకుడు లోను అయ్యాడని నా నమ్మకం. అతడే ఒక బాధితుడు. అందుకే – ప్రజల మనసులను చెడగొట్టిన వార్తాపత్రికలే హత్యకు బాధ్యులని నేను అన్నాను. స్వామీజీపై విద్వేషం రెచ్చగొట్టిన మౌల్వీలు, ఇతరులు అందరికీ బాధ్యత ఉంది.

క్రైస్తవం, బౌద్ధం, హైందవంలాగే ఇస్లాం కూడా శాంతిని ప్రబోధించే మతమని నేను భావిస్తాను. దీనికి వ్యతిరేకంగా ఖురాన్‌లోని కొన్ని వాక్యాలను ఉటంకించవచ్చునని నాకు తెలుసు. అదే విధంగా వేదాల నుంచీ వ్యతిరేక వాక్యాలను ఉటంకించవచ్చు. అనార్యులకు పెట్టిన శాపాలకు అర్థమేమిటి ? అస్పృశ్యులను మనం ఎలా చూస్తున్నాం ? మన దగ్గర తప్పు పెట్టుకుని ఇంకొకరిని తప్పు పట్టకూడదు.

[*CWMG*, Vol.38,P.38,P.87]

మరణశయ్య మీద ఉన్న ఒక పుణ్యాత్ముడిని క్రూరంగా చంపటం నేరం కాదా... హంతకుడికి, అతడిని ప్రేరేపించిన మతస్థులకు శిక్ష వేయాలా వద్దా – అని అడిగితే...

చంపిన వాడిది తప్పు కాదు. అతడిని రెచ్చగొట్టిన పత్రికలది తప్పు – అంటాడేమిటి సత్య ప్రవక్త ? ఫలానా వాడిని హత్యా నేరానికి అతడి మతంవారే పురికొల్పారని స్పష్టంగా కనపడుతూంటే వారి సంగతి వాటంగా దాటవేసి, వైదిక మతంలో అనార్యులకు పెట్టిన శాపాలు, అస్పృశ్యులు అంటూ అప్రస్తుత విషయాలు ఆ సందర్భంగా లంకించుకోవటం ఏరకమైన తెలివి? పైగా –

Where both parties are to blame, who can fix exact ratio of blame ?

ఇరుపక్షాలదీ తప్పు అయినప్పుడు అందులో ఎవరు నిష్పత్తి ఎంతో ఎవరు తేల్చగలరు– అంటూ అదే వింత వాదానికి కొసమెరుపు ఒకటి!

హత్యకు గురైంది హిందువు; హంతకుడు ముస్లిము; అతడిని ప్రేరేపించిన వారు ముస్లింలు అయినప్పుడు – హిందువులు, ముస్లింలు ఇరు వక్షాలదీ తప్పేననటం సమవర్తి న్యాయమా ? మేరలేని ముస్లిం పక్షపాతమా ? ఇందులో హిందువులదీ తప్పు ఉందనడానికి మహాత్ముడికి నోరెలా వచ్చింది? ఏమిటి హిందువుల తప్పు ? తమకు పూజ్యుడైన నాయకుడిని రాక్షసంగా చంపినా రెచ్చిపోకుండా సంయమనం చూపటమా ?

సరే ! రెచ్చిపోవద్దన్న మహాత్ముడి వాక్కును హిందువులు మన్నించారు. మరి మహమ్మదీయులు ఏమి చేశారు ? ఒకడు చేసిన తప్పుకు యెత్తం ముస్లిం సమాజాన్ని దోషిగా చూడరాదన్న గాంధీగారి వాదానికి తగ్గట్టుగా ముస్లిం సమాజం హంతకుడి దురాగతాన్ని ఖండించిందా ? అతడి పాపం తమకు అంటకుండా దూరంగా జరిగి, మిగతా దేశంలో పాటు అతడి ఘాతుకాన్ని గర్హించిందా? ఖూనీకోరును వెలివేయడం ద్వారా తమది శాంతిని జపించే మతం అన్న మహాత్ముడి నిర్ధారణను నిజం చేశారా ?

అబ్దుల్ రషీద్‌ను పట్టుకుని, చార్జిషీట్ చేసినప్పుడు ముస్లింలు కోర్టులో అతడి డిఫెన్సు కోసం పెద్ద మొత్తాన్ని పోగు చేశారు. సెక్యులర్ కాంగ్రెసులో ప్రముఖ నాయకుడైన అసఫ్ ఆలీ అతడి తరపున వాదించావీ. చివరికి నేర నిర్ధారణ అయి, రషీద్‌ను ఉరి తీసినప్పుడు యాభై వేలకు పైగా ముస్లింలు అతడి అంతిమ యాత్రలో పాల్గొని... హిందువులకు పూజ్యుడైన గొప్ప సాధువు రక్తం చిందించిన హంతకుడికి నివాళి అర్పించారు. మసీదులలో అతడి కోసం ప్రత్యేక నమాజ్ జరిపారు. రషీద్‌ను అమరవీరుడిగా ప్రకటించాలంటూ జమాయత్ ఉల్ ఉలేమా అధికారిక పత్రిక చాలా వాదనలు వినిపించింది. అబ్దుల్ రషీద్ ఆత్మకు పుణ్యగతులు చేకూర్చటం కోసం ప్రఖ్యాత దేవ్‌బంద్ ఇస్లామిక్ కళాశాల విద్యార్థులు, ప్రొఫెసర్లు ఖురాన్‌ను ఐదు పర్యాయాలు పూర్తిగా పారాయణ చేశారు – అని 'టైమ్ ఆఫ్ ఇండియా' పత్రిక 30-11-1927న ఒక వార్త ప్రచురించింది.

[*The Tragic Story of partition*, H.V.Seshadri, pp.81-82]

జాతి జనులను మేలుకొలపటం కోసం, ప్రాణ నష్టం జరగకుండా సకల జాగ్రత్తలు తీసుకుని పార్లమెంటులో చాలా తేలిక రకం బాంబులను భగత్‌సింగ్ లాంటి దేశభక్తులు పేల్చడమేమో గాంధీ దృష్టిలో క్షమించరాని హింసాకాండ. వారికి ఉరి తప్పించమని వైస్రాయ్‌కి రాసిన విన్నపం మీద సంతకం చేస్తే తన అహింసా వత్రం మైలపడిపోతుందని మహాత్ముడి లబలబ. పోనీ కొంతకాలం వారి ఉరి వాయిదా వేయమంటారా అని అప్పటి వైస్రాయ్ ఇర్విన్ తనంతట తాను అడిగినా – "వద్దొద్దు. ఉరి తీయాలి అనుకున్నప్పుడు వెంటనే తీసెయ్యండి" అని గాంధీగారే తొందరబెట్టారు.

మరి భగత్‌సింగ్, రాజగురు, సుఖదేవ్‌ల విషయంలో మహాత్మాజీ కట్టిన అహింస మడి అబ్దుల్ రషీద్ దగ్గరికి వచ్చేసరికి ఏమైపోయింది ? లాలా లజపతిరాయ్ అంతటి మహా నాయకుడిని పాశవికంగా చితకబాదిన తెల్లవాడిని భగత్‌సింగ్ చంపటమేమో క్షమించరాని హింస. ఎవరికీ ఏ హానీ తలపెట్టకుండా ధర్మం కోసం పాటుపడుతూ, మరణోన్ముఖమైన పుణ్యాత్ముడిని నిష్కారణంగా మహా క్రూరంగా కాల్చి చంపటమేమో తెలియక చేసిన తప్పు. హిందువు చేస్తే నిష్కృతిలేని నేరం. అదే ముసల్మాన్ చేస్తే క్షమించదగ్గ తెలియనితనం.

పక్షపాతమే తన మతంగా పెట్టుకున్న మహాత్ముల వారు మహా పాపిని ఏసుక్రీస్తు లెవెల్లో క్షమించవలెను అంటూ సమయానుకూలంగా ప్రవచించటంతో ఆగాడా ? భగత్‌సింగ్ బృందానికి ఉరిని ఆపించమని అడగటానికి నోరు రాని మహానుభావుడు అబ్దుల్ రషీద్‌కు ఉరి తప్పించటానికి లోపాయకారిగా చాలా తంటాలు పడ్డాడు. అదృష్టవశాత్తూ అప్పుడున్నది కాంగ్రెసు సెక్యులర్ ప్రభుత్వం కాదు కాబట్టి గాంధీ ప్రయత్నం ఫలించలేదు. శ్రద్ధానంద స్వామి హంతకుడికి ఉరితాడు తప్పలేదు.

మెయిల్ పెట్టు.. మొక్క పట్టు

- వచ్చే నెల 11న హైదరాబాద్‌లో హరితవిప్లవం
- ఆన్‌లైన్ ద్వారా ఉచితంగా మొక్కల పంపిణీ
- ప్రత్యేకంగా www.tsgreenit.org ఏర్పాటు
- ఐటీశాఖ ఆధ్వర్యంలో గ్రీన్ ఐటీ టీమ్
- ఒకే రోజు 25 లక్షల మొక్కలు నాటేందుకు ఏర్పాట్లు

హైదరాబాద్, జూన్ 9 (ఆంధ్రజ్యోతి): జీహెచ్‌ఎంసీ పరిధిలో నివసిస్తున్నారా..? మీ ఇంట్లో మొక్కలు నాటేందుకు ఖాళీ స్థలం ఉందా.?, అయితే ఆన్‌లైన్‌లో దరఖాస్తు చేసుకుంటే మీ ఇంటి కే మొక్కలు వచ్చి చేరుతాయి.. జీహెచ్‌ఎంసీ పరిధిలో జూలై 11న ఒకేరోజు 25లక్షల మొక్కలు నాటే కార్యక్రమాన్ని విజయవంతం చేసేందుకు పలు కార్యక్రమాలు మొదలు పెట్టారు. దీనిలో భాగంగా ఆన్‌లైన్‌లో మొక్కల పంపిణీ కార్యక్రమాన్ని ఐటీవర్గాలు చేపట్టాయి.గత ఏడాది నవంబర్‌లోనే ఐటీవర్గాలు, పారిశ్రామికవ ర్గాలు.. సీఐఏ, టీఎస్‌ఐసీ, సినిమా, రియల్‌ఎస్టేట్... తదితర అన్ని రంగాలవారిని భాగస్వామ్యం చేస్తూ ఐటీ మంత్రి కె. తారకరామా రావు తెలంగాణ గ్రీన్ ఐటీ టీమ్‌ను ఏర్పాటుచేశారు. ఐటీవర్గాలు ఈ టీమ్‌లో ప్రధాన పాత్ర పోషిస్తున్నాయి. హైదరాబాద్‌లో హరిత విప్లవాన్ని తేవటమే ప్రధాన లక్ష్యంగా ఈ టీమ్ పనిచేస్తోంది.జూలై 11 కార్యక్రమాన్ని విజయవంతంచేసేందుకు ఆన్‌లైన్‌లో మొక్కల పంపిణీని చేపట్టినట్లు గ్రీన్‌టీమ్ ఫెసిలిటేటర్ ఉదయ్‌శంకర్ తెలి పారు. జూలై 11కు మూడు, నాలుగురోజుల ముందుగానే ఠీఠీఠీ.టఱ ట్ఛుజ్టీ.ౌటజ వెబ్‌సైట్‌లో కావాల్సిన మొక్కల పేర్లు, సంఖ్య, మీ ఇంట్లో ఉన్న ఖాళీ స్థలం, మీ ప్రాంతం, ఇతర అడ్రస్ వివరాలతో రిజిస్ట్రేషన్ చేసుకోవాల్సి ఉంటుంది. ఆన్‌లైన్ రిజిస్ట్రేషన్ అయిన మరుసటిరోజే అటవీశాఖ నోడల్ అధికారులు మీ ఇంటికి వచ్చి తనిఖీ చేస్తారు.కొన్ని మొక్కలే అయితే దగ్గర్లో ఉన్న నర్సరీ వివరా లను లబ్దిదారులకు వివరిస్తారు. పెద్దసంఖ్యలో (ఉదా..500పైచి లుకు) మొక్కలు కావాల్సివస్తే ఉచితంగా ఇంటివద్దకే గ్రీన్‌టీమ్ చేరుస్తుంది. పూలు, పండ్ల, ఔషధ, నీడనిచ్చే తదితర మొక్కలను ఉచితంగా పంపిణీచేయనున్నట్లు ఉదయ్‌శంకర్ వివరించారు. ఉత్తరప్రదేశ్‌లోని లక్నోలో ఒకేరోజు 10లక్షల మొక్కలు నాటి నెలకొ ల్పిన రికార్డును బ్రేక్‌చేయాలనే లక్ష్యంతో గ్రీన్‌టీమ్ పనిచేస్తోంది. కాగా. పెల్టోఫారం' జాతికి చెందిన మొక్కలను కేవలం ఖాళీ ప్రదే శాల్లోనే నాటాలని నిర్ణయించారు. రోడ్లకు ఇరువైపుల పొడవాటిచె ట్లను నాటాలని, వేర్లు బలంగా ఉండే చెట్లకే ప్రాధాన్యం ఇవ్వను న్నారు. ఇటీవల గాలివానలకు భారీస్థాయిలో పెల్టాఫోరమ్‌జాతి చెట్లువిరిగి పడిన నేపథ్యంలో అటవీశాఖ ఈ నిర్ణయం తీసుకుంది.

కాంపా నిధులకోసం ఢిల్లీకి జోగు

- 14న వెళ్లేందుకు ఏర్పాట్లు

హైదరాబాద్, జూన్ 9 (ఆంధ్రజ్యోతి): తెలంగాణ రాష్ట్రానికి రావాల్సిన కాంపా(కాంపన్సేటరీ అఫారెస్టేషన్ ఫండ్ మేనేజ్‌మెంట్ అండ్ ప్లానింగ్) నిధులను రాబట్టేందుకు రాష్ట్ర అటవీశాఖ మంత్రి జోగు రామన్న ఈనెల 14న ఢిల్లీ వెళుతున్నారు. ఢిల్లీలో కేంద్రపర్యావరణ, అటవీశాఖ మంత్రి ప్రకాశ్ జావదేకర్‌ను కలిసి చర్చలు జరుపనున్నారు. ఈ ఏడాది వార్షిక ప్రణాళిక కింద రూ.145 కోట్ల కాంపా నిధులను తెలంగాణ రాష్ట్రానికి కేంద్రం కేటాయించే అవ కాశం ఉంది. ఇందులో మొదటి విడతగా 72కోట్లను విడుదలచేయనున్నారు. ఇప్పటివరకు తెలంగాణకు కేంద్రం రూ.1100 కోట్ల కాంపా నిధులు బకాయిపడి నట్లు సమాచారం. ఈ నిధుల విడుదల అంశంపైనే ఢిల్లీ పర్యటనలో ఎక్కువ ప్రాధాన్యమివ్వనున్నారు. మంత్రి జోగురామన్నతోపాటు అటవీశాఖ పీసీసీఎఫ్ పీకే.శర్మ, కార్యదర్శి వికాస్‌రాజ్ తదితరులు ఢిల్లీ వెళ్లనున్నారు.

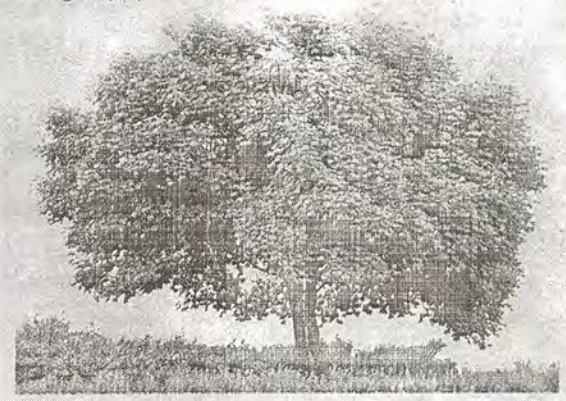

అటవీశాఖపై ఎక్కువ బాధ్యత...

రెండోవిడత హరితహారం అమలులో ఎక్కువ బాధ్యతను అటవీశాఖపై ఉంచారు. ఈ ఏడాది ఇరిగేషన్‌శాఖ పరిధిలోని 4600 చెరువు గట్లపై, ఆర్‌అండ్‌బీ శాఖకు చెందిన రహదారులకు ఇరువైపుల స్థలాల్లో మొక్కలను నాటే బాధ్యత అటవీశాఖ చేపట్టనుంది. గత సంవత్సరం అటవీశాఖ ఆధ్వర్యంలో మొక్కలు నాటిన విధానం బాగుండటంతో ప్రభుత్వం ఈ నిర్ణయం తీసుకుంది.

2016-17 ప్రభుత్వ కార్యాచరణ ప్రణాళిక

జిల్లా	నర్సరీల సంఖ్య	నాటాల్సిన మొక్కలు (లక్షల్లో)			అందుబాటులో ఉన్న మొక్కలు (కోట్లలో)
		అటవీశాఖ	ఇతర శాఖలు	మొత్తం	
ఆదిలాబాద్	648	123.80	457.79	581.59	5.40
కరీంనగర్	614	62.05	353.84	415.89	4.18
ఖమ్మం	243	125.24	287.76	413.00	3.99
పాలమూరు	585	76.13	452.99	529.12	5.85
మెదక్	499	104.04	262.40	366.44	4.59
నల్గొండ	481	57.56	492.25	549.81	5.37
నిజామాబాద్	410	80.59	237.11	317.70	4.74
రంగారెడ్డి	209	55.20	513.60	568.80	3.00
వరంగల్	465	111.76	330.00	441.76	4.73
హైదరాబాద్	59	-	-	1.00	
హెచ్‌ఎండీఏ	-	-	-	9.35	
మొత్తం	నర్సరీలు 4213	796.40	3388.00	4184.10	46.30

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-06-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 100/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To

संस्कार की पाठशाला | सिंहपुरा गुरुकुल में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रांतीय युवा निर्माण शिविर शुरू

निरोगी व आत्मविश्वासी बनने के लिए जुटे 500 युवा

भास्कर न्यूज | तेहटक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री विट्ठल राव आर्य ने कहा कि हरियाणा आपसी भाईचारा व दूसरों का दुख-दर्द समझने वाले लोगों के लिए जाना जाता है। यह वही प्रदेश है जहां के लोगों ने हैदराबाद जाकर निजाम के दांत खट्टे किए थे। वे गुरुकुल सिंहपुरा में बुधवार को प्रांतीय युवा निर्माण शिविर के उद्घाटन अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में बोल रहे थे। वहीं, स्वामी आर्यवेश ने कहा कि एक वर्ष में एक लाख नए युवकों को आर्य समाज से जोड़ा जाएगा। छह दिन तक चलने वाले इस शिविर में देशभर से आए 500 युवा प्रतिदिन साधना, आसन, प्राणायाम, जूडो कराटे, रस्सी चलाना, स्तूप निर्माण, भारतीय व्यायाम व खेलों का अभ्यास करेंगे।

एक वर्ष में आर्य समाज से जोड़े जाएंगे एक लाख नए युवा : स्वामी आर्यवेश

विट्ठल राव आर्य ने कहा कि आर्य समाज सदैव सामाजिक मुद्दों पर आगे बढ़कर कार्य करता है और सफलता मिलने तक चैन से नहीं बैठता। तेलंगाना व आंध्रप्रदेश में आज यदि प्राचीन संस्कृति बची हुई है तो उसका श्रेय आर्य समाज को जाता है। इस अवसर पर ध्वजारोहण आर्य समाज हिसार के मंत्री देवेंद्र सैनी ने किया। समारोह की अध्यक्षता प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। देवेंद्र सैनी ने कहा आर्य समाज हमेशा से ही देश को एक नई दिशा देने का कार्य करता है। हर मुद्दे को समाज से जोड़कर राष्ट्रहित में समर्पित हो जाता है। स्वामी आर्यवेश ने कहा कि अगले एक वर्ष में एक लाख नए युवकों को आर्य समाज से जोड़ा जाएगा ताकि युवा नशे, व्यसन से बचकर समाज हित, राष्ट्र हित व मानव हित में कार्य कर सके।

बहनों की सुरक्षा का दिलाया संकल्प : कार्यक्रम की मुख्य वक्ता बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक प्रवेश आर्या ने कहा कि आज हर तरफ समाज में बहनों की सुरक्षा को लेकर आशंका बनी रहती है, लेकिन कोई समाधान दिखाई नहीं देता था। इस शिविर में सब भाइयों को संकल्प लेना चाहिए की हम सभी बहनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं। जिस दिन किसी बस स्टैंड या चौराहे पर कोई व्यक्ति आपकी उपस्थिति में ये मान ले कि जब तक ये भाई खड़े हैं मेरे मान-सम्मान व स्वाभिमान को कोई खतरा नहीं होगा, उस दिन इस देश में पुनः ऋषियों की संस्कृति लौट आएगी।

तेहटक. दयानंद मठ में आर्यवीर दल द्वारा आयोजित चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम शिविर में प्रशिक्षण लेते युवा।

विद्या प्राप्ति के चार उपाय : श्रवण, मनन, प्रयोग और अनुभव

तेहटक | पं. भरत लाल शास्त्री ने कहा कि श्रवण, मनन, प्रयोग और अनुभव विद्या प्राप्ति के चार उपाय हैं। वे दयानंद मठ में चल रहे चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम शिविर के तीसरे दिन बुधवार को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने युवाओं को सात्विक भोजन करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि जैसा अन्न खाएंगे वैसा ही मन होगा। देवराज आर्य ने योग के आठों अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। आर्य वीरदल के मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने सुबह की दिनचर्या के प्रति युवाओं को जागरूक किया। 12 जून तक चलने वाले शिविर में 150 छात्र भाग ले रहे हैं।

दयानंद मठ में चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का तीसरा दिन

तेहटक. सिंहपुरा स्थित गुरुकुल में आयोजित युवा निर्माण शिविर में मुख्य अतिथि विट्ठल राव को स्मृति चिह्न देते आर्यवेश व अन्य।

जीवन में योग में अपनाकर लाएं बदलाव

आज के ये रहेंगे मुख्य वक्ता व अतिथि

गुरुवार को पी. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय जींद के कुलपति मेजर रणजीत सिंह शिविर के मुख्य वक्ता रहेंगे, जबकि राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का उद्घाटन भारतीय कबड्डी टीम के उप कप्तान सचिन खटकड़ करेंगे।

विशिष्ट अतिथि लोक संपर्क मंच हरियाणा के प्रधान धर्मवीर सरपंच ने कहा कि हरियाणा आपसी भाईचारे की पहचान रहा है, जिसको बनाए रखना युवाओं की जिम्मेदारी है। मुख्यवक्ता प्रधान डॉ. जगदीश ने कहा कि योग को जीवन का हिस्सा बना लेने से जिंदगी में सकारात्मक बदलाव शुरू हो जाएंगे। विरजानंद एडवोकेट व वेद प्रकाश आर्य ने भी विचार रखे। संचालन आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान व शिविर संयोजक विजेंद्र आर्य ने किया। व्यायाम योग शिक्षक सुखबर सिंह, सोनू आर्य, सुरेंद्र पहलवान, बबिता आर्या, अशोक आर्य ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में डॉ. रूपपाल आर्य जींद, वेद प्रकाश आर्य, रोहतू राम, शंभू खरड़ी, सज्जन रठी महम, अजय पाल आर्य हिटौली, प्रदीप कुमार, अशोक आर्य, बलवान अहलावत, सतबीर केवल, मंत्र हरण मेहट, राकेश आर्य, सरजीत आर्य, भंवीप आर्य, उत्तम आर्य, राजबीर वशिष्ठ, बसवंत तीखर, करबीर आर्य मुकलान, राजबीर भाटियल, पवन आर्य राखी आदि उपस्थित रहे।

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का तीसरा दिन

बेटियों को हक व कानून का दिया ज्ञान

तेहटक | जिला संरक्षण एवं बाल विवाह निषेध अधिकारी करमिंदर कौर ने कहा कि बेटियों कानून के प्रति जागरूक हों। अधिकारों के बारे में जानें, समझें और अपने हक के लिए इस्तेमाल करते हुए दूसरों की भी मदद भी करें।

वे स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में चल रहे कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर के तीसरे दिन बुधवार को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि बाल विवाह से बच्चों का मानसिक शारीरिक व आध्यात्मिक विकास रुक जाता है। ऐसे में समाज में हो रहे लिंग भेद व अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़कियों को ही आवाज उठानी होगी। अनेक बार महिलाएं व लड़कियां घरों में भी कई तरह की हिंसा झेलती हैं। लड़कियां जागरूक और सचेत हो जाएं तो काफी हद तक हिंसा से बच जा सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री विट्ठल राव आर्य ने घट रहे लिंगानुपात पर चिंता जताई। कहा कि आज बेटियों की संख्या लगातार कम हो रही है। सामूहिक प्रयास से ऐसी स्थिति को बदला जा सकता है। आवश्यकता अपनी जिम्मेदारी समझने की है।

तेहटक. टिटौली में शिविर के दौरान योग सीखते शिविरार्थी।

बेटियों ने सीखे स्वयं सुरक्षा के गुर

राष्ट्रपति से सम्मानित सोनिया आर्या, योग में स्वर्ण पदक विजेता राजकुमारी आर्या ने बेटियों को स्वयं सुरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने योग आसन के स्तूप के अतिरिक्त जूडो कराटे, रस्सी चलाना आदि की भी बारीकियां सिखाईं। शिविर में प्रशिक्षण देने में सोनिया आर्या, सुमन आर्या, ऊंमा आर्या, विकास आर्या, किरण आर्या, रवेता आर्या आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में पूनम आर्या, प्रवेश आर्या, सुनीता खास ने करप्रीत कौर व प्रोफेसर विट्ठल राव आर्य को स्वामी दयानंद का चित्र देकर सम्मानित किया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.